प्राचीन जैन पुस्तकोद्धार फण्ड ग्रंथाङ्क ३०

कृपा-विनोद



(सार्थ सामायिक-चैत्यवन्द-स्तवनादि समुचय)

—प्रयोजक—

शासन प्रभावक [illegible] अग्रणी, जगत् पूज्य
शास्त्रोद्धारक, परममाननीय, श्रुतस-
[illegible] जैनाचार्य

श्रीजिनकृपाचन्द्रसूरीश्वरजी

—प्रकाशक—

श्रीजिनदत्तसूरि जैन ज्ञान-भण्डार

गोपीपुरा—ओसवाल मोहल्ला

सूरत (गुजरात)

प्रथमावृत्ति ५०००]   वीर संवत २४५४   [मूल्य —

इस पुस्तकके आरम्भके दस फार्म २१, हरिसन-रोड, कलकत्ताके नरसिंह प्रेससे पण्डित काशीनाथजी जैन द्वारा और बाकीके सभी फार्म नं० [illegible] घोष लेनके ललित प्रेसमें बाबू ललित मोहन द्वारा मुद्रित।

शासन सम्राट शास्त्र विशारद जैनाचार्य



श्री जिन कृपाचन्द्रसूरीश्वरजी ।

प्रकाशकीय-निवेदन

प्रिय पाठक वृन्द !

यह हमारे लिये अत्यन्त आनन्द और परम सौभाग्यकी बात है, कि वर्तमान समयमें हमारे पूज्य आचार्य, यति मुनि, और धर्म-प्रेमी उदार श्रावकोंका अनुराग ज्ञान प्रचारकी ओर हो रहा है। यदि इसी तरह उक्त महानुभावोंका विशेष रूपसे अनुराग रहा तो आशा है, कि थोडेसे समयमें ज्ञान प्रकारका कार्य अधिक और सुचारु रूपसे होने लगेगा।

हमारे जगत् पूजनीय, पूज्यपाद, प्रातः स्मरणीय, चारित्र-चूड़ामणि, शासन प्रभावक, सकल शास्त्र विशारद आचार्य महाराज श्री १००८ श्री जिनकृपाचन्द्रसूरिजीके सदुपदेश द्वारा ज्ञानोद्धारका कार्य बड़े ही जोरोंसे हो रहा है। इस कार्यके लिये आपने सुरत शहरमें गोपो पुरेके ओसवाल मोहल्लेमें श्रीजिनदत्तसूरि ज्ञान भंडार नामक एक बड़ी ही उत्तम संस्थाका उद्घाटन किया है। एवं इन्दोर और बोकानेर नगरमें भी श्रीजिनकृपाचन्द्रसूरि जैन ज्ञान भण्डार नामक दो संस्थायें स्थापित की हैं। जिनके द्वारा आजतक संस्कृत, प्राकृत, भाषा, आदिकी अनेकों बहुमूल्य और उपयोगी पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं।

एव और भी कई पुस्तकें तैयार हो रही है , जो क्रमश प्रकाशित की जायेंगी ।

प्रस्तुत पुस्तक भी उक्त आचार्य महाराजजीके द्वारा सपादित करवाकर इसी सस्थाकी ओरसे प्रकाशित की जा रही है । इसमें सामायिकके अर्थ सहित सूत्र एव उनके साथ ही साथ सामायिक विधि, चैत्यवन्दन विधि, और आचार्य महाराजजीके विरचित अनेक प्रकारके चैत्यवन्दन, स्तुति, स्तवन, सज्भाय, गिरनार पूजा आदि कई उपयोगी, और आवश्यक चीजोंका सग्रह बडी ही योग्यतापूर्वक किया गया है । जिससे साधारण पढे लिखे श्रावक श्राविकाओंके लिये यह पुस्तक अत्यन्त उपयोगी बन गयी है । इसमें कई

स्तवन और सज्झाय तो बड़े ही वैराग्यप्रद हैं, जिनके पठन और मननसे अपूर्व रसास्वादन प्राप्त होता है।

यदि हमारे प्रेमी पाठकोंने इस पुस्तकसे समुचित लाभ उठाया तो हम अपने परिश्रमको सफल समझेंगे। एवं कालान्तरमें और भी छोटी-मोटी उपयोगी पुस्तकें भेंट करनेका उद्योग करेंगे। अस्तु !

निवेदक—
पानाभाई भगुभाई जहोरी।

विषयानुक्रमणिका ।

चैत्यवन्दन ।

स्तवन संग्रह ।

थुइ संग्रह।

सज्झाय संग्रह ।

आर्थिक सहाय दाताओंकी नामावली।

२००) ज्ञान खाते।

२००) महिमाश्रीजीके सदुपदेशसे इन्दोर निवासी उपधान करनेवाली श्राविका।

२५०) सेठजी चान्दमलजीकी धर्मपत्नी फूल कुँवरबाई जेसलमेर।

१७५) जेसलमेर निवासी हजारीमल राज राजमल।

१४०) जेसलमेर निवासी धनराजजी सोभाग मलजी।

१००) जेसलमेर निवासी सोभाग मलजी घोरडिया।

१००) उदयपुर निवासी बुधराजजी मुता।

६७) ज्ञान खाते।

८०) खंभात निवासी अंबालाल पानाचन्द्रकी धर्मपत्नी चंचलबाई।

४८) साधाराण द्रव्य ह० आनन्दीलाल जन्नाणी।

३५) ज्ञान खाते।

१४२५

॥ अर्हम् ॥

प्राचीन पुस्तकोद्धार फण्ड ग्रन्थांक २४

अथ सामायिक विधि प्रारंभ।

अथ नवकार मंत्र।

णमो अरिहंताणं १ णमो सिद्धाणं २ णमो आयरिआणं ३ णमो उवज्झायाणं ४ णमो लोए सव्वसाहूणं ५ एसोपंचणमुक्कारो ६ सव्व पावप्पणासणो ७ मंगलाणं च सव्वेसिं ८ पढमं हवइमंगलं ९।

अर्थ—१ अठारे दोष रहित, बारे गुण सहित,

ऐसे अरिहंत भगवान कों नमस्कार हो वो, २ आठ गुण सहित ऐसे सिद्ध भगवान कों नमस्कार हो वो, ३ पांच आचार कों पालने वाले, छत्तीस गुण युक्त, ऐसे आचार्यमहाराज कों नमस्कार हो वो, ४ द्वादशांगी को पढाने वाले, पच्चीस गुण युक्त, ऐसे उपाध्याय महाराज कों नमस्कार हो वो ५ मोक्षमार्ग साधने वाले सत्तावीस गुण युक्त ऐसे साधूजीमहाराज कों नमस्कार हो वो, ६ यह पंचपरमेष्ठिकों नमस्कार ७ सर्वपापोंका नाशकरने वाला है ८ और सर्व मंगलो में ९ पहिला मंगल होवे है, तीन वेर नवकार गुणके स्थापना जी थापे, पश्चात् दो खमासमण देकर सुखशाता पूछकर तीसरो खमासण देवे अब्भुट्ठियोमिखामे ।

अथ खमासण ।

१ इछामि खमासमणो २ वंदिउं जावणिज्जाए ४ निसीहीआए ५ मत्थएण वंदामि ।

अर्थ—१ इच्छा करता हु हे क्षमाश्रमण २ वद-ना करने की ३ शक्तियुक्त ४ और कार्यो को निषेध करके ५ मस्तकसे वदनाकरताहु,

अथ सुगरू को सुखशातापृच्छा ।

१ इच्छकार भगवन् २ सुहराई सुहदेवसी ३ सुखतप ४ शरीर निरा-बाध सुखसंयमयात्रा सुखे निर्वहो-

छोजी ? ५ स्वामी शाता छै जी ? इति ।

१ इच्छा करता हूं हे भगवन् २ सुख से रात्री सुख से दिन ३ सुख से तपस्या ४ शरीर रोग रहित सुख सेती संयम यात्रा सुखसे निभाते हो, ५ स्वामी आपके सुख शाता है जी ?

अथ अब्भुट्ठिओमि ।

१ इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् २ अब्भुट्ठिओमि अप्भिंतर देवसियं खामेउं ३ इछं खामेमि देवसियं जंकिंचि अप्पत्तियं ४ परप्पत्तियं भत्ते पाणे विणए वेआवच्चे

आलावे सलावे उच्चासणे ५ समासणे अंतर भासाए उवरि भासाए ६ जंकिंचि मज्भविणयपरिहीणं सुहुमंवा वायरंवा ७ तुब्भे जाणह अहं न जाणामि ८ तस्स मिच्छामि दुक्कडं ॥ इति ॥

शब्दार्थ—१ इच्छापूर्वक हे भगवन् मुझे आज्ञा दीजिये। २ दिनके अन्त करणसे अपराध खमाणे को उठा हूं। ३ इवासै खमाता हुं जो कुछ दिनसम्बन्धी अप्रीतीभाव। ४ विशेष अप्रीती भाव भोजन पाणी में विनय में वेयावच्चमें एकवार बोलनेसे वेर २ बोलनेसे उचोआसन सम

आसन गुरुकेबातचीतकरते बीचमें बोला हो गुरुकी बातपरबातकरी हो । ६ जो कुछ मेरेसे विनयरहित पणा सूक्ष्मअथवा स्थूल हुआ हो । ७ आप जाणते हो, मैं नहीं जानता हूं । ८ वह पाप मेरा मिथ्या हो ओ, पश्चात् खमासण देकर इच्छा कारेण संदिस्सह भगवन् सामायिक मुहपत्ती पडिलेहुं गुरु कहे पडिलेहेह, पीछे इच्छं कही दूसरी खमासमण देकर मुहपत्ती पड़िलेहे । अथ मुहपत्ती पड़िलेहण के पच्चीस बोल लिखते हैं ।

सूत्र अर्थ साचो सद्दहुं ॥ १ ॥ सम्यक्त्व मोहनी ॥ २ ॥ मिथ्यात्व मोहनी ॥ ३ ॥ मिश्र मोहनी ॥ ४ ॥ परिहरूं ॥ कामराग ॥ १ ॥ स्नेहराग ॥ २ ॥ दृष्टिराग ॥ ३ ॥ परिहरूं, ये

सात बोल मुहपत्ती खोलती वक्त कहने ॥ सुगुरु ॥ १ ॥ सुदेव ॥ २ ॥ सुधर्म ॥३॥ आदरू कुगुरु ॥ १ ॥ कुदेव ॥ २ ॥ कुधर्म ॥ ३ ॥ परिहरू ॥ ज्ञान ॥१॥ दर्शन ॥ २॥ चारित्र ॥ ३ ॥ आदरूं । ये नव पडिलेहण डावे हाथे करिये ।

ज्ञान विराधना ॥ १ ॥ दर्शन विराधना ॥२॥ चरित्र विराधना ॥ ३ ॥ परिहरू ॥ मनोगुप्ति ॥ १ ॥ वचनगुप्ति ॥२॥ कायगुप्ति ॥३॥ आदरू । मनोदंड ॥ १ ॥ वचनदंड ॥ २ ॥ कायदंड ॥३॥ परिहरूं ये नव पडिलेहण जिमणे हाथ पर करनी । ये पचीस बोल मुहपत्ती के जानने ।

अत्र अंगकी पचीस पडिलेहण ।

कृष्ण लेश्या ॥१॥ नील लेश्य ॥२॥ कपोत लेश्या ॥३॥ ये तीनों निलाडे मस्तकें परिहरुं ।

ऋद्धि गारव ॥१॥ रसगारव ॥२॥ शाता गारव ॥ ३ ॥ ये तीनों मुखें परिहरूं। माया शल्य ॥१॥ नियाण शल्य ॥ २ ॥ मिच्छादंसण-शल्य ॥३॥ ये तीनों हीये परिहरूं। क्रोध ॥१॥ मान ॥२॥ ये दोनों जिमणे कंधे (खंधे) परिहरूं। माया ॥१॥ लोभ॥२॥ यह दोनों डावे कंधे परिहरूं॥ हास्य ॥१ ॥ रति ॥ २ ॥ अरति ॥३॥ ये तीन बोल ड़ावे हाथे परिहरूं ॥ भय ॥१॥ शोक ॥२॥ दुगंछा ॥३॥ ये तीनों जिमणे हाथे परिहरूं ॥ पृथ्विकाय ॥१॥ अप्पकाय ॥२॥ तेऊकाय ॥३॥ ये तीनों डावे पगे परिहरूं ॥ वायुकाय ॥१॥ वनस्पतिकाय ॥ २ ॥ त्रसकाय ॥ ३ ॥ ये तीनों जिमणे पगे परिहरूं ॥ इति मुहपत्तीपड़ि-लेहण सम्पूर्ण।

पीछे खड़ा होय के इच्छामि खमासमण का पाठ कहैं के इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् । सामायिक संदिस्साबु ? गुरु कहे संदिस्सावेह । पीछे इच्छं कहके फेर खमासमण देकर इच्छा० सं० भ० ॥ सामायिक ठाऊ ? गुरू कहैं ठायह । पीछे इच्छं कही खमासमण देकर थोड़ा झुक के तीन नवकार गुणे इच्छा कारेण संदिस्सह भगवन् पसाउकरी सामायिक दंडक उच्चरावोजी । गुरु कहैं उच्चरावेमो । पीछे करेमि भंते सामाइयं इत्यादि सामायिक सूत्र तीन वार उच्चरे ।

अथ सामायिक का पच्चक्खाण ।

१ करेमि भंते सामाइयं। २साव-

ज्जं जोगं पच्चक्खामि । ३ जाव नियमं पज्जुवासामि । ४ दुविहं तिविहेणं। ५ मणेणं वायाए काए-णं । ६ न करेमि । न कारवेमि। ७ तस्स भंते पडिक्कमामि। ८ निंदामि गरिहामि। ९ अप्पाणं वोसिरामि।

शब्दार्थ—१ हे पुज्य सामायिक करता हूं। २ पापकारी जोग का पच्चक्खान । ३ जहांतक नियम से सेवाकरता हूं। ४ दोकरण तीन जोग से। ५ मनकरके, वचनकरके, काय करके। ६ नहीं करूं, नहीं कराऊं। ७ अतीतकालसंबंधी पापोंसे हे पुज्य पीछे हटता

हूं । ८ निन्दता हूं आत्मसाक्षीसे गुरुकी साखसे गरहाकरता हूं। ६ आत्मा को पापोंसे छोडाता हूं ।

पीछे खमासमणदेकर इच्छाकारेण सदिस्सह भगवन् इरियावहिय पडिक्कमामि । गुरू कहे पडिक्कमह पीछे इच्छं कही । इच्छामि पड़िक्कमिउ इरियावहियाए इत्यादि पाठ कहे सो लिखते हैं ।

अथ इरियावहिय ।

१ इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् । २ इरियावहिय पड़िक्कमामि। ३ इच्छं इच्छामिपड़िक्कमिउं । ४ इरियावहियाए विराहणाए ।

५ गमणागमणे । ६ पाणक्कमणे बीयक्कमणे हरियक्कमणे । ७ ओसा उत्तिंग । ८ पणगदगमट्टी । ९ मक्कडासंताणासंकमणे । १० जे मे जीवा विराहिया । ११ एगिं-दिया बेइंदिया तेइंदिया चउरिं-दिया पंचिंदिया । १२ अभिहया वत्तिया । १३ लेसिया संघाइया संघट्टिया परियाविया। १४ किला-मिया उद्दविया। १५ ठाणाओठाणं, संकामिया। १६ जीवियाओ ववरो-

विया। १७ तस्स मिच्छामि दुक्कडं इति।

शब्दार्थ—१ इच्छा करके हे भगवन् आज्ञा देवो। २ राहगमनकरते पीछे हटता हु। ३ प्रमाण प्रमाणे पीछे हटने चाहता हु। ४ राह में चलते जो विराधना। ५ जावते आवते। ६ प्राणियों को दावा हो बीज (सचित) को दावा हो हरीवनस्पती दावी हो। ७ ओस कीडी नगरा। ८ फूलण पानी मट्टी। ९ मकडी को जाला दावा हो। १० जो कोई मैने जीव विराधना करि हो। ११ एक इन्द्री वाला जीव, दो इन्द्री वाला जीव, तीन इन्द्री वाला जीव, चार इन्द्री वाला जीव, पाच इन्द्री वाला जीव, १२ सम्मुख

आवते धूल से ढका हुआ हणा हो, १३ जमीन पर घीसा संघातकिया स्पर्शहुआ परिताप उपजाया, १४ खेदपहुंचाया त्रासपहुंचाया, १५ एक स्थान से दूसरे स्थान रखा, १६ जीवितव्य से रहित किया हो, १७ उसकापाप मेरे मिथ्या हो ओ।

अथ तस्स उत्तरी।

१ तस्स उत्तरी करणेणं। २ पायच्छित्त करणेणं। ३ विसोही करणेणं। ४ विसल्ली करणेणं। ५ पावाणं कम्माणं। ६ णिग्घायणट्ठाए। ७ ठामि काउस्सग्गं।

अथ अन्नत्थ ऊससिएण।

१ अन्नत्थ, २ ऊससिएणं नीससिएणं खासिएणं, ३ छीएणं जंभाइएणं, ४ उड्डुएणं वायनिसग्गेणं, ५ भमलिए पित्तमुच्छाए, ६ सुहुमेहि अंगसंचालेहि, ७ सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं, ८ सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं, ६ एयमाईएहिं आगारेहि, १० अभग्गो अविराहिओ, ११ हुज्जमे काउस्सग्गो.१२ जाव अरिहंताणं भगवंताणं, १३ नमुक्कारेणं

न पारेमि, १४ तावकायं ठाणेणं, १५ मोणेणं झाणेणं, १६ अप्पाणं वोसिरामी ॥ इति ॥

[शब्दार्थ तस्स उत्तरी० ।

१ उसका फिर शुद्धि करने कों, २ प्राय-श्चित करने कों, ३ विशेषपणे शुद्धि करने कों, ४ शल्य रहित करने कों, ५ पाप कर्मोंका, ६ विशेष पणे घात करने को, ७ कायोत्सर्ग करता हूं।

शब्दार्थ अनत्थ ऊससिएणं ।

१ यह १२ वात वर्जके, २ ऊंचा श्वास नीचा श्वास लेणेमें खासी आणेमें, ३ छीकमें उबासी आणेमें, ४ डकार से अधोवायु निकलने से, ५ चक्कर आनेसे पित्तकी मूर्छा से, ६ जरासा अग

हिलाणेमें, ७ जरासा खखार के आनेमें, ८ आख की पलक वद नहि करणेमें, ९ इनसबोंको आदि लेकर आगार वर्जके, १० अखडित अविराधित, ११ कायोत्सगं मेरा हो वो, १२ जहातक अरिहत भगवंतोंको, १३ नमस्कार करके पारु नहीं १४ वहातक काया को एक ठिकाने, १५ मौनसे ध्यानसे, १६ आत्माको वोसराता हु ॥ इति ॥

एकलोगस्स चंदेसु निम्मलयरातकका अथवा चार नवकार का काउस्सग्ग करे पीछे यहा णमो अरिहंताण कहके काउस्सग्गपारके मुख से प्रगट लोगस्स कहे सो लिखते हैं ।

अथ लोगस्स ।

१ लोगस्स उज्जोअगरे, २ धम्म तित्थयरे जिणे. अरिहंते कित्तइस्सं.

३ चउवीसंपि केवली, ॥१॥ ४ उस-
भमजिअं च वंदे, ५ संभवमभिणं-
दणं च सुमइं च, ६ पउमप्पहं सु-
पासं, ७ जिणं च चंदप्पहं वंदे,॥२॥
८ सुविहिं च पुप्फदंतं, ९ सीअल
सिज्जंस वासुपुज्जं च, १० विमल-
मणंतं च जिणं, ११ धम्मं संतिं च
वंदामि,॥३॥१२ कुंथुं अरं च मल्लिं,
१३ वंदे मुणिसुव्वयं नमिजिणं च,
१४ वंदामि रिट्ठनेमिं, १५ पासं
तह वद्धमाणं च, ॥४॥ १६ एवं मए

अभिथुआ, १७ विहुयरयमला, पहीण जरमरणा, १८ चउवीसपि जिणवरा, १९ तित्थयरामे पसीयंतु, ॥५॥ २० कित्तिय वंदिय महिया, २१ जे ए लोगस्स उत्तमा सिद्धा, २२ आरुग्गबोहिलाभं, समाहिवरमुत्तमं दिंतु, ॥६॥ २३ चंदेसु निम्मलयरा, २४ आइच्चेसु अहियंपयासयरा, २५ सागरवरगंभीरा, २६ सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु, ॥७॥ ॥ इति ।

शब्दार्थ लोगस्स ।

१ लोकमें उद्योतकरने वाले, २ धर्म तीर्थंके

करने वाले जिन अरिहंतों का मैं कीर्त्तन करूंगा, ३ चौबीसों केवली भगवान्, ॥१॥ ४ ऋषभदेव और अजितनाथजी को वंदूं, ५ संभव अभिनंदन फिर सुमति को, ६ पद्मप्रभू सुपार्श्व को, ७ फिर चंदाप्रभू जिनवर को वंदूं, ॥ २ ॥ ८ सुविधि दूसरा नाम पुष्पदंतको, ९ शीतल श्रेयांस को फिर वासुपुज्यको, १० विमल फिर अंनत-जिनको, ११ धर्मको फिर शांन्ति को वंन्दता हूं, ॥३॥ १२ कुंथु और मल्लिको वन्दता हूं, १३ मुनिसुव्रन को फिर नमि जिनको वन्दता हूं, १४ अरिष्ट नेमिको, १५ पार्श्व तैसे फिर बर्धमान को, ॥४॥ १६ इस प्रकार मैंने स्तावना किया, १७ झडकाया कर्मरजमैल को जरामरण को क्षय किये, १८ अैसे चौवीसों ही सामान्य केवलियों

में श्र ए, १६ तीर्थङ्करों मेरे पर प्रसन्न होवो, २० कीर्तना किया, वन्दना करा पूजा करा, २१ जो इस लोक में उत्तमसिद्धभये, २२ आरोगता सम्यक्दर्शनका लाभ समाधिप्रधानउत्तम देवो, ॥ ६ ॥ २३ चन्द्रमाके समूहों से विशेष निर्मल, २४ सूर्यांके समूहोंसे विशेष प्रकाश कारक, २५ समुद्र की तरह प्रधान गंभीर, २६ सिद्ध भगवानोंमुझको सिद्धि देवो ॥७॥ इति ॥

पीछे खमासमण देकर इच्छा०संदि० भगवन् बैसणो संदिस्साबु ? गुरुकहे संदिस्सावेह'। पीछे इच्छ कहकर फिर खमासमणदेकर इच्छा० संदि० भगवन् बैसणो ठाऊ ? गुरु कहे ठाएह। फिर इच्छ कहकर खमासमणदेकर इच्छा० संदि० भ० सिज्झायसंदिस्साबु ? गुरु

कहे संदिस्सावेह पीछे इच्छं कहकर फिर खमासमण देकर इच्छा० 'दि० भ० सिज्झाय करु' ? गुरू कहे करेह ॥ फिर ख्मासमण देकर खड़ा होकर आठ नवकार कहकर सज्झाय करे तथा शीतकाल आदि होवे तो खमासमण देकर इच्छा० संदि० भ० पांगरणो संदिस्साषं ? गुरू कहे संदिस्सावेह । पीछे इच्छं कहकर खमासमण देकर इच्छा० संदि० भ० पागरणो पड़िग्घउ' ? गुरू कहे पडिग्घपह । पीछे इच्छं कही वस्त्र ग्रहण करे तथा सामायिकवंत अथवा पोसहसहितश्रावकवांदे तो "वन्दामी" ऐसा कहे और जो कोई दुसरो षांदे तो सज्झाय करेह ऐसा कहे ।

सामायिक विधि सम्पूणम् ।

अथ चैत्यवंदन लिखते है।

तीन खमासण देकरके इच्छाकारेण सन्दिसह भगवन् चैत्यवंदन करू।

अथ चैत्य वंदन।

१ जयउसामी जयउसामी २ रिसहसेत्तुंजि ३ उज्जिंतपह नेमि जिण ४ जयउवीर सच्चउरिमंडण ५ भरूअच्छहिं मुणिसुव्वय ६ मुहरिपासदुहदुरियखंडण ७ अवरविदेहिजतित्थयरा ८ चिहंदिसिविदिसी जंकेवि ९ तीआणागय संपइअ

१० वंदूजिण सव्वेवि ॥२॥ ११ कम्मभूमिहिं कम्मभूमिहिं १२ पढमसंघयणि १३ उक्कोसय सत्तरिसय १४ जिणवराण विहरंतलब्भई १५ नवकोड़िहिं केवलिण १६ कोडिसहस्सनवसाहसंपय १७ संपई जिनवर वीसमुणि १८ बिहू कोडिहिंवरनाण १६ समणहकोडिसहसदुत्र २० थुणिज्जइ निच्चविहाणि २१ सत्ताणवईसहस्सा, लक्खा छप्पन्न अट्ठ कोडिओ, चउसयछाया

सीया २२ तिल्लुक्के चेइयेवंदे २३ वंदे नवकोड़िसयं २४ पणवीसं कोड़ि लरकतेवन्ना अट्ठावीस सहस्सा चउसय अट्ठासिआ पडिमा २५ जंकिंचि नामतित्थं २६ सग्गे पायाले मणुसे लोए २७ जाइं जिण बिंबाइं २८ ताइं सव्वाइं वंदामि ।

शब्दार्थ चैत्यवदन ।

१ जयवंता २ हो वो स्वामी २ सेत्रुंजय पर श्रीऋषभदेव ३ गिरनार पर श्री नेमजिन ४ साचोर क्षेत्रके मंडण महावीर प्रभूका जय होवो ५ भरूच क्षेत्रमें श्री मुनिसुव्रतस्वामी का

६ दुख और पापके खंडनकारकऐसे श्री मुहिरि गांवके श्री पार्श्वनाथ स्वामी ७ और महाविदेह के तीर्थंकरों को ८ चारोंदिशाविदिशाओंमें जो कोई ६ भूत भविष्यत वर्तमान कालके १० सर्व जिनेश्वरोंको वंदूं ११ कर्म्मभूमि के विषे १२ वज्रऋषभनाराचसंघयणधारी १३ उत्कृष्ट एकसौ सित्तर तीर्थंकर १४ विचरते पावें १५ नव क्रोड़ केवलियों की १६ नव हजार क्रोड़ साधुओंकी संपदा १७ इस वक्त बीस तीर्थंकर १८ दो क्रोड़ केवल ज्ञानी १६ दोहजारक्रोड़साधुओंकर २० नित्यप्रति प्रभात होते स्तवना करनी २१ आठ क्रोड़ छप्पन लाख सत्तानवे हजार चार सौ छयासी २२ तीन लोकके चैत्योंको वंदूं २३ नवसौ क्रोड़ २४ पच्चीस क्रोड़ तिर-

पन लाख अट्ठाईसहजार बारसौ अठ्यासी प्रतिमाजी कु वदु २५ जो कोई नाम तीर्थ है २६ स्वर्ग मनुष्यलोकपाताल मे २७ जो जो जिनेश्वरदेव के बिम्ब हैं २८ उन सबोंको वदना करता हू। इति।

अथ शकस्तव (नमुथ्थुणं) पाठ।

नमुथ्थुणं अरिहंताणं भगवंताणं १ आईगराणं तिथ्थयराणं सयंसंबु-द्धाणं २ पुरिसुत्तमाणं पुरिससीहाणं पुरिसवर पुंडरियाणं पुरिसवरगंध-हथ्थीणं ३ लोगुत्तमाणं लोगनाहाणं लोगहियाणं लोगपईवाणं लोगप-

उज्जोअगराणं ४ अभयदयाणं च-
क्खुदयाणं मग्गदयाणं सरणदयाणं
वोहिदयाणं ५ धम्मदयाणं धम्मदे-
सियाणं धम्मनायगाणं धम्मसार-
हीणं धम्मवर-चाउरंतचक्कवट्टीणं
६ अप्पडिहयवरनाणदंसणधराणं
विअट्टछउमाणं ७ जिणाणं जा-
वयाणं तिन्नाणं तारयाणं बुद्धाणं
बोहयाणं मुत्ताणं मोअगाणं ८ स-
व्वन्नूणं सव्वदरिसीणं सिवमयल-
मरुअमणंतमक्खयमव्वाबाहमपुण

राविति सिद्धिगईनामधेयं ठाणं-
संपत्ताणं णमोजिणाणं जीअभयाणं
६ जेअअईआ सिद्धा जे अ भवि-
स्संतिणागएकाले । संपइयवट्ट
माणा सव्वेतिविहेणवंदामि । इति

अथ जावंति चेइयाइं पाठ ।

जावंति चेइयाइं उढ्ढेअ अहेअ-
तिरिअलोएअ । सव्वाइंताइंवंदे
इहसंतो तथ्थसंताइं ।

अथ जावंतिकेविसाहूं पाठ ।

इच्छामिखमासमणो० भगवन्

जावंतकेविसाहू भरहेरवयमहाविदेहे अ। सव्वेसिंतेसिंपणओ तिविहेण तिदण्डविरयाणं।

अथ परमेष्ठिनमस्कार पाठ।

नमोर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय सर्वसाधुभ्यः।

नमस्कार होवो अरिहंतोंको भगवंतोंको १ अपणे तीर्थके आदिके करने वाले तीर्थके करनेवाले आपही तत्त्वके जांननेवाले २ पुरुषों में उत्तम पुरुषोंमे सिंह सदृष पुरुषों में प्रधान पुण्डरीक कमलके जैसे, पुरुषों में प्रधान गन्ध हस्ती जैसे ३ लोकोंमें उत्तम लोकके नाथ लोकके हितकारी, लोकमें दीपक समान, लोकमें

उद्योत करने वाले ४ अभयदान देनेवाले, तत्त्व रूप नेत्रोंके देनेवाले, मोक्षमार्गके दातार, शरणेके दातार, बोधिबीजके देने वाले ५ धर्मके देनेवाले, धर्म के उपदेश कर्त्ता, धर्मके नायक, धर्मरथके सारथी, धर्मके प्रधान, चार गतीके अन्तकर्त्ता चक्रवर्त्ती ६ किसीसे नाश नहीं हो ऐसा प्रधान ज्ञानदर्शन को धारने वाले चलीगई छद्मस्थ अवस्था ७ आप जीते दूसरे को जीताने वाले, आप तिरे दूसरेके तारक, आप तत्त्व जाना दूसरे को बोध देने वाले आप छूटे औरोंको छुडाते ८ सर्व जाणने वाले, सर्व देखने वाले, उपद्रव रहित अचल रोगरहित अनत अक्षय बाधारहित नहिहै फिर अवतारलेणा सिद्धगती नाम जिसका ऐसा ठिकाना पाए हुये नमस्कार

हो जिनेश्वरोंको जीता है सब भय जिन्हो ने जो अतीत कालमें सिद्ध हो गए हैं, आगामी कालमें सिद्ध जो होयेंगे, वर्त्तमान कालमें जो उपस्थित हैं, उन सभी को त्रिविध वन्दना करता हूं।

जितने चैत्य हैं ऊर्ध्व लोकमें, अधोलोकमें, तिर्छेलोकमें, उन सभीको वन्दना करता हूं, जो में यहां हुं और वहां जो जिनचैत्य है अर्थात् (तीन लोकमें जहां जहां जिन विम्ब है)।

१ खमासमण देना अर्थ पहले लिखा है।

जितने कोई भी साधु हैं भरतमें, ऐरवतमें, महा विदेहमें, सबोंको प्रणाम हो, मन वचन काया से तीन दण्डसे विशेष रहित,

नमस्कार होवो अर्हंत सिद्ध आचार्य उपाध्याय सब साधुओंको।

अथ उवसग्ग हर स्तोत्र पाठ।

उवसग्गहरंपासं पासं वंदामि कं-
म्मघणमुक्कं। विसहर विसनिन्नास,
मंगलकल्लाणआवासं ।१। विसहर
फुलिंगमंत, कठेधारेई जोसयामण-
ओ। तस्सग्गहरोगमारी, दुट्ठजराजं-
ति उवसाम ।२। चिट्ठउदूरे मंतो, तु-
ज्झपणामोविवहु फलो होई । नर-
तिरिएसुविजीवा, पावतिनदुक्खदो-
हग्गं ।३। तुहसम्मत्तलद्धे, चिंता-
मणि कप्पपायव्वऽभईए । पावंति
अविग्घेण,जीवा अयरामर ठाणं ।४।

इयसंथुवो महायस, भत्तिब्भरनि-
ब्भरेण हियएण । तादेवदिज्जबो-
हिं, भवेभवे पासजिणचंद ।५।

जयवीयरायजगगुरु होउममं तुह-
प्पभावओभयवं । भवनिव्वेओम-
ग्गाणुसारियाइट्ठफलसिद्धी । १ ।
लोगविरुद्धच्चाओ गुरुजणपूआपर-
थ्थकरणं च । सुहगुरुजोगोतव्वय-
णसेवणाआभवमखंडा । २ ।

अर्थ—उपसर्गोंको हरनकरने वाले पार्श्व-
यक्षसे पूजित ऐसे पार्श्वनाथ भगवान को नम-
स्कार करता हु—कैसे हैं-कर्मसमूहसे मुक्त

सर्पके जहर को नास करने वाले मङ्गल-कल्याण के घर हैं १ विषधर फुलिङ्ग नामके मन्त्रको कण्ठमें धारण करे जो सदा मनुष्य उसके ग्रह रोग मरी दुष्टज्वर समाधीको प्राप्त होय २ तुम्हारे नामका मन्त्र भी दूर रहो, मगर तुम्हारे को प्रणाम कर-नेसे भी बहोत फलहोता है, मनुष्य तिर्यंच जीव दुःख दोर्भाग्य नहिं पावे ३ तुम्हारा सम्यक्त्व पानेसे चिन्तामणिरत्न कल्पवृक्षसे भी अधिक जीव निर्विघ्न पणे अजर अमर ठिकाणे को पाता है। ४ हे पार्श्वजिन चन्द्र ! हे महायशवन्त ! भक्तिके समूह से परिपूर्ण हृदय करके भव भवमें इस तरह की स्तवना (मुझे) बोधी बीज देवो।

जयवन्ता होवो हेवीतराग ! जगत् गुरु ! होवे मुझे आपके प्रभावसे हेभगवन् ! भवोंसे

उदासपणा मार्गानुसारीपणा वांछित फलकी सिद्धि, १ लोकविरुद्ध कामोंकात्याग, वृद्ध महापुरुषोंकी पूजा परोपकारका करना फिर शुद्ध गुरुओंका योग उन्हींके वचनका अङ्गीकार समस्त भवोंमें अखण्ड होवो ॥२॥ इति समाप्त।

इत्यादि चैत्य वन्दन करके क्षमाश्रमण देके इच्छा० सं० भ० कुसुमिणदुसुमिणराईप्रायछित्तविसोहणथ्थंकाउसग्ग करु ? गुरु कहे-करेह-पीछे इच्छे कहकर कुसुमिण दुसुमिण राईपायच्छित्तविसोहणथ्थं करेमिकाउसग्गअन्नत्थ इत्यादि पाठ कहके ४ लोगस्स या १६ नवकार का काउसग्ग चन्देसु निम्मलयरातक-करे जो रात्रीमें मूलगुणसम्बन्धीस्वप्नमें मोटको दोष लगा होवे तो सागरवरगम्भीरा

तक चिन्तवे फिर णमोअरिहंताणं कहकर कायोत्सर्ग पारे और प्रगट लोगस्स का पाठ कहे।

अथ सामाइक पारन विधि।

१ खमासमण देके मुहपत्तिपडिलेवे फिर क्षमाश्रमण देके इच्छाकारेण संदिस्सह भगवन् सामाइक पारु ? गुरु कहे पुणोविकायव्वो, श्रावक कहे यथासक्ति, फिर क्षमाश्रमण देके इच्छा० सं० भ० सामाइक पारेमि ! गुरु कहे। आयारोनमोतव्वो, श्राक कहे तहत्ति, फिर खडा होके कुछ झुकता हुवा ३ नवकार पढ़े, फिर दोनों गोडे दबाके जोडके जमीन पर दोनु हाथ नीचा लगा मस्तक नमाय के बैठे और पाठ कहे।

अथ भयवं दसणभद्दो का पाठ।

भयवं दसणभद्दो. सुदसणो थु-

त्तिभंइ वयरो य । सफलीकयगिंह
च्चाया,साहूए्वंविहाहुंती ।१। साहूण
वंदणेणं,नासइपावं असंकियाभावा,
फासु अ दाणेणिज्जर, अभिगाहो,
नाणमाईणं ।२। छउमत्थोमूढ़मणो,
कित्तियमित्तंपि संभरईजीवो । जं-
चनसंभरामिअहं,मिच्छामि दुक्क-
डंतस्स । ३ जंजंमणेण चिंतियं,
असुहं वायाईभासियं किंची ।
असुहं काएणकयं, मिच्छामिदु
क्कडं तस्स ।४। सामाइयपोसह

संठियस्स जीवस्स जाइ जो कालो। सोसफलो वोधव्वो सेसोसंसार फलहेउ । ५ ।

अर्थ—भगवान् दशार्णभद्र सुदर्शन स्थुलभद्र वज्रस्वामि आदिक सफल किया ग्रहस्थाऽवास छोडके साधु इस प्रकार के होते है १ साधुओं के वन्दन करनेसे नास होता है पाप शंका रहित भावों से प्रासुक दान देनेसे निर्जरा कर्मों की होती है समस्त पर्ण ग्रहण होता है ज्ञानादिक का ? छद्मस्थ पणे मनकी मूर्खता से कितने मात्र भी याद करके ये जीव जो फिर नहि याद आवे मुजको मिथ्या मेरा पाप होयो २ जोजो मनकरके विचारा होय असुभ वचन से भाषण

किया हो थोड़ासा भी अशुभ काया से किया होय मिथ्या होवो मेरा पाप सभीका ४ सामाइक पोषध में अच्छी तरह रख्या हुवा जीवोंका जो काल जाता है वह सफल जानो बाकी सब संसार फल के कारण हैं।

सामाइक विधे लीधूं विधे कीधूं विधि करतां अविधि अशातना लागी होय दशमनका दश वचन का बारह काया का ३२ दूषण मांही को कोई दूषण लागो होय ते सव्वे मने करी वचने करी कायाए करी मिच्छामि दुक्कडं ॥ पीछे तीन नवकार गुणे इति सामाइक पोसह पारन विधि ॥



॥अथ बीजनु चैत्यवंदन लिख्यते ॥ १ ॥



॥ द्विविध धर्म जिनवर कह्यो। साधु श्रावकनो जाण। शिक्षा दोय सेवो सदा। ग्रहण सेवन आण ॥ १ ॥ धर्म शुक्ल दुग ध्यान ने, ध्यावो चतुर सुजाण। आर्त्त रौद्र दोय परिहरो। त्रिकरण शुचि महिरान ॥२॥ अभिनदन जनम्या प्रभु। सुमति अर चविया। वासु

पूज्य यथा केवली। शीतल शिव-
सुख वरिया ॥ ३ ॥ सीमंधर युग
मंधरा। वीस विहर मान होय।
राग द्वेषनो त्याग करी। निश्चय
व्यवहार जोय ॥ ४ ॥ बीज दिवस
आराधिये ए। ज्ञान तिथी सुवि-
हाण। सूरि कृपाचंद्र सेवतां तपथी
क्रोड कल्याण ॥ ५ ॥

॥इति बीजतिथीनो चैत्य वंदन संम्पूर्ण ॥

॥ अथ श्रीपंचमी चैत्यवंदन ॥२॥

॥ पांच ज्ञान प्रगटायवा । पंचमी तप सुप्रधान । आराधो भवि इकमने । प्रगटे ज्ञान निधान ॥ १ ॥ अवग्रहादिक जाणिये. मति अट्ठाविश सार. चवद बीश भेद श्रुत तणा । अवधि छ असंख्य प्रकार ॥ २ ॥ मनःपर्यव दुग भेद छे । केवल सकल प्रकाश । लोकालोक स्वरूपनो । ज्ञायक ज्ञान ए खास

॥ ३ ॥ सर्वाराधक ज्ञानने, भाख्यो श्रीजगदीश। सासो स्वासमां कर्मनो क्षय करे विशवा वीश ॥ ४ ॥ लघु मध्यम उत्कृष्ट पंच। मास वरिस जावजीव। विधि पूर्वक आराधतां। पामे ज्ञानसदीव ॥ ५ ॥ दोयपरोक्ष प्रत्यक्षतीन। श्रुत उपगारी जाण सूरिकृपाचन्द्र प्रणमतां लहियें निर्मल नाण ॥ ६ ॥ इति पंचमी चैत्यवंदन संपूर्ण ॥

॥ अथ अष्टमीनुं चैत्यवंदन लिख्यते ॥ ३ ॥

आठमदिन आराधिये । प्रवचन माता सार । अष्टसिद्धि आपे सदा । कापे कुमति कुठार ॥ १ ॥ आठमद निवारिने । अष्टकर्म करि अत । श्रावण सुदि आठम दिने पासजी लह्या भव अत ॥२॥ भादरवा वदि आठमें । सुपास चव्या जगभाण । माघ सुदि जनम्या अ-

जित, फागन संभव चव्या जाण ॥ ३ ॥ चैतर वदि आठम रिषभ । जन्म दीक्षा बे जाण । वैसाखसित अष्टमी । अभिनंदन निर्वाण ॥४॥ एहिज तिथी जनम्या सुमति, जेठ वदि मुनि सुव्रत, अषाढ़ सुदि आठम नेमि जिनेसर निर्वृत ॥ ५ ॥ श्रावण वदि आठम दिने। नमि जनम्या जिण जाण । पोसह करो आठपहेरनो । जिम लहो गुण मणि खाण ॥ ६ ॥ अष्टमी इम आरा-

धिये। त्रिकरण करि इक ठोर। कृपाचन्द्रसूरि भवितणा। तूटे कम कठोर ॥७॥

॥ इति अष्टमी चैत्यवंदनं ॥

॥ अथ एकादशीनुं चैत्यवंदन लिख्यते ॥ ९ ॥

॥ श्रीमल्ली त्रिभुवन धणी। जन्म दीक्षाने ज्ञान। कल्याणक-एकादशी। मिगसर शुदि मन आण ॥१॥ अर पारस दीक्षामही।

एकादशी दिन जाण। रिषभ अजित सुमति नमि, पाम्यो केवल नाण ॥२॥ पद्मप्रभु सिवपुर लह्यो। एकादशी अतिरूडी। इग्यारे अंग आराधवा। ए तिथी नहीं कूडी ॥३॥ इग्यारे गणधर थया। द्वादश अंग रचनार। जिन कृपाचंद्रसूरि सेवतां पामे भवनों पार ॥ ४ ॥

इति एकादशी चैत्यवंदनं ॥

॥ अथ १० शीतलजिन चैत्यवंदन लिख्यते ॥ ५ ॥

॥ शीतल जिनपति जगतिलो शांति सुधारस सार । अन्तर ताप बुझायवा । प्रभु दरसण जलधार ॥१॥ सुग्रीव कुलनभ दिनमणि । नन्दा मात सुजात तीनभवन तारनतरण प्रभुजी छो विख्यात ॥२॥ अतर वेरी नमायवा । नमि-सेवो जगदीश । पारस फरसन तें हुवे । पावन विशवा ,वीश ॥ ३ ॥

उगणीसे तेहोतरे वुहारी थाप्या-
ईस । प्रभु पद पंकजमां नमें ॥
कृपाचंद्र सूरीश ॥४॥ इति १०
शीतल जिन चैत्यवंदन ॥

॥ अथ १२ वासु पूज्य जिन चैत्यवं-
दन लिख्यते ॥६॥

॥ बारम जिनवर वंदिये ।
वासु पूज्य जिनचन्द । रक्त वरण
द्यु ति सुंदरू, मोहे सुरनर इंद ॥१॥
सित्तर धनुषनी देहड़ी लाख बहु-
त्तर आय । त्रिकरण जोगे आरा-

धतां । निज गुण निर्मल थाय ॥२॥ देरासर भलो दीपतो ए । वुहारी नगर मञ्झार । सूरिकृपाचन्द्र सेवतां । पामे जग जयकार ॥३॥ इति श्रीवासुपूज्य जिन चैत्यवंद संपूर्ण

॥ अथ श्री दीपमालिका चैत्य वंदन लिख्यते ॥७॥

॥ सिद्धारथ कुल दिनमणि । त्रिशला नो जायो । अन्तिम चौमासी प्रभु । पावापुरि आयो

॥ १ ॥ कातिकवदिअमावसँ।
सोल पहर परसिद्ध। देशनादीधी
वीर जिन अनुपमसिवसुख लीध
॥२॥ गौतम स्वामी ने ऊपनो।
केवल ज्ञान उदार। दीवाली पर
भातमां, सहुसंघरे सुखकार ॥ ३ ॥
भाइ बीजनो पर्व थयो, शोक नि-
वारण काज। दीवाली आराधनां।
सारे वंछित काज ॥४॥ छट्ठ करि
गुणनो करो, चाढो नैवेद्य सार।
कृपाचन्द्र सूरि सेवतां, पामे भव-

नो पार ॥५॥ इति श्री दीपमालिका चैत्यवदनं ॥

॥ अथ नवपदजी चैत्यवंदन लिख्यते ॥८॥

॥ श्री अरिहत ना वार गुण सिद्धना आठ कहाय ॥ छत्तीश गुण सूरितणा । पचवीस कह्या उवज्झाय ॥१॥ मुनिवरगुण सत्तावीस छे । दरसण सडसठ जोय । ज्ञान इकावन भेद छ । चारित्र सित्तर होय ॥२॥ तप पचास गुण

जाणिये । नवपद्ना श्रीकार ॥ ए-
कंदर सहुध्याइये । त्रणसैछयालीश
सार ॥३॥ आंबिलकरि आराधियै।
नव ओली सुजगीश । त्रिकरण
योगेध्यावतां । जिनकृपाचन्द्रसू-
रीश ॥ ४ ॥ इति० ॥

॥ रोहिणी तप चैत्यवंदनं ॥६॥

बासु पुज्य जिनवर नमुं, बा-
रमजिन सिरताज । रोहिणी तप
आराधतां, सारे वांछित काज ॥१॥
चोबिहार उपवासकरि, पूजक पू-

जीदेव, दोय सहसगुणनो करी, त्रिकरणथिरकरो सेव ॥२॥ सत्तावीश लोगसतणो, काउसग्ग दिल धार, खमासमण देइभावथी, प्रदक्षिणा सुविचार ॥३॥ स्वस्तिक करि फल ढोइये, पूजा विविध प्रकार। जिन कृपाचन्द्रसूरि सेवता, पामे भवनो पार ॥४॥ इति रोहिणी तपनो चैत्यवदन सं०।

॥ अथ श्री वीसस्थानक चैत्य-वंदनं ॥ १० ॥

श्री अरिहन्त अनन्त कांति सिद्ध निज गुण रामी, प्रवचन आचारिज स्थविर उवझाया हित कामी, साधु नाण दंसण नवम विनय चारित्र वखाणो, ब्रह्म क्रिया तप गोयम जिन वेयावच्च जाणो ॥ १ ॥ समाधि अपूर्व ज्ञान ग्रहै श्रुत भक्ति नित सार, तीरथ प्र-भावन वीसमो निरुपम सुख दा-

तार प्रथम चरम जगदीश सकल सेवी लही संपदा, इक दो त्रण पद जपी वावीस जिनवर पद मुदा ॥२॥ ए विंशति थानक कह्या ए, ज्ञाताए जिनचंद. ए सेवनथी भवि लहे. त्रिभुवन पति कृपाचंद ॥३॥ इति श्री वीसस्थानक चैत्य

वंदन संपूर्णम् ॥

॥ अथ श्री वीसविहरमानजीको

चैत्यवंदनं ॥ ११ ॥

सीमंधर युगमंधर वाहू सु-

बाहु जाण, सुजात स्वयं प्रभु
सातमा, ऋषभाननमन आण ॥१॥
अनंत वीर्यने, सूरप्रभु, विमल
वज्रधर कहिये, चंद्रानन चन्द्र
बाहुजी, भुजङ्ग नेम प्रभु लहिये।
॥२॥ इश्वर श्रीवयरसेनजी, महा-
भद्र जिन देव, देवजस अजित
वीर्य जी, सुरपति सारे सेव ॥३॥
पंच विदेहे विचरता ए, वीस
जिनेसर जाण, कृपाचन्द त्रिहुं
कालमें, नमतां कोड कल्याण ॥४॥

॥ इति श्रीवीसविहरमानजी चैत्यवन्दन सम्पूर्णम् ॥

॥ अथ श्री सिद्धाचलजीका चैत्य वंदन ॥१२॥

सिद्धाचल सेवुं सदा, सहु तीरथ सिरदार सोरठ देस सोहामणो, तिहां ए गिरिवर सार ॥१॥ तीन भुवन विच एहवो, तीरथ कोइ न होय, श्रीमधर वयणे करी, शेत्रुंज महातम जोय ॥ २ ॥ श्रीयुगादि जिनराज जी, समव-

सर्या इण ठाम, तेहथी ए तीरथ
वड़ो, अविचल सुखनो धाम ॥३॥
काति पूनिम दश कोडसुं ए द्रावड
वारिखिल्ल जाण, सिद्धि वधू रंगे
वरया, कृपाचन्द मन आण ॥४॥
॥ इति सिद्धाचलजी चैत्यवन्दन
सम्पूर्णम् ॥

॥ अथ श्री भद्रेसरमंडन वीरजिन
चैत्यवंदन ॥१३॥

चोविसम जिनवर नमुं, म-
हावीर जिनदेव। शांति सुधामय

चन्दलो, सुरनर सारे सेव ॥ १ ॥ भद्रेसरमे दीपतो, देरासर मनुहार वीरजिनेसरजगजयो, बावन देहरी सार ॥ २ ॥ त्रिसलानंदन जग धणीए, सुख सपति करतार त्रिकरण योगे प्रणमतां, कृपाचन्द सुखकार ॥३॥ इति श्री वीरजिन चैत्यवंदन संपूर्णम् ॥

॥ अथ श्री नेमिजिन चैत्यवंदन प्रारम्भ ॥ १४ ॥

नेमिसर जिन जग धणी, रैवत

गिरि सिण गार, यादव कुल नभ दिनमणि, भवियण ने सुखकार ॥१॥ तोन कल्याणक इहां थया, दीक्षा नाण निरवाण, भव्य मनोरथ पूरवा, चिन्तामणी समजाण ॥२॥ शिव रमणी रंगे वर्याए, बावीसम जिनचन्द, कृपाचन्द नित प्रति नमै, शिवसुख तरुनो कंद ॥ ३ ॥ इति श्री नेमिजिन चैत्यवंदन

सम्पूर्णम् ॥

॥ अथ श्री पुण्डरीक गणधर चैत्यवंदन प्रारम्भ ॥१५॥

रिषभ जिनेश्वर रायना, पहिला गणधर देव, पुण्डरीक नामे सदा सुर नर सारे सेव ॥१॥ चैत्री दिन शिवपुर लह्या, पांचक्रोड परिवार, पुण्डरीक तेहथी थयो, प्रगट नाम सुखकार ॥ २ ॥ आअवसर पिणि-काल मेए, प्रथम सिद्ध अभिराम, कृपाचन्द गिरिराजने, प्रति दिन करे प्रणाम ॥ ३ ॥ इति पुण्डरीक गणधर चैत्यवंदन सम्पूर्णम् ॥

॥ अथ श्री पुण्डरीक चतुर्विंशति जिनलांछन चैत्यवन्दन ॥१६॥

रिषभ वृषभ गज अजितने, संभव घोडो जाण, अभिनंदनने वांदरो, कौंच सुमति मन आण ॥१॥ पद्म पद्म स्वस्तिक सुपार्श्व, शशिचन्द्र प्रभ लहिये, मकर सुविधि शीतल श्रीवत्स, श्रेयांस खडगी कहिये ॥२॥ वासुपुज्य महिषतणो विमल बराह नो जाणो, अनंत श्येन वज्र धर्मने, शांति मृग

पहिचानो ॥ ३ ॥ कुंथुनाथने बोकडो अर नद्यावर्त होय,मल्लीघटसुव्रत काछवो,नमि निलोतपल जोय ॥४॥ नेमि संख फणि पार्श्वने, वीर सिंह कहाय, कृपाचन्द्र ध्वज युत नमुं, चउवीसे जिनराय ॥ ५ ॥ इति चतुर्विंशति जिनलाछन चैत्यवंदन संपूर्णम्

॥ अथ श्रीपूनिमनो चैत्यवंदन प्रारम्भ ॥ १७ ॥

श्रीजिन शासन जगजयो पर्व

शिरोमणि जाण, पूनिम पर्व मोटो
कह्यो, त्रिकरणशुचि मन आण॥१॥
श्रावणसुदि पूनिमचव्या,मुनिसुव्रत
जगदीश,आसोजी पूनिमचव्या,न-
-मि त्रिहुं जगना ईश ॥२॥ मिगसर
पूनिम संभव,संयम लीधोसार,पौषी
धर्म जिनेसरू, केवल ज्ञान उदार॥
३॥ चैत्री श्रीपद्मप्रभु, केवल ज्ञानप्र-
धान इम पूनिममांजाणीये,कल्याण
क सुखकार ॥४॥ दश वीश त्रीस
चालीसनी,पंचास पूजासार,फल अ

च्तत नैवेद्यनी, पूजा विविध प्रकार ॥ ५ ॥ चैत्री सेत्रुंज सेविये, जात्रा करी मनरङ्ग, तिम कार्तिकी आराधिने, करो सद्गुरुनोसङ्ग ॥६॥ बारह पूनिम आराधियेश्रे,श्रीयुगादिजिन देव, जिन कृपाचन्द्र सूरिसदा, सुर नर सारे सेव ॥ ७ ॥

॥ इति पूनिमचैत्यवंदन सं० ॥

॥ अथ श्री शान्तिनाथ चैत्यवंदन प्रारम्भ ॥ १८ ॥

सोलमजिनवर सेविये, शांति-

नाथ सुखकार, अचिराउदरे ऊपना भाद्रववदिसातमसार ॥ १ ॥ जेठ वदि तेरसप्रभु,जनम्याजगतदयाल, मारि निवारणथी थयो, शांतिनाम सुरसाल ॥२॥ चक्रिपद पाम्यो प्रभु, चउदश संजम लीध, पोष सुदि नवमीदिने, केवल सर्व प्रसीध ॥३॥ जनम दिवस प्रभु पामीयो, सिवसुख परमपवित्र,लाख बरसनो आउखो, सुणो श्रीशांतिचरित्र ॥ ४ ॥ मृगलांछन सेवित सदा, गरुड यक्ष

अभिराम, जिनकृपाचन्द्रसूरि सेवं-तां, निर्वाणी पूरे काम ॥५॥ इतिश्री शांतिनाथजीचैत्यवन्दन सम्पूर्णम् ॥

॥ अथ श्रीपार्श्वनाथजी का चैत्यवंदन ॥ १६ ॥

वामानंदन पासजी, अश्वसेन कुलचन्द, नील वरणशुचि देहडी, सेवे सुरनरइन्द ॥ १ ॥ चैतवदि चोथऊपना, माताकूखे स्याम, पोप-दशमी जनम्या प्रभु, त्रिभुवन जन

विसराम ॥२॥ इग्यारसदीक्षा ग्रही, कमठ हरावी ईश, चैत्रकृष्णनी चोथने, केवल लह्यो जगीश ॥३॥ संघ थापीने जगगुरु, विचर्या देशविदेश, वाणारसी नगरी थया, चउकल्याण विशेष ॥४॥ आषाढ़सित आठमे, शिवबधुझाल्यों हाथ, जिनकृपाचन्द्रसूरि सदा, सेवो जगनानाथ ॥५॥

॥ इति पार्श्वनाथ चैत्यवंदन संपूर्णम् ॥

अथ श्री महावीरस्वामी
चैत्यवंदन ॥ २० ॥

वीर जिनेसर जगधणी, त्रिशलानो जायो, अषाढ़शुदिषष्टि प्रभु, देवानन्दा उदरे आयो ॥१॥ आश्विन वदि त्रयोदशी, हरणेगमेषी ईश, त्रिशला उदरे सक्रम्या, चवदे स्वप्न लहीश ॥२॥ चैत्र शुक्ल त्रयोदशी, जन्म थयो सुखकार, चौसठ इंद्र आव्या तिहा, स्नात्र करे विधिसार ॥३॥ वर्धमान नाम थापियो, वृद्धि-

तणो अनुमान, मिगसर वदि दशमी लियो, संजम सुखनी खान ॥ ४ ॥ वैशाख सुदि दशमी दिने, केवल पाम्यो सार, पावापुरी मुगते गया, दीवाली सुखकार ॥५॥ इम कल्याणक प्रभु तणा, आराधे नरनार, जिनकृपाचन्द्र सूरि कहे, पामे भवनो पार ॥ ६ ॥

॥ इति श्रीमहावीरस्वामी चैत्यवंदन सं० ॥

॥ अथ पर्युषण पर्वनो चैत्यवंदन प्रारम्भ ॥ २१ ॥

श्री वीर जिनेसर भाखियो, पर्वोमां सिरदार। रत्नोमां चिन्तामणि, गिरिमां शत्रुंजय सार ॥१॥ लौकिक लोकोत्तर वलि, पर्व घणा दिलधार। पजुषण समको नहीं, बोल्यां शास्त्र मझार ॥ २ ॥ नंदीसर दीपे जई, उच्छव करे सुरराज। तिम श्रावकआराधनां. सारे वांछितकाज ॥३॥ आस्रव कषाय निवारिने. समा-

यक करो शुद्ध। जिनपूजा परभावना, करिने तरो भववुद्ध ॥४॥ कल्पसूत्र सुणो इकमना, संवच्छरी पड़िक्क-मिये । जिनकृपाचन्द्रसूरि सेवतां, भवमां नवि भमिये ॥५॥ इति श्री पर्युषणापर्वनो चैत्यवंदनसंपूर्णम् ॥

अथ उपधन चैत्यवंदन ॥ २२ ॥

वीरजिनंदे भाखियो । उपधान तप विस्तार॥ सुत्रे गणधर साखियो। महा निशीथ मझार ॥ १ ॥ पहलो वीसड़ नवकारनो । इरिया वीसड़

जाण ॥ भावस्तव पेतीशनो । ठवणा स्तव चउ आण ॥२॥ लोगस अठावीसनो । दव्वत्थ वछक्कड़ होय ॥ माला उपधान सातमो । सिद्धाण बुद्धाणं जोय ॥३॥ सात भय निवारवा । सात करो उपधान ॥ क्रिया श्रुद्धकर वातणो । एह उपाय सुजान ॥४॥ विधि योगे आराधिये ए । तप उत्तम सुखकार ॥ जिनकृपाचन्द्रसूरि सदा । आगमनो आधार ॥ ५ ॥

इति चैत्यवंदन० ॥

॥ अथ नवपदवृद्धस्तवन ॥

(दुहा) अरिहंतादिक पद तणो, ध्यानधरि मनमांहि । सिद्धचक्र गुणवरणवुं, त्रिकरण धरिउछाहि॥१॥ राजग्रही नयरी भली, समवसर्या गणधार । सिद्धचक्रगुण वरणव्या, ते सुणजो अधिकार॥२॥ (ढालपहली)जगजीवनजगवालहो ॥ एदेशी श्रीगौतमगणेसरु।पभणेभवि सुखकार लालरे । श्रेणिकपमुहा सांभले। उत्तम धर्मविचार ला० श्री० ॥३॥

दुर्लभ मानुष्यभव लही। सेवो श्री
जिनधर्म ला० दानादिकचउभेदथो।
आराधिलहो शमे ला० श्री० ॥ ४ ॥
भावविना जे दानछे। सिवसुख तेह
थी न थाय ला० सीयल ते निष्फल
लोकमां। भावविना कहि वाय ला०
श्री० ॥५॥ भाव वीहूणो तपसहि।
भव बित्थारणहेतु ला० दानादिक
भावेमिल्या। भवसायरना सेतु ला०
श्री० ॥६॥ भाव मनो विषयि कह्यो,
मालवन मन जाण ला० आलंबन

बहु जातिना । नवपद मनमा आण
ला० श्री० ॥ ७ ॥ अरिहंत सिद्ध
आचारज । उवझाय साधुवखाण,
लालरे दर्शन, ज्ञान चारित्रवलि ।
तप ए नवपद जाण ला०श्री० ॥८॥
ढाल दूसरी ॥ भरतरीनीदेशी ॥ नव
पदध्यावो भविजना। त्रिकरण करि
इकतारजी ॥ गौतमस्वामी उपदिसै
श्रेणिकनरपतिसारजी ॥ न० ॥ ९ ॥
अठारदोष दूरे टल्या । केवलज्ञान
प्रकाशजी॥ देवदानवपति प्रणमता॥

प्रगट करे तत्व खासजी न० ॥१०॥
एहवा श्रीअरिहंतने । ध्यावोचतुर
सुजाणजी ॥ भावसहित आराधतां ।
सिवसुखलहोमहिराणजी न०॥११॥
पनरभेदप्रसिद्ध छे। कर्मरहित सुख-
दायजी ॥ सिद्ध अनतचतुष्कता ।
ध्यावो सिद्धलयलायजी न० ॥१२॥
पचाचारने पालता, परउपगार प्र-
धानजी ॥ शुद्धसिद्धांत वखाणता,
आचारजश्रुतखानजी न० ॥१३ ॥
गणतृप्तिकरता भला । सूत्र अर्थ-

नोदानजी। शिष्यादिकने आपता। नमोउवज्झायसुजानजी॥१४॥ कर्म भूमिमां विचारता। रत्नत्रयनाधार-जी॥ सुमति गुपति मुनिपालता। निकषाया सुविचारजी न० ॥१५॥ जिन प्रणीत जोशास्त्रमां। तत्व स-द्दहणास्वरूपजी, दरशन रयण प्रदी-पने। धारोचितमां अनूपजी न० ॥ ॥१६॥जीवादिक पदार्थनो। बोध स्वरूप विचारजी, विनयकरि सीखो सदा। नाणछे सर्व आराधजी न०

॥१७॥ अशुभक्रियानो त्याग छै। सु-
भकिरिया अप्रमादजी॥ उत्तमगुण
निरुक्तथी। लहोचरणनो स्वादजी
न० ॥१८॥ सघन करमतमहरणकुं।
भानुस मोतप जाणजी॥ कषाय
रहित बारभेदछै। तप पद मनमां
आणजी न० ॥१६॥ (ढाल) तीजी॥
कपूर हुवे अति ऊजलो जी ए देशी।
ए नवपद जिनधर्मनोजी, सारभूत
कहिवाय, मिवसुखनो कारक सही
जी, आराधा गुरुसहाय, भविक जन

सेवो जिनउपदेश, पभणो प्रथम ग-
णेश भ० ॥२०॥ ए नवपद थी नीप
जैजी, सिद्धचक्र यंत्रराज, अराधिने
सुखलह्यो जी, जिम श्रीपालमहारा-
ज, भ० से० ॥२१॥ तव पूछे मगधे-
सरूजी, कुण श्रीपालनरेश, किम-
आराधिसुखपामीयोजी, करुणाकरो
गणेश भ०से० ॥२२॥ गौतम स्वामि
उपदिशेजी, निसुणो श्रेणिकरा-
जान, चंपानगरी नो राजीयोजी,
श्रीपालनाम सुजाण भ०से०॥२३॥

उवररोगे पीडीयोजी, परणि राज-
कुमारी उज्जयणीमा जुहारियाजी,
रीपभेश्वर मनुहारी भ० से० ॥२४॥
मुनिचंदगुरु उपदेशथीजी, आरा-
ध्यो सिद्धचक्र, रोगगयो वलिसुख-
लह्योजी. संपदा पामीजिमशक्र
भ० से० ॥२५॥ नवपद ओलीआं-
विलतणीजी, नवराणीने साथ,उ-
ज्जमणो पूरणहुवांजी, करि खर-
च्यो घणो आथ भ० से० ॥ २६ ॥
नवपडिमादेरासरुजी, नवजीरणउ-

ष्कार, पहिलोपदआराधियोजी, नव पूजा मनुहार भ० से० ॥२७॥ इम नव पद विस्तारथीजी, पूजी लह्यो सुखसार, आयु पूरण करि ध्यानथी-जी, नव मेस्वर्ग अवतार भ० से० ॥२८॥ इम श्रीपालना भवथकीजी, नवमे भवसहुसार, निरुपमशिवसुख पामशेजी, कहे गौतमगण धार भ० से० ॥२९॥ श्रेणिक सुणि हरखित थयो जी,प्रभुजीना वांद्यापाय। वीर जिनेसर इम भणेजी, सुण श्रेणिक

नरराय भ० से० ॥३०॥ एक एक पद आराधतांजी, केई पाम्या भव अंत, नव पद ते निज आतमाजी, ध्याता ध्येय लहंत, भ० से० ॥३१॥ तीर्थंकरपद पामस्येजी, तुंइण भरत मझार, इम सांभलि नृप आनंदियो जी, निजघरपोलो सुखकार भ० से० ॥३२॥कलश ॥ इम वीर जिनवर भुवनदिनयर नवपदमहिमावरण-व्यो, सुरतबंदररहि चोमासो सि-द्धचक्रगुण गणस्तव्यो, सवत उग-

णीसे पचोत्तर आश्विन शुदि सात-
मदिने, जिनकृपाचंद्र सूरि पभणे
वर्तो मंगल प्रतिदिने ॥२३॥

॥ इति नवपद वृद्ध स्तवनम् ॥

॥ अथ दूजनो स्तवनम् ॥

(दुहा) वर्द्धमान जिन वंदिये,
त्रिशलानंदन देव, सिंहलंछन सेवि
तसदा, सुरपतिसारे सेव ॥१॥ जन्म
समेथी जगगुरु, अतुलवलि वडवीर,
तपउत्तम विधियुतकह्यो, जलनिधि

जिम गंभीर ॥२॥ (ढाल पहली ॥) कृपानाथ मुझ वीनती अवधार ॥ ए देशी ॥ धर्म करो जिनराजनो-जी, आणी उल्लट भाव, दोय भेदे आराधतांजी, पामो आत्म स्वभाव, भविक जनसेवो श्रीजिनवाणी, निजगुणमणिनी खाणी भ० ॥ १ ॥ तिथि आराधन फलतणोजी, शास्त्र मांहे अधिकार, बीज आराधो भवि जनाजी, तप किरिया विधिसार भ० ॥२॥ दोयमासलघु दूजनेजी, जाव

जीव उत्कृष्ट, दोय वरस दोय मास-
नीजी, करो बीज सुभ द्रष्ट, भ०
॥ ३ ॥ पडिकमणा दोयटंकनाजी,
देव वंदन निरधार, विधिसेतीफल
नीपजेजी, पामे भवनोपार भ०॥४॥
बीजदिवसनो सहु जुवेजी, चंद्रो-
दय सुप्रसिद्ध, वधतिकलातिमजा-
णजोजी, धर्मथी वांछित सिद्ध भ०
॥ ५ ॥ दुविधधर्मजिनवर कह्योजी,
देशने सर्वविरत्त, धर्म शुकल दोय-
ध्यानमांजी, होय सदा निरत्त भ०॥

॥ ६ ॥ अर्थ प्रकासे जिनवरूजी, सूत्ररचे गणधार, विहूं सेवे वाचंयमीजी, द्वादश अंग विचार, भ० ॥ ७ ॥ (ढाल दूसरी) नमोरे नमो से त्रुंजगिरीरे। एदेशी। बीजदीवसमां जानियेरे, कल्याणक सुविसालरे, श्रावणसुदिबीजे चव्या रे, सुमतिनाथ दयालरे, नमोरे नमो जिन चंद्रनेरे ॥१॥ माघ मासनी ऊजली रे, बीजदिवसमां जाणरे, अभिनंदन जनम्या प्रभूरे, त्रिहुंजगनाम-

हिराणरे नमो रे० ॥२॥ ए हीज तिथी वासुपूज्यजीरे, पाम्यो केवल नाणरे, फागुण सुदि बीजे जानियेरे, अरनाथ चवन सुजाणरे नमोरे०॥३॥ समेतसिखर पर सिववर्यारे, सीतलजिनवरनाणरे, चैतवदि बीजसुदरुरे, अविचलसुखमनआणरे नमो० ॥ ४॥ इम कल्याणक इनतिथीर, काल अनंते होयरे, अणंतकल्याणक जाणजोरे, एह आगमविधिजोयरे नमो० ॥५॥ तप पूरणहूवा थकांरे,

उज्जमणो सुविवेकरे, रत्नत्रयी आ-
राधवारे, धनखरचो वहुछेकरे नमो०
॥६॥ सीमंधरादि जिनवरारे, विह
रमान जिनवीसरे, मन मंदिरमा
आवजोरे, जिनकृपाचंद्रसूरीसरे ॥
नमो० ॥ ७ ॥

॥ इति वीजका स्तवन सपूर्णम् ॥



॥अथ पंचमिका वृद्ध स्तवन लि०॥

॥ दुहा ॥ सिद्धारथ कुल दिन
मणि। त्रिसलादेवि सुजात॥वर्द्ध-

मानजिनचंदकुं। नमन करि पर-
भात ॥१॥ गुरुदरियो भरियो गुणै,
किणविधि तरियो जाय। बलि-
हारि गुरुदेवनी, मोमनरह्यो लोभाय
॥२॥ जिन वाणी पीयूष रस, पान-
करो निशिदीश ॥ पांमो नाणसुहुं
करु। भाखै जगनाईश ॥३॥ (ढाल)
कपूरहुवै अति ऊजलोजी ॥ ए देशी
॥ ज्ञान आराधो भवि जनाजी। आ-
णि भक्तिअपार, पांच ज्ञान प्रगटा-
यवाजी। पञ्चमी सेवों उदारर,

प्राणि जिनवाणीमन आण, अनुपम सुखनीखाणरे ॥ प्रा० जिन० ॥१॥ नाण वड़ोसंसारमांजी, ज्ञानथी मुगति थाय, ज्ञान दीपक सम जाणियेजी, सर्व लोक प्रगटायरे ॥ प्रा० ॥ जिन० ॥ २ ॥ दिव्यज्ञानलोचन कह्योजी, लोकालोक देखाय॥ज्ञानविनापशुसारिखोजी, जाणे नहीनर कांयरे ॥प्रा०॥ जिन० ॥३॥ ज्ञान आराधकसर्वथीजी, किरिया देशविचार भगवति सूत्रमांभाखि-

योजो, आठमें शतक मझाररे ॥
प्रा० ॥ जिन० ॥४॥ अज्ञानी क्रोड
वरसमांजी, तप करि निर्जरा जेह,
ज्ञानी स्वासोस्वा समांजी, कर्मक्षय
करे तेहरे ॥ प्रा० ॥ जि० ॥५॥ ज्ञान-
तणो अधिकार छेजी, नंदीसूत्र म-
झार, क्रिया सहित ज्ञान सुंदरूजी,
मोक्षतणो दातारर ॥ प्रा० ॥ जि०॥
६॥ जिम सोनो सुगंधथीजी, रत्नमं-
दडी ये जाण, संख सोहे दूधे भर्यो-
जी, तिम किरयायुतनाणरे ॥प्रा०॥

जि० ॥७॥ महानसीहैमांथि कह्यो जी, पञ्चमो विधिविस्तार, वीरजिनंद दाखियोजी. सूत्रे श्रीगणधारे । प्रा० ॥ जि०॥८॥ (ढाल बीज) सखि आजअनोपम दीवालि ॥ ए देशी ॥ज्ञानी आराधो संपदा साधी, निजगुणनो एडपगारी, सखि नाण सुहंकर गुणकारी ॥६॥ पञ्चमी तप विधियुत भवि करके, नाणने सेवा इकतारी ॥ स० ॥ना०॥१०॥ मगसर माह फागुण वैमाख. जठ आपाढने

दिल धारी ॥स०॥ ना० ॥११॥ एष
ट्मासे विधियुत लीजे, शुभदिन
गुरुमुखथी सारी ॥स०॥ ना० ॥१२॥
देव वंदन देहरासर करीने, पोथी
पूजो सुविचारी ॥स०॥ ना० ॥१३॥
गीतारथ गुरु चरण नमीने, नंदि
विधिकरि हितकारी ॥ स० ॥ना०॥
॥१४॥ गुरुमुख उपवास भावेकरीने
पडिक्कमिटालोअतिचारी ॥ स० ॥
ना० ॥१५ ॥ शास्त्रभणो श्रीसद्गुरु
पासै, पञ्चमी दिन आरंभ टारी ॥

स० ना०॥ १६॥ पांचवरस पांच मासने उत्कृष्ट, जावजीवकरे इकतारो स० ना० ॥ १७॥ पांचमासलघुपञ्चमी कीजे, स्तवन थुइ कहे ब्रह्मचारी स० ना० ॥ १८ ॥ ढालतीजो ॥ पहलो अग सुहामणो रे॥ एदेशो ॥ ज्ञाननमोगुणभविजनारे नाणप्रकाशकजाणो सुगुणनर, पञ्चमीतप विधियुत करो रे लाल, पामा अविचल नाणरं ॥सु०॥ज्ञा० ॥ १९ ॥ ढाय भेदे नाण जाणी-

थेरे । निश्चयनेव्यवहाररे ॥ सु० ॥
त्रण अनुयोग व्यवहार मांरे ला०
द्रव्यनिश्चय सुखकाररे ॥ सु० ॥
ज्ञा० ॥२०॥ पांच ज्ञानना भेदछैरे,
इकावन सुविशेष रे ॥सु०॥ भिन्न-
भिन्न ते दाखव्यारे ॥ ला० ॥ तेह
कहुं लवलेशरे ॥सु०॥ज्ञा०॥२१॥
मतिज्ञानना जाणियेरे, अठावीश
प्रकाररे ॥ सु० ॥ श्रुतना चवदे ने
वीशछेरे, अक्षरादिक सुविचाररे
॥सु०॥ ज्ञा०॥२२॥ अवधिछ असं-

खभेदछेरे मनपर्यंव दुगजाणरे ॥
सु० ॥ लोकालोक प्रकाशको रे ॥
ला०॥ केवलमनमें आणरे ॥सु०॥
ज्ञा० ॥२३॥ तीन ज्ञान प्रत्यत्तछेरे,
देशसर्वसुजगीशरे ॥ सु०॥ अवधि
मनपर्यंव वलिरे ॥ला० ॥ देश प्र-
त्यत्त कह्या ईशरे ॥ सु० ॥ ज्ञा० ॥
२४॥ केवल सर्व प्रत्यत्तनेरे, ध्यावो
परमपवित्ररे ॥ सु० ॥ दोय परोत्त
पिछाणियेरे ॥ला० ॥ मतिश्रुतभेद
विचित्ररे ॥ सु० ॥ ज्ञा० ॥ २५ ॥

च्यार ज्ञान टप्पाकह्यारे, श्रुत अनु
योग विचाररे ॥सु०॥ उद्देशादिक
जाणियेरे, ॥ला०॥अनुयोगद्वारम-
झाररे॥सु०॥ ज्ञा० ॥२६॥ उपगारी
श्रुतनाणथीरे, जाणे आज त्रिका-
लरे ॥सु०॥ परबोधकश्रुत सेवियेरे
लाल, सद्गुरुचरण नहालरे ॥सु०॥
ज्ञा० ॥२७॥ वायण प्रछना पराव-
र्तना, अनुपेहा दिलधाररे ॥सु०॥
धर्मकथा कहा कीजीयेरे ॥ ला० ॥
सझाय पांच प्रकाररे ॥सु०॥ज्ञा०॥

॥ २८ ॥ अंगइग्यार बारउपांगछेरे, दश पयण्णा नदोशरे ॥सु०॥ छछेद चउमूल दिलधरो रे ॥ ला० ॥ अनुयोगद्धारपैतालीशरे ॥ सु०॥ ज्ञा० ॥ २९ ॥ ढाल चोथी ॥ गरबेनी ॥ स्वामी शरीर सोसाइ गयो ॥एदेशी॥ ज्ञान भजो भवि प्राणीया, वंछितफलदातार, ज्ञानीदीपक समकह्यो, सूत्रे श्रीगणधार ॥ज्ञा०॥ ॥ ३० ॥ सुरतरु सुरमणि सुरगवि, कल्पलताअनुकार, एहथी अधिको जाणि

ये, महिमाअगमअपार ॥ ज्ञा० ॥
३१ ॥ काल अनादि लगे भम्यो,
मिथ्यामति भवमांय, सम्यग्ज्ञान
प्रगटे यदा, भवमें न रहाय ॥ज्ञा०॥
॥३२॥ समकितगुण प्रगटाववा,
अणाकरणाकरे जीव, समकित ज्ञान
एकणसमे, लहै सुख अतीव ॥ज्ञा०
॥३३॥ देशविरति पामें तदा, पल्य-
पहुत्तस्थिति जाय, संख्यातसागर-
गयांचरणधर, ज्ञानादिकं चितलाय
॥ ज्ञा० ॥ ३४॥ घातिकरमनो त्त-

यकरी, केवलज्ञान प्रकाश, भव्य-
कमलप्रतिबोधता, विचरे भगवंत
खास ॥ ज्ञा० ॥ ३५ ॥ ज्ञानचरण
दोय भेदछे, मुक्ति कारण जाण,
तप संजम विहुं दाखिया, भाव ए
मनमां आण ॥ज्ञा०॥३६॥ पांचमि
आराधनाकरि,ज्ञान भगति करो
सार , तपपूरणथयां कीजिये, उज्ज
मणो सुविचार॥ज्ञा० ॥३७॥ पांच-
पांचज्ञानादिना, उपगरण करो
सार, धनखरचो बहुभावथी, लहो

पुन्य संभार ॥ज्ञा०॥ ॥३८॥ देवो-
दान सुपात्रने, साहमीवछल सार,
भगति करो साहमी तणी, रात्री-
जागोउदार ॥ ज्ञा० ॥ ३६ ॥ वरदत्त
ने गुणमंजरी, ज्ञान आराधिने सुख,
पामी अविचलपदलह्या, मेटीने
भवदुःख ॥ ज्ञा० ॥ ४० ॥ कलश ।
संवत् उगणीसै पिचत्तर पोषवदि-
एकम भले, सुरतबंदर भविकसुख
करसीतलजिन सुपसाउलै, श्रीवीर
जिनवर पंचमितप विधि प्रकाश्यो

सुभमणे, सुविहित परंपर गच्छखर-
तर जिनकृपाचंद्रसूरिभणे ॥ ४१ ॥
॥ इति पंचमो चार ढालनो स्तवन ॥

अथ अष्टमी वृद्ध स्ततवन लिख्यते।
॥दुहा॥ वर्द्धमानजिनवरनमूं ।
समरि सारदमाय । अष्टमी तप
विधिवरणवुं । आगमयुत संप्रदा-
य ॥ १ ॥ आठमतिथी अराधवा।
भाखें त्रिजगभाण ॥ विधिसेंति
तपकीजिये। पामेउत्तमनाण ॥ २ ॥

॥ढाल पहली ॥ शंभवजिनवर वीनती ॥ एदेशी ॥

आठम तपआराधिये। अष्टमी गति दातारो रे ॥ प्रवचन माता आठने । पालो निसदिन सारोरे ॥ आठम० ॥ १ ॥ अष्टसिद्धि कारक सदा । आठमतप उजमंतारे, सामायकपोसहकरि, पर्वतिथिसेवतारे ॥ ॥ आ० ॥ २ ॥ पर्वतिथीमां वंधाय छे । प्रायें परभव आयुरे ॥ तिणकारण तिथीतपकरो । आगममांहि

गवायुं रे ॥ आ० ॥ ३ ॥ वृहदावश्यकवृत्तिमां । हरिभद्रसूरिवोले रे, तिमचूर्णिलघुवृत्तिमां, योगशास्त्रमे खोलेरे ॥ आ० ॥ ४ ॥ नवपद प्रकरणवृत्तिमां दिनकृत्य देवेंद्रसूरिरे ॥ विधिप्रपा पंचाशक वलि। इम अधिकार छे भूरिरे ॥आ० ॥५॥ सामायक पहिलां कह्यो। पाछल इरियानो पाठरे ॥ जाणे पण मानेनहिं । एहकर्मनो ठाठ रे॥ आ० ॥६॥ विधिथी सामायिक करो। जिमपामो भ-

वपारोरे ॥ अविधिथीकिरियाकरि । नवि छुटेभवनोलारोरे ॥ आ० ॥७॥

ढालबीजी ॥ यतनी ॥

परवतिथिये पोषध करिये । शुद्ध आगमने अनुसरिये । वलिआठकर्म नेहरिये । सलूणा भाव भले आराधो एतो आराधि सिवसुख साधो । सलुणा आठम तिथी आराधो॥१॥ आठम दोय चउदस कहिये । अमावस पूनिम लहिये । एह छ तिथी चारित्र वहिये ॥स०॥भा०॥२॥ वली कल्या-

णरु तिथीजाणो। पजुषणमनमांआ
णो। इत्यादिक पर्वपछाणो ॥स०॥
भा०॥३॥त्रीजे अंगे पांचमे अंगे। उपा
शकदशासुखसंगे। आवश्यकटीका
उमंगे ॥स०॥भा०॥४॥ इत्यादिकआ
गमसाखे। परवतिथिये पोषधभाखे।
विधियुतकरताफलचाखे ॥स०॥भा०
॥ ५ ॥ जे नित्यपोषधनेताणे। आ-
गमविधिते नविजाणे। हरिभद्रवचन
परमाणे ॥स०॥ भा०॥६॥
॥ ढाल तीजी जइने कहेजो मारा

बालाजीरे ए देशी ॥

आठमपरव तिथि कही । मारा वालाजी रे । आराधोगुणगेह । जग गुरुवंदिये । मारा वालाजी रे । एहति- थी कल्याणकघणा । मारावालाजीरे । त्रिहुं कालनागिणोतेह । जगगुरुवं० मारावालाजी रे ॥१॥ आचारङ्गमांभा खिया ॥मा०॥ वा०॥ भावनाअध्य यनसार ॥ज०॥मां०॥ ठाणांग ठाणे पांचमे ॥मा०॥ वा०॥ कल्पसूत्र म- नुहार ॥ज०॥ २॥ आगमप्रकरण

चरित्रघणा॥मा०॥वा०॥एमा प्रकट पणे तू जोय ॥ज०॥वं०॥ षट्कल्या णकवीरना॥मा०॥वा०॥ आगम मांहे होय ॥ज०॥वं०॥३॥ पजूसणकल्पे कह्यो ॥मा०॥वा०॥ पचासदिवसप्र माण। तेहनविमाने मानथी ॥मा०॥ वा०॥ जिन आज्ञासुख खाण ॥ज०॥ वं०॥४॥ इम अनेककल्पना करि ॥मा०॥वा०॥ मनमांन्योमांने कोय ॥ज०॥वं॥ तुजआगम मुजमनवस्यो ॥मा०॥वा०॥ एहिज भवभव होय०

॥ज०वं०॥५॥ विसंवाद घणोपड्यो ॥
मा०॥वा०॥तेहने कहियेजाय ॥ज०
॥वं॥अतिशयज्ञानोतणोपड्यो ॥मा०
॥वा०॥ विरह ते केम खमाय ॥ज०॥
वं०॥६॥ दूषम कालमां ऊपनो॥ मा०
॥वा०॥ दक्षिणभरतमझार ॥ज०॥
वा०॥ प्रभुनोसरणो मे ग्रह्यो ॥मा ॥
वा०॥ प्रभु छो प्राण आधार ॥ज०॥
वं०७॥ तारक तारो तातजी ॥मा०
॥वा०॥ हुं छूं सेवक तुज्झ ॥ ज० ॥
वं०॥ अपराधिघणा तारिया॥मा०॥

॥ वा० ॥ केमविसारसोमुज्ज॥ ज०॥ वं० ॥८॥ कलस ॥ श्रीवीरजिनवर भविकसुखकर मातत्रिशला नन्दनो। मैंथुएयो आगम भक्तिसंयुक्त दुरितकर्म निकंदनो। शुभवरसउगणोसे चमोत्तर भाद्रवसुदिआठमसमें,जिन कृपाचन्द्रसूरि स्तवनकीधोअनुभव ज्ञानप्रकाशमे ॥ ६ ॥ इति अष्टमी वृद्धस्तवन संपूर्णम् ॥

॥ अथ इग्यारसनो २ ढालनो स्तवन लिख्यते ॥

॥ दुहा ॥ स्वस्ति श्रीमंगलकरण,हरणताप जिणचंद, वीरजिनंद दिनंदसम, प्रणमुंधरिआनंद ॥१॥ गौतमआदि गणधरा, श्रुतकेवल सुविहाण, त्रिकरणयोगेवंदता, पामेकोडकल्याण ॥ २ ॥ एकादशी तिथीवर्णवुं, शास्त्रतणे अनुसार, विधिपूर्वक आराधतां, पामे भव नोपार ॥ ३ ॥ (ढाल पहली) पणि

हारीनो ॥ देशी ॥ नेमिजिनेसरउप
दिशै, सुखकारी रे लोय, साभलेक्र
ष्नराजान, वालाछो, द्वारिकानगरी
समवसर्या ॥सु०॥ रेवताचलउद्यान
॥वा०॥४॥ पर्वाराधन फल कह्यो ॥
सु०॥ सांभले परषदावार ॥ वा० ॥
पर्यूषण चउमासा भला ॥सु०॥ न
वपदओलीसार वा० ॥५॥ पञ्चमी
बीज आठम कही ॥ सु० ॥ जिन-
कल्याणक जाण ॥वा०॥ एकादशी
इम जाणियै ॥सु०॥ पर्वाधिकमन-

९ ॥ पाचभरतऐरवतवलि ॥सु०॥पांचकल्याणक जाण ॥वा०॥ दशखेत्रना इमजाणियै ॥सु०॥ पचाश कल्याणक आण ॥वा०॥१०॥ तीनकालगिणता थकां ॥सु०॥दोढसै कल्याणक थाय ॥ वा०॥ तिथीमांहि सिरोमणि । सु०॥ इग्यारस सुखदाय ॥वा० ॥११॥ अनतकल्याणकइण परे ॥सु० ॥ अनन्त चोवीसीजोय ॥वा०॥ मौनकरी आराधिये ॥सु०॥ एहथी सिवसुखहोय वाला०॥१२॥

चोविहार उपवासथी ॥सु०॥पोसहक
रिनेसार ॥वा०॥ सुगुरुचरणसेवाकरी
॥सु०॥ काउसग्गदिलधार ॥ वा०॥
१३॥ मोनकरी मल्लिनाथजो ॥सु०॥
एकदिवस सुखकार ॥वा० ॥ मौन-
प्रथा इणपरिथई ॥सु०॥ लह्यो केवल
श्रीकार ॥वा० ॥१४॥ (ढाल बीजी)
माता त्रिशला भुलावे पुत्रपालणे ।
एदेशी। सुखकर देवनिरञ्जन नेम
जिनेंद इमउपदिसै ॥ एआंकडी ॥
भविजन भावधरिने सांभले श्रीजि

नवाण, अमीरसवयणे श्रवणअञ्ज
लीभर पीवतां, एतो जायैभवभव
निर्मितकर्मनिवाण ॥सु०॥ १५॥ भ
वियण अङ्गइग्यारआराधवा, तप-
विधिएकही जेहथीपामे अनुपम,
महिमाअतुलअपार, वरसइग्यार-
नें मासएकादश तपकरो, सपूरण
तप हुआं होवे मंगलकार॥सु०॥१६
भ० अङ्गअग्यारे लिखावेसुवरण
अत्तरे, पुस्तक पूठा टवणी नवकर
वाली सार, कवलीभिलमिल पा-

टीनेवली पाटली, वीटणामखमल
रेसमबरतणा मनुहार ॥सु. १७॥भ०
डोरालेखण झाबी बासकुंपावलि
कोथली, वटवो मिजासणाने चन्द
रवा अधिकार,पूठीया चौपड़ रुमाल
नाना भांतिना,पाटापाटलाने त्रिगड़ो
रचे सुखकार ॥सु०१८॥ भ० केसर
सूखड ग्वसकूंचीने वाटको, प्यालाने
कलसा अंगलूहणादिलधार, चाम-
र छत्र त्रयने आभूषणरत्नेजड्या,
रचियै वासखेपादि पूजाविविध

प्रकार ॥सु०॥१६॥भ० देवपूजा तिम गुरुपूजाविधि आदरो, करियै साहमीवछल धरियै भावविसाल, रात्रि जागो करि जिनगुणगावो प्रीतसुं, अधिको धनखरचीने लहिये रंगरसाल ॥ सु० ॥ २० ॥ भ० इग्यारसनो तपसेवो भलेभावसुं, सुव्रतसेठे पौषधथी चितलाय, चोर अग्नि ना उपद्रवथी ते ऊगर्यो, एतिथी सेव्यां सिवमारगमां सुखेजवाय ॥ सु० ॥ २१ ॥ कलश ॥ इमनेमि-

पसाय । रोहिणीतपविधीवर्णवुं, शास्त्रथकीचितलाय ॥ १ ॥ कल्याणक ओली भली, पंचम्यादि तप जाण । इम बहुविधि तप वर्णव्यो, तिम रोहिणी मनआण ॥ २ ॥ हांरे मारा ठामधर्मनासाढा पचवीसदेशजो ॥ एदेशी ॥ हांरे म्हारे जंबू द्वीपमां भरतक्षेत्रमनुहारजो, अंगदेशनगीनोसोहे अतिभलोरेलोय ॥ हा० ॥ चंपानामें संदर नवलीनयरीजो, वासुपुज्य-

बोले, बालक किम नीचे होले, राजा मनमां दुख मोले, रोवे अतिचिंता छोले ॥ सलूणी बो० ॥ १४ ॥ पडतो सुत सासणदेवे, सुकोमल हाथे लेवे, सिंहासनऊपरसेवे, नाटक करि लूंछनालेवे, सलूणी बो० ॥ १५ ॥ ए अचरिज सहुजन निरखे, राजाराणी मनहरखे, विस्मयलहि नरपति सरखे; सुत पूरवपुण्यने परखे, सलूणी बो० ॥ १६ ॥ राजा इण परि विचारे, कोई ज्ञानी

गुरुपाउधारे, तो एहसंदेहनिवारे,
जिन कृपाचन्द्रसूरि सुखसारे॥१७॥

॥ ढाल तीजी ॥

रंग रसिया रँगरसवन्यो मन
मोहन जी। ए देशी। इकदिन
ज्ञानि पधारिया, सुनो सुगुणाजी,
वासुपूज्यस्वामीने अणगार, गच्छ-
पति आव्यारे सुणोसुगुणाजी,
रूपकुंभ स्वर्णकुंभजी, सु० चउना-
णी करे उपगार, गच्छ० ॥ १८ ॥
राजादिक वंदन गया, सु० देशना

दीधी उदार, ग० करजोडीराजा भणे, सु० रोहिणीनोअधिकार, ग० सु० ॥ १६ ॥ मुझ मन अचरज अतिघणो सु० कृपाकरी कहो सुविचार गच्छ०सु० पूरव भव मुनि वर कह्यो, सु०तेह सुणयो दिलधार, गच्छ० सु० ॥ २० ॥ जंबुदीपना भरतमां,सु० सिद्धपुरनगरकहवाय, ग० सु० पुहवीपाल राजा तिहां सु० सिद्धमती राणी सुहाय, ग० सु० ॥२१॥ इकदिन क्रीडा कारणे, सु०

चन्द्र उद्यानमें जाय, ग०सु० क्रीडा करता पधारिया, सु० गुणसागर मुनि महाराय, ग० सु० ॥ २२ ॥ मुनिने बांदी राजा कहे, सु० राणी मुनिने देवो दान, ग० सु० विष-यनी अन्तराय मानती, सु० कडवी तुंवी देइ कीधो हेरान, ग०, सु० ॥ २३ ॥ काल धर्म पाम्यो मुनिवर सु० राणीने काढ़ी राय ॥ग० सु०॥ सातमेदिन कोढ़ऊपनो, मरी छठी नरकते जाय, ग० सु० ॥ २४ ॥

स० ॥ गुरु कहे रोहिणी तप करोरे, सातवरस सात मास, स० ॥ ३० ॥ रोहिणी नक्षत्रने दिनेरे, चोविहारउपवास, स० ॥ अठपोहरी पोषध करोरे, वासुपूज्यपूजो खास, स० ॥३१॥ इमरोहिणी तप आदरीरे, सेविविधियुतसार, स० ए ताहरी राणी थइरे, रोहिणी नामे नार, स० ॥३२॥ पूर्वभव रोहिणी तणोरे, हरखित थया सूणितेह, स०॥ जिनकृपाचन्द्रसूरि सेवजोरे,

धम धरि ससनेह, स० ॥ ३३ ॥

॥ ढाल पांचमी ॥

जइने कहजो म्हारा वालाजी रे ए देशी । राजा कहे मुनिराजने मारा वालाजीरे रोहिणी तपविधि सार, गुणनिधि वंदिये, मा० तव मुनिवर तप विधि कहे, मा० चित्र-सेनने रोहिणी नार, बिहु तप विधि सुणे, मा० ॥ ३४ ॥ चन्द्ररोहिणी दिन तप करो, मा० बारमाजिन-वर सेव, करिये भावसुं, मा० गुण

नो करो गुरुमुखसुणी, मा०पांच
सक्रस्तव देव, त्रिहुं काल वांदिये,
मा० ॥३५॥ देवजुहारो देहरे,मा०
प्रभुआगल वृक्षअशोक, करिये
भावशुं मा० नैवद्य नाना भांतिना,
मा० प्रभुसन्मुख ढोवे थोक, चढते
भावशुं, मा० ॥३६॥ केशर चंन्दन
मृग मदा, मा० पूजो प्रभु उच्छरं-
ग नाना भांतशुं, मा० आठ मगल
प्रभु आगलें, मा० रचियेंतन्दुल
उज्जलचङ्ग. दुरित निवारणो॥मा०

॥३७॥ पुस्तक पूजो भावशुं, मा०
साधु सेवा करो सार, भवसागर-
तरो, मा० देवोदानसुपात्र ने,
मा० साहमी वत्सल अधिकार, करे
मन रंगशुं ॥मा०॥३८॥ उज्जवणो
कीजै भलो, मा० ज्ञानादि उपगरण
करे सार, नानाभांतिना, मा० स-
त्तावीस संख्या कही मा० अथवा
शक्ति तणे अनुसार, धनखरचे
घणो मा० ॥ ३९ ॥ ब्रह्मचर्यपालो
मुदा मा० उत्सवविविधप्रकार,

करिये उमङ्गसुं मा० शासणसोभ-
वधारिने मा० रथयात्रा सुखकार,
चउविध संघमिली मा० ॥४०॥
इणपर रोहिणीविधिकही मा०
राजा राणी तीर्थंकर पास, विधिसुं
तपग्रहे मा० श्रीजिनकृपाचन्द्रसूरि
भणे मा० भव भव धर्म सेवोभवि०
लास, सर्वसुखसंपजे मा० ॥ ४१ ॥

॥ ढाल छठी कलस ॥

राग धन्यासरि ।

रोहिणी तप सेविने राजादिक,

रे एदेशी चिंतामणी वीनती अवधारोरे, सेवकना वांछितसारो, चिं॰प्रभुनामसुणीने आयोरे, मुज॰ मनमां हरखसवायौरे, दरसण देखी सुख पायो ॥ चि॰ ॥ १ ॥ प्रभु छो त्रिभुवनना स्वामीरे, मुज आतमनाविसरामारे,तुमसेवापुन्ये पामी ॥ चि॰ ॥ २ ॥ पूरव सुकृत मुज फलियारे, भवभंजन प्रभुजी मलियारे, दु खदोहगसगलाट लिया ॥ चिं॰ ॥ ३ ॥ घणी विपम

उलंघी वाटरे, पर्वतनदीयानाथाटरे, भेटचा संघसहित गहगाट ॥ चिं० ॥ ४ ॥ कच्छ मांडवीनगरसुहावेरे, नाथोवजपालकहावैरे, जिण जात्रा करावी भावै ॥चिं०॥५॥ उगणीसै पांसठवरसैरे, सुदिमाघमासमन हरखेरे, चोथदिवसचरण प्रभु फ-रसै ॥ चिं० ॥ ६ ॥ प्रभुमुख पूनिमनो चंदरे, दीठा मुज आनन्द अमंदरे, नितप्रतिप्रणमें कृपाचंद्र ॥ चिं० ॥ ७ ॥

॥ इति श्रीचिंतामणीपासजी स्तवनं संपूर्णम् ॥

॥ अथ श्रीमहावीर जिनेश्वर स्तवनं ॥

हारेम्हारे वीरजिणंदसुं लागो नवलो नेहजो । प्रीतडलीवंधाणीरे अमीरस लोयणेरे लोय ॥ आंकड़ी हांरेमारे प्रभुजीनो मुखड़ो सोहे सारदचंदजो । मुजमनडो लोभाणो चकोर जिम जोयणेरे लोय ॥ १ ॥ हारेम्हारे त्रिभुवन नायकलायक श्री भगवंतजो, त्रिसलानंदन वंदन निसुणोवीनतीरेलोय ॥ हारेमारे भवभवभटकत आयो

हुं तुमतीरजो । हिवसेवकने तारो प्रभुकहियैकतिरेलोय ॥ २ ॥ हांरे मारे आगल पिण तुम तार्या जननावृंदजी । अपराधिछतांसा- हिब तेउने उद्धर्यारे लोय॥ हांरे- मारे साहिब सुनिजर करी मुज जाणो खासजो । तुम माटे मैंदेव अवरने परिहर्यारे लोय ॥३॥हांरे- मारे भद्रेसरमां भेटयाश्रीभग- वानजो । देरासर सुखकारो दीठो मनहरू रे लोय ॥ हांरेमारे उगणी

सेवासठे फागुण मासजो । कृपा·
चन्द्र जिनपदकजप्रणम्या सुख
करू रे लोय ॥ ४ ॥

॥ इति श्रीमहावीरजिनेश्वर स्तवन संपूर्णम् ॥

॥ अथ श्रीरिषभजिनेश्वर स्तवनं ॥

रिषभजिन म्हारे तुमसूं प्रीत,
प्रीतचनीबहुरीत ॥रि०॥ आंकड़ी ॥
सुगणसनेही साहिबोजी, शेत्रुंज·
गिरिसिणगार । त्रिणखिणमें
मुजसांभरेजी, सुंदरतुमदीदार ॥
रि०॥ १ ॥ वदनकमल मानु चद·

लोजी, कामरणगारोजोर। नयन तुमारा तोखड़ाजी, चितडोलीनो चोर॥ रि०॥२॥ दीपसिखाजि- मनाशिकाजी अष्टमिशसिसम भाल। गिणतिकहो कुण करी शकेजी तुम गुणगणनी माल ॥रि० ॥३॥ तारक विरुद्द तुमतणोजी, सुणिआयो तुम पास। सुनिरकर संफलोकरोजी, पूरोमनडेरी आस ॥ रि०॥ ४ ॥ यात्राकरोबहु रंग- सुंजी, प्रगट्यो हरख अपार। संघ-

सहित प्रभुभेटियाजी, कृपाचंद्र सुखकार ॥ रि ॥ ५ ॥

॥ इति श्रीरिषभजिनेश्वर स्तवन संपूर्णम् ॥

॥ अथ श्री आदिजिनेश्वर स्तवनं ॥

आदीसर अवधारो अरजी अमतणी हो राजके अरजी अमतणी ॥ ए ॥ आंकड़ी ॥ सुनिजर वर प्रभुसेवाआपो तुमतणी हो राजके, आपो तुमतणी, भवभव भ्रमण करता विपतसही घणी हो राजके, विपत सही घणी, सुगु-

रुपसाये प्रभु मिलिया अमनेधणी
हो राजके,अमनेधणी । ॥ १ ॥
रागद्वेष दोयशत्रु मुजकेडे पडया
हो राजके, केडे पडया, मोहभूपनी
प्रवलआाणा लेइ नड्या हो राजके,
आणालेइ नड्या, प्रभुजीनो सुपसा-
यपामीने आथड्या हो राजके,
पामीने आथड्या,आतमगुणनी
पुष्टीना कारणअड्या हो राजके,
कारण अड्या ॥ २ ॥ दीठो तुम-
दीदारसफलदिनमाहरो, होराजके,

दिन माहरो, पूरव पुन्य प्रसादे
ए जाएयो खरो हो राजके, ए
जाएयो खरो, देवल बहुला जगमें
दीठादेवता हो राजके, दीठा
देवता, तुमसम अवर न नीरख्यो
जगमा सेवतां हो राजके, जगमां
सेवता ॥ ३ ॥ शेत्रुजमंडन श्री-
जगदीश्वर भेटीया हो राजके,
जगदीश्वरभेटीया, पूरवसंचित
पापकरम सहुमेटिया, हो राजके,
सहु मेटिया, संघसहित प्रभु-

यात्रा अति रंगे करी, हो राजके,
अति रंगे करी,नाथाव्रजपाल लाभ
लीधो आनंद भरी हो राजके,ली-
धो आनंद भरी ॥४॥ परमकृपाल
कृपानिधिविरुधधरोसदाहो राजके,
बिरुध-धरो सदा, तोतारो जगन्नाथ
घणु कहीएकदाहो राजके, कहिए-
कदा, शुभउ गणीसे पांसठ फागुण
मासमें हो राजके, फागुणमासमें,
कृपाचंद्र शुदि आठम भेट्या प्रहसमे
हो रा जके, भेट्या प्रहसमे ॥ ५ ॥

॥ इति श्री आदिजिनेश्वर स्तवन संपूर्णम् ॥

॥ देशी भरतरीनो ॥

धर्मजिनेसर जगणी त्रिभुवन पति मनुहारजी, भव्य हृदयकज-दिनमणी, सुव्रना मात मल्हारजी धर्म० ॥ १ ॥ भानुकुलनभचंद्रमा, सुरतरु समजिनराजजी, करुणाकर सहुजीवना सारेवंछितकाजजी ध० ॥ २ ॥ भव अटवीभमता थकां, मिलियो नहीं कोईमायजी, अ-नंतकाल संसारमा, नेथी नभडरो

नाथजी ध० ॥ ३ ॥ हिवमुजनेप्रभु
जी मलया, पूरवपून्यप्रमाणजी,
मननामनोरथसहुफलया, साहिब
चतुरसुजाणजी ध० ॥४॥ भगवति
अंगभविकजना, निसुणयोभावबि-
शालजी, उपधानतपपूरणथयो,
पहरिमालरसालजी ध० ॥ ५ ॥
समवसरण रचनारची, भविमन
हरख अपारजी, जामनगरजुगते
वणयो, उछवविविधप्रकारजी ध०
॥६॥उगणीसैसडसठसमे,माघमास

सुविचारजी, सुदिपांचम जिनसे-
वना,कृपाचंद्र सुखकारजी ध०॥७॥
इति पदम् ।

धर्मजिनवर उपगारी, चाहुसे-
वातुमारी ए. आंकणी धर्म जिनेसर
जग अलवेसर, महिमा सुनके ति-
हारी, आसविलुधोढग्गसरसकुं,
आयो हूं निरधारी धम० ॥ १ ॥
अवर देव दीठा वहु जगमें, ते सव
हे मविकारी देवनिरंजन नाथ नि-

हार्यो, त्रिभुवनमें अविकारी ध०
॥ २ ॥ तीनलोकमें देवनगीनो,
बीजो नहीं अधिकारी, करुणानिधि
करुणाकरी साहिब, द्योनिजगुण
निरधारी ध० ॥ ३ ॥ रागद्वेष मुज
केडे पडिया। देत महादुखभारी,
वीतराग प्रभु नामधरावो, तातें
करिये पुकारी ध० ॥४॥ सुखसं-
पतिकारक भववारक, सेवकजननि
सतारी, समवसरणमे चौसुखजि-
नवर, कृपाचंद्र सुखकारी ध०॥५॥

इति पदम् ।

"भवियां भावधरोने भेटो भगवाननेरे, प्रभुजी तारे सारे वंछित देव, रसीया धर्मजिनेसर गुण गावो रंगसुरे, एनी सुरनरपति करे सेव भ० ॥ १ ॥ पनरम जिनवर सेवियं, धर्मधुरन्धरस्वाम, धर्मनाथ जिनराजजी, पुरे वंछित काम, गोडीपारसनाथप्रणमो .सोहामणारे एतो बीजी भूमीत्रिव

विशेष भ० ॥ २ ॥ नेमजिनेसर वालहो ब्रह्मचारि सिरदार, श्याम वरण छवि सुंदरू, भविजनने सुखकार, प्रभुनोपरचोचिहुंदिशि परगडोरे वलि बारमावासुपूज जाण भ० ॥ ३ ॥ शांतिजीनेसर सोलमां, शांतितणा करनार, नेमनाथचवरीभली, संभवचोमुख सार,एतोदेरासरदीठादोय सोहामणारे, दीपे बावनदेहरी विशाल भ० ॥ ४ ॥ बारमजीनवर

सेविये, वासुपूजमहाराज, वीजो देहरो शांतिनाथनो, मानु नवीन रच्यो-आज आदोसरनोदीगे अ-दभुतदेहरोरे, वलि चद्राप्रभु चेत्य नवीन ॥ भ० ॥ ५ ॥ अजितजिनंद जुहारिये, अलियविघनसहुजाय, मुनिसुव्रतजिन वीसमा, दादा देहरी कहाय । वटेमाहि प्रथम जिन भेटियारे, एतो चेत्यप्रवाडी उछरग ॥ भ० ॥६॥ समवमरणमें शोभता, चोमुख श्रीजिनचंद, भविजननाम-

नमोहता, सेवेसुरनर इंद, जामन-
गरमां उच्छवरंगवधामणारे, हरखे-
मलिने नरनारिगुणगाय ॥ भ० ॥७॥
भगवती भावैसांभली उपधान
वह्यरे चितचंग, कस्तुर परमुख
भविकजन, पहरिमालमन रंग।
देशविदेशना आवे वहुजातरीरे,
वरत्यो कृपाचन्द आनद जय जय
कार भ० ॥ ८ ॥ इति पदम्।

राग काफी।

श्रीमगसी पार्श्वसुखकारं, भविहृदि कमल

बोधन दिनकार, श्रीम० ॥ मालव मण्डल शोभ वधार, प्रभुदरसण वरसे जल धार ॥ श्रीम० ॥ १ ॥ नीलवरण गुणधु निमतुहार, कर्मकलूपमल दूरनिवार, ध्याता जनमन गेह मझार, बोधबीजगुणमणिदातार, श्रीम० ॥ २ ॥ कमठ महाशठ मान निवार, उरगानुकंपाकरिसुविचार, वामवसेवित क्रम युगसार, पद्मावती करे नृत्य उदार श्रीम० ॥ ३ ॥ तू परमेश्वर परमाधार, परम ज्योति चिद्रूप अविकार, सुरगुरु रसना सहस्त्र करेवार, तोहि न आवे तुजगुण पार श्रीम० ॥ ४ ॥ धन्य दिवस आज हरख अपार पुण्य प्रवर प्रभु दीठो दिदार, जिनवचनामृत श्रुति सुसार, हराचन्द्र पदपङ्कज मधुकार, श्रीम० ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥

राग खंमाच ।

आदिजिनंदा मुख अनुपम चंदा, मोंह्या सहु सुरनर मुनि इंदा. आदि० नित्योदय एहनो यथा छंदा, मोहांधकारकुं दूरकरिंदा, आदि० ॥ १ ॥ एहने राहु ग्रहै नही मंदा, आच्छादन न करे वारिंदा. आ० ॥ २ ॥ अद्भुत एहनो कांति सोहिंदा,एह अपूर्व शसांक कहिंदा,, आ० ॥३॥ अनुभव अमृत वरसत चंदा, भविक कुमुद मिल पान करिंदा, आ० ॥ ४ ॥ हरख अधिक आज उदयो दिणंदा, कृपाचंद प्रभु चरणुं दावंदा ॥ आदि० ॥ ५ ॥ इति पदम् ॥

॥ श्रीसिद्धाचलजीका स्तवन ॥

जात्रीडा भाई आवूजीनी जात्रा करेजो—ए

देशी। यात्रिडाभाइ श्रीसिद्धाचल भेटो विरस चित-
दुरुन्त भेटोरे, यात्रीडाभाई श्रीसिद्धाचल भेटो ॥
ए आँकडी ॥ ए महिमावत विराजे, निरखता
पातिक भाजेरे ॥ या०॥१॥ श्रीगौरजिनेश्वर भाखे,
शत्रु जयनी महिमादाखेरे ॥या० ॥ २ ॥ पुंडरीक
गणधारी, इहा सिद्धाकर्म गणधारीरे ॥ या० ॥३॥
पाडवप्रमुख जे सिद्धा,एगिरिफरमीसुख लीधारे ॥
या० ॥ ४ ॥ श्रीऋषभजिनेश्वर वदो, चितथरी
अति अधिक आनदोरे ॥ या० ॥ ५ ॥ रायणतल
पगलागाऊ, प्रभुनदी वच्छित साधरे ॥ या० ॥६॥
पुंडरीक अनिर्दोषे,निरखता पातिकजीपेरे ।।या०॥
७॥ चोमुखजिनवरसोहे, देखता भवि मन
मोहेरे ॥ या० ॥८॥ अन्मुतविथछवि छाजे, भेटैं
भवि शिवसुख काजेरे ॥ या० ॥ ६ ॥ पाजेचढता

भावे, गुण गातां वंछित पावैरे ॥ या० ॥ १० ॥ सेत्रु ंजयनदी अतिरुडी, एहनी महिमा नही कूडोरे ॥ या० ॥११॥ उलकाजोल चेलणातलाइ, सिद्धवड सिद्धशिलावरदाइरे ॥ या० ॥ १२ ॥ ए गिरिवर-पूजै भावै, जे नरक नीगोद न जावैरे ॥या०॥१३॥ दरसणरी आस घणेरी, ते सफली सुकृतसेरीरे ॥ या० ॥ १४ ॥ अनुभवअमृतपीजै, कृपाचंद सदा-मुजरीजैरे ॥ या० ॥ १५ ॥

॥ इति श्रीसिद्धाचल-स्तवन सम्पूर्णम् ॥

॥ श्रीराणपुरजीका स्तवन ॥

॥ राग कालंगडो ॥

राँणपुरै जिन वंदोरे भवियां ॥ रा० ॥ वंदत दुरितनिकंदोरे भविया ॥ रा० ॥ प्रथमजिनेसर

प्रथमतीर्थंकर, प्रथमयति जगचंदो ॥ प्रथम भिक्षाचार प्रथम नरेसर, ए जिन सुरतरुकंदोरे ॥ भ० रा० ॥ १ ॥ चोविसमंडप चिहुंदिशिसोहे, निरख्या परमआनंदो ॥ आदीश्वरजिन चौमुख-राजे, जगतारण जिनचंदोरे ॥ भ० रा० ॥ २ ॥ चोरासीप्रासादविराजे, जगतदिवाकर वंदो ॥ पाँचप्रासाद छबि सुंदरछाजे, प्रभुवंदी चिर-नंदोरे ॥ भ० रा० ॥ ३ ॥ भुयरामांहि बिंब मनो हर, वंदे सुरनरइंदो ॥ भविउरकमलविरोधन कारण, जिनपति प्रगट दिनंदोरे ॥ भ० रा० ॥ ४ ॥ इंदोरमधसहित प्रभुमेटे, काटण भवदुःख फंदो ॥ रुपचंद मुज दरसणदीजे, अनुभवर-सनो घु दोरे ॥ भ० रा० ॥ ५ ॥

॥ इति श्रीराणपुर स्तवनं संपूर्णम् ॥

॥ श्रीआबुजीका स्तवन ॥

श्रीआदिजिनेश्वर भेटीया, आबूगिरिसिणगार हो ॥ मरुदेवीना नंदन तुम दरसण मुज मन वस्यो, जिममन मंद चकोर हो ॥ म० तु० ॥ जिमदेखी जलधारने, मोरकरे झंकार हो । म० तु० ॥ १ ॥ कुमुदनी रजनीकरलही, कमळनी जेम दिनंद हो ॥ म०॥ सायर जिमवधे चंद्रथी, तिम मुज मन आनंद हो ॥ म०तु०२॥ नेमिसर जिनराजजी, शांतिसुधा-रसचंद । हो० पारस जिनपति सुखकरु, वंद्या कुशलमुनींद हो । म०तु०॥३॥ अचलगढै अति दीपता, सुवरणमयजिनदेव हो ॥ म० ॥ चउगइ संकट चूरवा, सुरनर करे जसु सेव हो ॥ म० तु०॥४॥ भवोदधि भ्रमणनी वातडी, केहने कहियै जाय हो । म० । रागादिक-रिपुगणभणी, दूरकरो

जिनराय हो ॥ म० तु० ॥ ५ ॥ आस हती घणा दिवसनी, सफल थइ ते आज हो । म० । जनम कृतारथ माहरो, सीधा वछित काज हो ॥ म०तु० ॥६॥ तु परमेश्वर वाल हो, जीवनप्राणआधार हो । म० । भवभवचरणनी चाकरी, मुजने देज्यो हितकार हो ॥ म०तु० ॥७॥ उगणीसे अठावनस- में सुदि फागण रविवार हो । म० । सातम दिने यात्रा करी, रूपचंद सुखकार हो । म० तु० ॥८॥

॥ इति श्रीआबुनी स्तवनं सपूर्णम् ॥

शत्रुंजय पुंडरीकगणधरका स्तवन

श्रीपुडरीक गणधर नमु, पुडरगिरि सिणगार लालरे । पाचकोडमुनि परिवर्या, कीधो अणसणसार लालरे ॥ पुड० ॥ १ ॥ आदिसरजिन उपदिसे, पतीव्यपरमाद ला०

शिवकमला तुमे पामस्यो, मेटी सहु विषवाद ला० ॥ पुंड० ॥२॥ तीरथपतीमां हुं अछुं, प्रथम तीरथ इमजाण ला० प्रथमसिद्ध सिद्धाचले, तुमे थास्यो महिराण ला० ॥पुंड० ॥३॥ प्रभुनी आणा आदरी,संलेखना चित्तलाय ला० चैत्रीदिन शिवपुर लह्या, घातीकर्म खपाय ला० ॥ पुंड ॥ ४ ॥ यात्रा विधिसु' कीजीये, जिनजी दियो उपदेश ला० कृपाचन्द गिरिराजनी, चाहे सेवा हमेश, ला० ॥ पूंड ॥ ५ ॥

॥ तारंगे श्रीअजितजिन-स्तवन ॥

राग सोरठ

अजितजिन साहेबाजी प्यारा लागो राज म्हांने ॥ प्या० ॥ अ० ॥ जितशत्रु विजया

फे न्दन, तुम प्रभु गरीबनिवाज ॥ अ ॥१॥ तु अविनाशी ज्ञानप्रकाशो, शिवपुर कीनो वास। हु भवनसीयो तुमगुणरसीयो, आयो तुम धरि आस ॥अ० ॥२॥ महा गोप महा महाण तुमही, भव अटवो सथवाह। भवजलधि निर्यामक तुमही, निजगुण करे उछाह ॥ अ० ॥३॥ तु जगतारण वञ्छितसारण, तुम हो दिन दयाल। तु परमेश्वर, छ परउपगारी, सेवकजन प्रतिपाल ॥ अ०॥४॥ तारंगे श्रीअजितजिनेसर, सरस्वफु टमनुहार। नहो ममेन अणगस यदे, रुपचद सुख कार ॥ अ० ॥ ५ ॥

॥ श्रीवरकाणा पार्श्वजिन-स्तवन ॥

राग घाटो

परमारथिमनरङ्के. वंदु पार्श्व जिनंद ॥

पार्श्वजिन लागो प्यारा, तुजगुण अनंत अपार ॥ पार्श्व० ॥ १ ॥ मूरती मोहनीलागे, जागे पूरवप्रीत ॥ पार्श्व० ॥ २ ॥ जिनराज तुम उपगारी, तुम दीठा आनंद ॥ पार्श्व० ॥३॥ वसु विध जिन पुजन करीए, वरीए शिवसुखसार ॥ पार्श्व ॥४॥ वरकाणे पार्श्वजिन भेट्या, मेट्या सहु दुःख दंद ॥ पार्श्व ॥ ५ ॥ वामा उदर दरि हरिवर, अश्वसेन कुलचंद ॥ पार्श्व [illegible] हमे[illegible]न्य दिनआज हमारो, वंदे नितकृपाचंद ॥ [illegible] ॥

॥ श्रीनेमिनाथजीका स्त[illegible]

राग काफी

आज धन्य दिवस हमारा, भेट्या श्री नेमिजिनंद ॥ आ ॥ १ ॥ गिरनारगिरिवर मंडणस्वामी, यादवकुल नभचंद ॥ आ० ॥ २ ॥ श्यामवरण

छबी सुंदर सोहे, मोहे सुरनर इंद ॥ आ० ॥३॥ मोहतिमिरभर दूरनिवारण, अभिनव प्रगट दिणंद ॥ आ०॥४॥ जगजन तारण बिरुद सुणीने, आयो धरी आनंद ॥ आ० ॥ निज गुण अनुभव अमृत दीजे, रुपचंद सुखकंद ॥ आ० ॥६॥

॥ श्रीआदिजिन-स्तवनं ॥

आदि जिनेसर भेटीया सुखकारी लो, उपगारीरे लो, शेत्रुंजगिरि सिणगार वाला छो, नाभिभूप नंदन विभु ॥सु०॥ मरुदेवी मात मलार ॥ वा० ॥ १ ॥ कंचनवरण सोहामणो, सु० धनुष पांचसे काय वा० चउरासी पुरव लाख आउखो, सु० ॥ २ ॥ वृषभलांछन मनभाय, वा० जुगलाधर्म निवारणो सु० जगननीति पर ताय वा० भरतादिक निजसुत भणी सु० राज्य

दीयो भोलाय वा० ॥ ३ ॥ अनुक्रमे दीक्षा आदरी सु० च्यारसहस परिवार वा० प्रथमपारणो हथणा पुरे सु० पडिलाभे श्रेयांसकुमार वा० ई ४ ॥ पुरीमताल उद्यानमे सु० ऊपनो केवलज्ञान वा० मरुदेवी शिव थानक लह्यो सु० वंदे भरत राजान वा० ॥ ५ ॥ भुमंडल प्रभू विचरता सु० आया सोरठदेश वा० ज्यां सिद्धाचल गिरिवर सु० सुरनरसेवे हमेश वा ॥६॥ प्रभुजी आय समोसर्या सु० गणधर मुनिपरिवार वा० समवसरण सुरवर रच्यो सु० देशना दिधि उदार वा० ॥ ७ ॥ तरिथ महिमा दाखवी सु० उत्तम तीरथ एह वा० रायणतल पगला ठवी सु० वंदे धन्य नर तेह वा० ॥ ८ ॥ फागणसुदी आठम दीने सु० पुर्वनवाणु वार वा० यात्राफल जिनजी

कह्यो सु० जगत जतु सुपकार वा० ॥ ६ ॥ चौविह सघसु परिवर्या सु० प्रभुजी कीध विहार वा० अष्टापद मुगते गया सु० दशसहस्र परिवार वा० ॥ १० ॥ शास्वतो तीरथ ए सही सु० फरस्या पातिक जाय वा० कृपाचद गिरीराजनी सु० सेव्याथी सुख थाय वा० ॥ ११ ॥

इति श्रीसिद्धाचल स्तवनम् सम्पूर्ण ।

।। प्रभासपाटणका स्तवन ।।

राग रेखता

आये प्रभासपाटणमे, चंद्र प्रभुका दरश पाया । नरस्म उगणोसे गुणसठे चरण पक्ज देग सुप पाया ॥ आ० ॥ १ ॥ मागसिर दि दुज के दिन मे, फरसकरकोन सूचोत्साया । गए सब पाप अब मेरे, दरस मे नाथ गुणगाया ॥ आ०॥२॥

संभवजिन राज मनमोहे, पारस छवी स्यामद्यु ति छाया। शांतिप्रभु शांति मुज दीजे, परम शिव मल्लि प्रभु पाया ॥ आ० ॥ ३ ॥ चरमप्रभु वीरजी राजे, आदि जिनराज मन भाया। अजितजिन देख मन हरखे, नेमकी सीसग्रही छाया ॥ ४ ॥ जगतमें देव सब निरखे, मेरे दिल कोई नहि भाया। प्रवल भये पुण्य अब मेरे, जगतगुरु देव मन ध्याया ॥ ५ ॥ अमृतसमयुक्तिजिनवरकी, तहत कर चित्त ठहराया। मुजेहै आस शिव-पुरकी, कृपायुतचंद्र उलसाया ॥ आ० ॥ ६ ॥

इति पदम्

॥ श्रीआदीश्वरजिन-स्तवनं ॥

राग घूमर

आदिजिणंद नितपूजयै, एतो विमला-

चलगिरिरायो ए माय। नाभि रायकुल चडलो, एतो मरुदेवी कुखे जायो ए माय॥ आदि० ॥१॥ नगरी विनितानो धणी, एतो आदीश्वर सुख-कारी ए माय। अष्टापदे मुगते गया, एतो भवि-जन काज सूधारी एमाय आदि ॥२॥ प्रभुदरसण जल धारसे एतो, भवसागर उलमाते ए माय। दरसण विन किरिया सहु एतो, शिव साधन नवि थाये ए माय॥ आदि०॥३॥ सजि सिणगार मनोहर एतो, गोरी मगलगावैहै मा० द्रव्यभाव जिनराजनी एतो, पूजाकरी सुख पावे है मा० आ०॥ ४॥ वसूदिन उछव रगसूएतो दिनदिन सघसवायो एमाय। पचम अग पूरण करी एतो, कृपाचद्र गुण गायो ए माय॥ आदि ॥५।

॥ इति श्रीआदीश्वरजिन स्तवन सपूर्णम्॥

।। श्रीपार्श्वनाथजीका स्तवन ।।

राग-देशी

जीवन म्हारा:तेवीसमा जिणचंद, वामानंदन मेट्यारे सायवा म्हारा भावसु'रे म्हारा राज जीवन० अश्वसेन कुलचंद, पाप करम सहु मेट्यारे, सायवा अनादिनारे म्हा० ॥ १ ॥ जी० मूरत मोहन वेल, नीलवरण तनु छाजैरे सा० सोहामणीरे म्हा० जी० मुख छवि अगम अपार, पूनम निशिजिम राजैरे सा० रजनीकररे-म्हा० ॥२॥ जी० नयन अमीरसरेल, कामणगारा प्यारारे सा० म्हारा, मन हररे म्हा० जी० भाल विशाल रसाल, अष्टमीसशि सुखकारारे सा० भव्यचकोरनेरे म्हा० ॥ ३ ॥ जी० चिंतामणि

प्रभु रास, लाद्रवपुरमें विराजेरे सा० सुख करुरे म्हा० जी० सहसफणा महाराज, दरिसण वांछित काजैरे सा० दु:खहरुरे म्हा० ॥ ४ ॥ जी० संघ मिल्यो बहु थाट हेजेथणे गहगाटेरे सा० हरख-सु रे म्हा० जी०, अष्टदिवस उछरंग, रथयात्रा, बहु रंगेरे सा० उमंगसु रे म्हा० ॥ ५ ॥ जी० दीठो तुम्ह दीदार, हिव प्रभु मुजनें तारोरे सा० हितधरीरे म्हा० जी० तुमसम अवरनदेव, दीठो नहीं सुपरकारोरे सा० जगतमारे म्हा०॥६॥ जी० तुम पदपंकजसेव, भवभव मुजने मिलज्योरे सा० सुहंकरुरे म्हा० जी० एहीजसुणो अरदास वांछित पूरणकरज्योरे मा० कृपाकरीरे म्हा० ॥ ७ ॥ जी० ॥

इतिश्री पार्श्वजिन स्तव सम्पूर्णम्।

॥ श्रीमहावीरजिन=स्तवनं ॥

राग माड

महावीर जिनराज आज भविभेटोतो सही, भेटोतो सहीरे भविक जन भेटोतो सही, भवभव संचित पाप करम सहु मेटोतो सही ॥ महा० ॥१॥ ए आं० ॥ भद्रसरमे मोहनी मूरति, देखत सुमति लही.आतम वस्तु स्वभाव प्रकाशक दिनकर सोभग्रही ॥ म०॥२॥ काल अनादि पूदगल संगे परपरणतिमां रही, प्रभु आलंबन पून्ये पामी निजगुण ज्ञानग्रही ॥ महा० ॥ ३ ॥ पूरव पुन्य उदय भयो सजनी सुद्धानंद मही, शुद्धातम-अनुभवअस्वादी कृपायुतचंद्रग्रही, महा० ॥४॥

इति श्रीमहावीर जिन-स्तवनं संपूर्णम्

॥ श्रीभद्रेश्वरजीका स्तवन ॥

राग काफी

आज प्रभु दरिसण पायो, मुजमन हरखायो, भद्रेसर पुरमण्डण स्वामी, चौवीसम जिनरायो मनमोहनजिनमुद्रा निरखत, दरसणसुख पायो ॥आ०॥१॥ तारणतरण बिरुद तुज सांभली हुं तुम चरणे आयो, सुनिजरधर ए सफल करीजे, ज्युं मुज हरखसवायो, ॥ आ० ॥२॥ मैं भवचारी तु शिवचारी, देव निरंजन ध्यायो, भवभव भ्रमणथकी हुं हार्यो, तिणतोरे सरणे आयो ॥ आ०॥३॥ जिनप्रतिमा जिनवर सममाणो, ए जिन वचन सुहायो, जैनसागर बहुरण परे बोले, तासे चित उमगायो ॥ आ० ॥४॥ कल्याण

निधि भुशुभवरसे फाल्गुनशुदि मनभायो, द्वितीया जिनपद पंकजमेटै कृपाचंद्र गुणगायो, ॥आ०॥५॥

इति सम्पूर्णम्

॥ भोयणीजि तीर्थका स्तवन ॥

॥ राग सोरठ ॥

दीठा भोयणी गाम मझारा ए तो मल्लिजिनंद मनुहारा ॥ दी० ॥ मुक्ताफल सम द्युति प्रभुजीकी मुरति मोहन गारारे ॥ दी० ॥१॥ चरण कमल कंचन कच्छपसम मानुं जगदाधारा जानुअनोपम जिनना निरखो मोहराज गयो हारारे ॥ दी० ॥२॥ कर सरोरुह अद्भुत जाणी पंकज जलधि मझारा कटी सुरंगि जिननी प्रेखी केसरी अरण्य विहारारे ॥ दी०

॥ ३ ॥ प्रभु वक्षस्थल धीरजथी लजि मेरु अचला धारा जिन गंभीरता जाणी चर्म दधि लोकातकीन विहारारे ॥ दी० ॥ ४ ॥ निरलाछन प्रभु मुख जोइने, शशाधर नित्य विहारा नासिका दीपशीखासम जाणी दीपक चचला कारारे ॥ दी० ॥ ५ ॥ नयन अमीरस पूरणप्रभुना कुरंग अटवी आधारा भालविशाल अनोपम राजे अष्टमी शशी समकारारे ॥ दी० ॥ ६॥ देशविदेशका जात्री आवे भेटे प्रभु दीदारा विविध पोत्मव पूजा करे प्रभुनी भाव धरि सुविचाररे ॥ दी० ॥७॥ चणा दीनमथी आश धरीने आयो जगदाधार दराचद्र निज सेवक जाणी सुविजरपनो सुख धारारे ॥ दी० ॥ ८ ॥ गुन उगणीसे गुणत्तर वरसे वैशाख शुदि सुविचार आत्म

दिन प्रभुपदकज भेट्या। आनंद अधिक अपारारे ॥ दी० ॥ ६ ॥

॥ इतिश्री भोयणी तीर्थ-स्तवनं संपूर्णम् ॥

॥ श्रीसिद्धाचलजीका स्तवन ॥

थांपरवारिहो जिनजी श्रीसिद्धाचल सिखरे ऋषभ भले भेटिया हो राज । ऋ० ॥भ०॥भे० ॥ था० ॥ पूर्व संचित अशुभ करम सहु मेठिया हो राज ॥ था० ॥ सोरठ देशमें शोभता हो राज ॥ थां० ॥ दोय तीरथ मनुहार भव्यजन तारता हो राज ॥ भ० ॥ थां० ॥ १ ॥ प्रथम शेत्रुजयगिरिजियो हो राज ॥ थां ॥ तीन भुवन सिरताज आज दरशण लह्यो हो राज ॥ आ० ॥ थां० ॥ २ ॥ नेम जिनेसर राजियो हो राज ॥

था० ॥ स्यामसलूणो दीदार रेवतगिरि गाजियो हो राज ॥ रे० ॥ था० ॥ ३ ॥ पाच क्रोड मुनि परिवर्या हो राज ॥ था० ॥ पुंडरीक गणधार चैत्री शिवसुख वर्या हो राज ॥ चै० ॥ था० ॥४॥ आदीश्वर अलवेसरु होराज ॥ था ॥ पूर्व निवाणु वार रायण पगला ठव्या होराज ॥ रा० था० ॥५॥ काति पूनम दश कोडसु होराज ॥ था ॥ शिव सुख पाम्या सार द्राविडवारिखिल्लजी होराज ॥ द्रा० ॥ था ॥ ६ ॥ इम अनेक मुनिवर इहा होराज ॥ था० ॥ सिन्द्र वधु भरतार थया गोरीकरसता होराज ॥ वि० ॥ था० ॥ ७ ॥ पूरव पुन्य पसाउले होराज ॥ था ॥ सफल फली सहु आस जात्रा विविसु करी होराज ॥ जा० ॥ था० ॥ ८ ॥ रतनपुरीथी आविया

हो० ॥ थां० ॥ आनंद कूंवर शुभ भाव लाभ-
लीधो घणो होराज ॥ ला० ॥ थां ॥ ६ ॥ चतुरा
चोमासो रह्या होराज ॥ थां० ॥ भगवति सुण्यो
भले भाव उपधान तप आदर्यों हो राज ॥उ०॥
थां ॥ १० ॥ उछवरंग वधामणा हो राज ॥
थां० ॥ वरत्या जय जयकार सुगुरु सुपसायथी
होराज ॥ सु० ॥ थां ॥ ११ ॥ खरतर वसी
छिपावसी होराज ॥ थां० ॥ साकर उजूम हेम
प्रेमबाला बसी होराज ॥ पे० ॥ थां० ॥ १२ ॥
मोती विमल वसो आवीया होराज ॥ थां० ॥
उलकाकोल सिद्धशिला सिद्धवड फरसीया
होराज ॥ सि० ॥ थां ॥ १३ ॥ शुभ उगणीसे
सित्तरे होराज ॥ थां० ॥ पोसदशमी सुविदीत
आनंद सुख पामिया होराज ॥आ० था०॥ १४ ॥

भव भव चाहुं चाकरी होराज ॥ थां० ॥ प्रभु चरणारीनित्त कृपाचंद वीनवे होराज ॥ कृपा० ॥ था० ॥ श्री सिद्धाचल सिखरे रुषभ भले भेटिया होराज ॥ रुष० ॥ था० ॥ १५॥

॥ इति श्रीसिद्धाचलगोरी-स्तवन सपूर्णम् ॥

॥ श्री आदिजिन-स्तवन ॥

राग रेखता

आदिजिनराजभरभेटे पूर्वकृत दुख सब मेटे (टेर) तीर्थपतिप्रथमप्रभुजानो, प्रथमराजाएदिलआनो, प्रथममुनिराजजगमानो, केवली आदि पहिचानो आदि० ॥ १ ॥ प्रभूजी-निरउपकारी, तारेंऐनेकनरनारी, अवसर अब पाय दिलधारी, आयोहूं सरण तिहारी, आदि० ॥ २ ॥ मातामरुदेविनेतारी, हस्तिपर मुक्तिपधारी,

विरुद् विख्यातजगसारी, प्रभुनो जाऊं बलिहारी आदि० ॥ ३ ॥ ऊपनो पंचमे आरे, प्रभुविना-बीजोकुणतारे, सेवकसुणिचित्तमांधारै; मनुज-भवपाय नहिहारै ॥ आदि० ॥ ४ ॥ अष्टसिद्धि करणजिनराजे, अष्टगामे प्रभुछाजे, कृपाचंद्रसू-रिसुसमाजे, प्रभुने सेवोसुखकाजै ॥ आदि० ॥५॥

॥ श्रीशान्तिनाथजीका स्तवन ॥

राग वसंत

शान्तिजिनसिवसुखदाई सेवापुन्येपाई ॥ शान्ति० ॥ (टेर) शान्तिकरण सोलमजिन अर्चा करोसदावरदाई । शान्ति सुधा-रसमेहलावरसे, भविचात्रकहरखाई ॥ शांति० ॥ १ ॥ जिनमुद्रा जिनवरसम कहिये, भावकारण

कहराइ, समवसरण त्रिहुदिशमें ठवणा, सहु-सेवोचितलाई ॥ शान्ति० ॥ २ ॥ भावसाधन निश्चेरामावशा, भाष्यनियुक्तिसुहाइ । कारण सगनयठवणा जाणो, पट्कारजकहाई ॥ शान्ति० ॥ ३ ॥ निजगुण निर्मलकारण प्रभुजी, निमित्तस-मोकहिवाई । आतम अनुभवध्यानकरणने, जिन धरलेलयलाई ॥ शान्ति० ॥ ४ ॥ उगणीवेइह तर माघे । वदि तृतीयासुहाई । सेमलिया नगरे प्रभु भेटे, रुपाचन्द्रसूरि सवाई ॥ शान्ति० ॥ ५ ॥

॥ पचतीर्थी-स्तवनम् ॥

लावनी

जगनमें नरपदजयकारी, पूजना रोगटले भारी ॥ इसचालमें ॥ सेवोश्रीचंद्रप्रभु स्वामी सेवना पुन्येकरिपामी (टेर) आठमाजिराज

सुखकारी, लक्ष्मणामातामनुहारी ॥ महासेननंदन हितकारी, चंद्रलंछनशोभेभारी ॥ उडावणो ॥ मूलनायकचंदाप्रभु, चंद्रवरण सोहाय । पार्श्वनाथ मनवंछितपूरे, पंचतीर्थमनभाय ॥ दादाजिनदत्तसूरिंदस्वामी ॥ सेवना० ॥ १ ॥ अदीश्वरमल्लिजिनराजे, अजितचंदाप्रभुविराजै । सुमतिजिन पार्श्वप्रभुछाजै, केशरियानाथयशगाजै ॥ उ० ॥ देहरासरअतिदीपतो, देहरीबनोविशाल । सहसफणाछबिसुन्दरसोहे, कुशलसूरींददयाल ॥ सुगुरुने पूजो सुखकामी ॥ सेवना० ॥२॥ रिषभजिनबिम्ब श्यामसोहे, सोलमाशांतिमनमोहे । बावनदेहरी दरशनहोहे देखतां भव्यहृदयबोहे ॥उ॥ चैत्यप्रवाड़ीभावसू, संघसहितसुजगीसयात्राकरिमनरंगसु, भेट्याजगनाईश ॥ भविकप्रभुसेवा-

सुखपामी ॥ सेवना० ।३। तीर्थविवडोदसुखसगे, आदीश्वरमेट्या मनरगे। सागोदियादरिशनऊमगे, करमदीदोयदेगलचगे ॥ उ० ॥ सेमलिये शान्तिनाथजी, सारेसेवककाज। अलियविघन-दूरेहरे, तीनभुवन सिरताज ॥ भजोभविजनमन-विसरामी ॥सेवना० ॥ ४ ॥ चोमासोरतलाममें जानो, भगवती सुनेराजरानो। उपधानतपपूरण ठाणो, मालानोओच्छवमडाणो ॥ऊ०॥ उगणीसे इठतरे, पौपोपूनमसुखकार। जिनरराचद्रसूरि सदा, भलेवरत्या जयजयकार ॥ सुगुरुनो पूजा मनरामी ॥ सेवना० ॥ ५ ॥

॥ अथ स्तवन गोपीचंदके ख्यालकी रयमे ॥

मृजहरजसगीगी आदीश्वर भेट्या आंद कारजी । (आ०) आदिकरणप्रभुमतरजामी,

भव्य कमलदिनकार । चोसठइंद्रपूजेहितकामी, प्रभुसेवो सुखकारजी ॥(मुजमे।१।)दुःखमकाल— मांहिं हुं उपन्यो, दक्षिणभरत मझार,प्रभुआलंबनपायो पुन्ये, एहिज परमआधारजी ॥(मुज० ॥२॥) ठवणाजिनवर आतमसाधन, भावसमान एजाणो, साधकतीननिक्षेपा दाख्या,भावकारण मन आणोजी॥(मुज०॥३॥) बिंबअनोपमसोहे प्रभुको, अद्‌भूतकांतिवीराजे, प्रभुसुपारश शांति जिनवंदे, रिषभश्याम छवीछाजेजी ॥(मुज०॥) ॥४॥ भूहरेमांहि सहस फणा भेटे, जावरानगर मझार, श्रीजिनकृपाचंद्र सूरि अहोनिस, जिनदरशनजयकारजी ॥ (मुज० ॥ ५ ॥)

॥ इति पदम् ॥

॥ राग गजल ॥

राजुलपुकारे नेमपिया ऐसी क्या करी ए चाल ।

मेटे युगादिदेव आजहरखसे, मेटे अमादिकर्मप्रभुदरससे ॥ मेटे० ॥१॥ नाभिनरेन्द्रनद-चरण फरससे,तीरथअष्टापदमयोसरससी ॥मेटे० ॥२॥ युगलाधर्मदूरकरनसे, प्रथम तीरथकर महोसरनसे,॥ मेटे ॥३॥ पुन्योदयपायो दरस महरसे, देराल लछुणामांहि धन्यो स हरसे ॥ मेटे०॥ ४ ॥ उगणिसे गुणयामीजेशाखमासमे, जिनरूपाचंद्र सूरिसेवो पाससे ॥ मेटे० ॥५॥ इति पदम् ॥

॥ स्तवन लि० ॥ राग सोरठ ॥

देखो आजउच्छव मनभायो, धनो सघ सुजस मिलगायोरे, (देखो आज०॥१॥) पहिलादोदिन अरदपूजा, तीजीआरंयतपूजारचायो, पांचकल्या

णकशांतिजन्मदिन, विमलाचलपूजा सुहायोरे (देखो आज० ॥ २ ॥) नेमोसरपूजाछठेदिन, समेतशीखर गुणगायो, ज्ञानगुरुनवपदनी पूजा, दशाह उच्छवकहवायोरे ॥ (देखो आज०॥३॥) पूजाप्रभावनासद्गुरुभक्ति, दीक्षोत्सवसुखदायो, रथयात्रावरघोडो सजके,जयजयकार वरतायोरे ॥ (देखो आज० ॥ ४ ॥) मेदपुरमेंसंघसवायो, भावभलेहुलसायो, उगणोसौगुणयासी जेठमें, धवलमंगलवरतायोरे ॥ (देखो आज० ॥ ५ ॥) श्रीजिनकृपाचंद्रसूरिसेवो, जैनधरमवरदायो, भव भवभवियणभावनाभावतां, जयसुख संपदा-पायोरे ॥ (देखो आज० ॥ ६ ॥) इति पदम् ।

———

अथसितामहुचैत्यस्तवनावलि,

॥ राग रेखता ॥

संभवजिनराजमनभाया, सरस दरशनप्रभु-
पाया ॥ (आ०) जितारीभूपके नंदा, अयोध्यानगरी
सोहंदा, सेनाप्रभुमाताकेजाया, अश्वलाछनचर-
दाया ॥(संभव०॥॥१॥) रायणतलपगलाप्रभुसोहै,
आदीश्वरसेटेमनमोहे, दादाजिनदत्तकुशलराजे,
सेवोभवि सर्वसुख काजे ॥ (स भव० ॥२॥)
प्रथमश्रीतीर्थपतिनंदे, केशरियानाथआनंदे, पार-
श्वउनिस्यामचरन संगे, सितामहु च्यार देवल
चंगे ॥(स भव० ॥३॥) जगतमें देव बहुत देखे,
मेरे मन कोइ नहो लेखें, जिनेश्वरदेव देवनमे,
दूजो नही कोइ सेवनमे ॥ (स भव० ॥ ४ ॥)
उगणीसेगुणोयासीवरसे, वैशाखसुदि आठम

मनहरसे, कृपाचंद्रसूरिसुखकारी, सेवनाप्रभुकी हितकारी ॥ (संभव० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री संखेसरजीनो स्तवन ॥

देशी जिल्लानी—जगगुरुश्रीसंखेसरमंडनपासजिनंदाहो सुखकारी महाराज भवभयवारणशिवसुख तरूनो कंदाहोदयाल ॥ज०॥ श्रीअश्वसेन नरेश्वर कुलनभ चंदाहो ॥सु०॥ वामामात सुजात जगत आनंदाहो ॥द०॥१॥ज०॥ सुंदर नीलवरणछवि अद्भुत छाजेहो ॥सु०॥ मा०॥ देहप्रमाण अनोपम नवकर राजैहो॥द०॥ रूप अधिक तुमदेखी रतिपतिलाजैहो ॥सु०॥मा०॥ सहुसुरनर मिलसेवे वांछितकाजैहो ॥ द०॥ २ ॥ज० ॥ प्रभावतीना प्राणेसरप्रभुप्याराहो ॥ सु० ॥ मोहभुरनी [illegible] तुमन्यारा[illegible] ॥ द० ॥ ज० ॥ कमठम-

हासठमानविदारणहाराहो ज० ॥ तारणनागनागेंद्र घणायणहाराहो ॥द०॥३॥ज०॥ जोवनवयमेंदीक्षा लीनीसुविचारीहो ॥सु०॥ मेघमाली उपसर्गकरी गयोहारीहो ॥ द० ॥ज०॥ केवलपामी जगतजीव उपगारीहो॥सु०॥स घचतुर्विधथापी वर्या शिव नारीहो ॥द०॥४॥ज०॥ तुममोटा त्रिभुवननानाथ कहावोहो॥ सु० ॥ दीठां भविने दिलमा अधिक सुहावोहो ॥द०॥ज०॥ तारण तरण तुमें पवडो विरुद धरावोहो ॥सु०॥ तो मुज तारता वारहवे नविलावोहो ॥द०॥५॥ज०॥ देवल बहुला जगमें देवनादीठाहो ॥सु० ॥ मुजमनडेमा ते नविलागा मोठाहो ॥द० ॥ज०॥ सरागीपणोपामीथया ते धीठाहो ॥सु०॥ वीतराग प्रभूमुद्रा दीठीवली ठाहो ॥द०॥६ ॥ ज० ॥ कालअनादिथीपरपरिण॰

तिमां रमियोहो ॥सु०॥पुद्गलसंगे च्यार गतिमां भमियोहो ॥द० ॥ ज० ॥ हिवप्रभू मूरतिजोतां पातिकगमियोहो ॥ सु० ॥ प्रभुजीप्रसादे मोहराज उपसमियोहो ॥द०॥७॥ज०। शांतिसुधामयनवलो जिनदीदारहो ॥ सु० ॥ निरख्यो आजआनंदभरी सुखकारहो ॥द०॥ ज० ॥ पुन्यप्रबलथयो अधिक दिवस श्रीकारहो ॥ सु० ॥ भगतवत्सल भले भेट्या प्रभु मनुहारहो ॥द० ॥८॥ज०॥ वढियार देशमां श्रीसंखेसर स्वामीहो ॥सु०॥ सुगुरुपसाये हिव प्रभुसेवा पामीहो ॥ द० ॥ उगणोत्तर उग-णीसै वैशाख नामीहो ॥सु०॥कृपाचंद्र विभुपद कजमनविसरामीहो ॥द०॥ज०॥९॥

॥ इति संखेसर-स्तवनं संपूर्णम् ॥

॥ अथ श्रीभद्रेशर स्तवनम् ॥

वीरजिनेसरसामलोरे लाल,सेवकनी अरदास सुखकारीरे, तारकजिन्द सुहामणोरे लाल, सुणि आयोतुमपासउपगारीरे ॥ वीर० ॥ १ ॥ साहिब-सुनिजर कोजियेरेलाल, मुजपर गरिवनिवाज ॥ सु० ॥ मनमोहन महिमानिलोरे लाल, तुम सेवा सुख काज ॥ उ० ॥ वी० ॥ २ ॥ काल अनादिलगे भम्योरे लाल,भवअटवी विषमअगाध ॥ सु० ॥ कोधादिकस्वापदजिहारे लाल, प्रति प्राणिने दे बाध ॥ उ० ॥ वी० ॥ ३ ॥ इन्द्रिय विषय कटक तिहारेलाल, दुर्धरसालसमान ॥ सु० ॥ चउगइ मारग चालतारे लाल मोहकरे हैरान ॥ उ० ॥ वी० ॥ ४ ॥ काल आहेडीरेछे पड्योरे लाल छलताके निशदीश ॥ सु० ॥

ए आपद्‌थी उद्धरोरे लाल तुमें मोटा जगदीश ॥ उ० ॥ ॥ वा० ॥ ५ ॥ मद्र सर भले भावसुंरे लाल, भेट्या श्रीभगवंत ॥ सु० ॥ तेवीसमजिन सुख कररेलाल, महिमावंतमहंत ॥ उ० ॥ वा० ॥ ६ ॥ बावन देहरीमां दीपतारेलाल ॥ मनोहरश्री जिनराज ॥ सु० ॥ अद्‌भुतदीठो देहरोरेलाल, मानुं नविन रच्यो आज ॥ उ० ॥ वी० ॥ ७ ॥ दंडकलस सोहे सदारेलाल, धजापंताकालहकंत ॥ सु० ॥ मांडणी जोतांएहनीरेलाल भविमनमां-हरखंत ॥ उ० ॥ वी० ॥ ८ ॥ पुरवपुन्यथी पामीयोरे लाल, अनुपमजिनमुखचंद ॥ सु० ॥ कच्छमंडनश्रीजगधणीरे लाल, वंदेनित कृपाचंद ॥ उ० ॥ वीर० ॥ ९ ॥

॥ इति भद्रेशर-स्तवनं सम्पूर्णम् ॥

अथ पानसर महावीर स्तवन

कुर्म तणी कथनीरे कीहा अइने कहु ॥ ए देशी ॥ वीरजिनेसर अलवेसर प्रभु सामलो, सुनिजर करि सेवकनी ए अरदासजो, वालेसर नित वेहने करीये वीनती, इम जाणीने आव्यों तुमारी पास जो ॥ वी० ॥१॥ कालअनादिरभड्यो हु ससारमा, भवभवममना दु खसह्याअपारजो, वीतराग तमे तारकजाणीतातजी, तोवण वीतक वात कहु निरधारजो ॥ वीर० ॥ ५ ॥ काल अनंत रहियो सुक्षम निगोदमा, व्यवहारेतर राशीद्वोयकहतजो, श्वासोश्वासमा अत्रिका मतरेभवकया, इम फरतें नवि पाम्यो भवनोअतजो ॥ वीर० ॥ ३ ॥ कालन्भि पामीने परितरणीलगो, पृथियादिक व्यवहारमा

आव्यो तेणजो, कर्मउदयथी फरिपडियोनिगोदमा, पुद्गल परियट्टअसंख्यरह्यो दुहेणजो ॥ वीर० ॥४॥ व्यवहार राशि कहवाणो हुं तिहां, एजाणू तुम्भ आगमथी जगनातजो, एकेंद्रियमां वसता काल-घणोगयो, तेहनी केटली कहुंतुमआगल वातजो । वी० ॥५॥ विकलेंद्रियनांभव संख्याता में कीया, दुखतणों नहीं आवे कहता पारजो, पंचेंद्रितिर्यं-चपणों:लहिनें प्रभो, जल थल:खेचरना भवकर्या दुःखकारजो । वी० । ६ । शीततापभयभूखतृषा सही घणी, क्रूरकर्म करी उपनो नरकमभारजो, छेदनभेदनताडन;तर्जनादिक सह्या, पर्माधर्म्या-दिकृतकष्टअसारजो ॥ वी० ॥ ७ ॥ नरकथकी निकली में तिर्यंच:वलि थयों, अकाम निर्जरा करतां वहुली वारजो, देवगतिमांउपजी सुख:

रूपट थयो, तेहथी सुकृत कीनो नहीं लगारजो ॥ वी० ॥ ८ ॥ कर्मसयोगे एकेंद्रिमा उपनो, इमभव भ्रमणकरन्ता अनन्ता वेसजो, अज्ञलाकमथी मनुष्यपणोंमेंपामियो, त्यां पण न लयो धर्मतणों लवलेशजो ॥ वी० ६ ॥ इमभवनाटककरता कालबहुगयो, पुन्य सयोगेपाम्यो प्रभु दीदारजो, स्वामि शासन लागो मुजने मीठडो,हिवप्रभु करूणा करी मुज करो निस्तारजो ॥ वी०॥१०॥ तुमस रिखासाहिबनी सेवा में रही,हिवप्रभुमुजनेजाणो सेवकखासजो, तुमगुणजाणु एटली सुनिजर कीजिये,रुपाचन्द्रप्रभुपूरोमनडेनी आसजो ॥ वी० ॥११॥ गुलें रदेशे पानसरेप्रभुभेटिया,वरस उगणी-सौउगणोत्तरे शुभ दीसजो, मौनइग्यारसमनमोहन-प्रभुजीमिल्या,आनदद्दायक जयकारी जगदीशजो ॥ वी० ॥ १५ ॥ इति महावीर स्तवन सम्पूर्णम् ॥

स्वामीरिसहेसरु, दीठो में सुरतरु, सुनिर्जरकरी प्रभु सुजस लीजै ॥ स्वामी० ॥ १ ॥ आत्मगुण तुमतणो, प्रगट सोहामणो, सादि अनंत स्थिति सुख लहीजै ॥ स्वामी० ॥२॥ ध्येयना ध्यानथी ध्याता निजगुण लहे, भाव उल्लासथी कर्म छीजै ॥ स्वा० ॥ ३ ॥ साध्य साधक दशा, अनुभवी आतमा, बाध्य बाधकपणो दूर कीजे ॥ स्वा० ॥ ४ ॥ एक प्रदेशमां अनंत सुखते लह्यो, तेहनो अंश प्रभुमोय दीजौ ॥ स्वा० ॥ ५ ॥ त्रण जगनाथ तूं सेवकां सुखकरू, अवर दूजोनहो कोयदीसे ॥ स्वा० ॥ ६ ॥ वीनती मानजो सुजसमुनआपजो जिनकृपाचंद्रसूरि जय वरीजै ॥ स्वा०॥७॥

इति पदम्

दरसणकीयो आजआदीसरको धूलेवागाममें आयवीराजो, नाभिराय नद्ननीको ॥ द२० ॥ १ ॥ द्रव्यभावविधदरसण जाणो, भावबिनादरसण-फीको ॥ द२० ॥ २ ॥ दरसण करि भविनिजगुण पावे, वीतरागपद जिनवरको ॥ दरम० ॥ ३ ॥ जिनवरदरसणनिमित्त लहिने, उपादानआतम-हीको ॥ द२० ॥ ४ ॥ कारणता ग्रही कार्यअनूपम, सिद्धपणो निश्चमटीको ॥ द२० ॥५॥ ज्ञानगुलाल प्रेमपिचकारी,क्षमायवीरखेले हिलमिलको ॥द२० ॥ ६ ॥ ऐसोहोरी भविजनखेले, सूरिरूपचन्द्र सुखवरको ॥ ७ ॥ इति पदम् ॥

मोरा टे मइया आदि
करण तेरा जइया-एदेशी ।

श्रीसम्भवजिनराय। त्रणो जगनाथ कहवाया

श्रीसंभ०॥नगरी अयोध्याजन्मलियो है जितारिकुल-
नभचंदा, सेनामातसुजात सोवनद्युति, अश्वलंछ-
नसोहाया ॥ संभ०॥ १ ॥ फागुणसुदिआठम
अवतरिया मगसरशुदिचवदशजाया मगसर पूनि-
मदीक्षाधारी कातिवदी पांचम नाणपाया ॥ संभ०
॥ २ ॥ चैत्रशुक्लपंचमीनिर्वाण सवजीवनें सुख
दाया साठलाखपूरवनोआयु धनुष च्यारसौ काया।
संभ० ॥ ३ ॥ महागोपमहामाहण प्रभुजी भव-
अटवी सत्थवाह भवजलधिनियमिकतुमही,
एओपमामनभाया ॥ संभ० ॥ ४ ॥ गणधरदोय-
अधिकशतजाणो शिवरमणीको राया जिनकृपा
चंद्रसूरि सुखखाणी, सेवामें मनलाया ॥ संभ०॥

॥ इतिश्री पदम् ॥

थावरचारीहोजिनजी, श्रीधुलेवागढपति, रिषभसोहावणाहोराज ॥ए आकडी॥ देशमेवाडमे शोभताहोराज,था० आदिकरण आदिनाथ, मेस्या मळेभावसु होराज ॥मे० ॥१॥ था० श्री०॥ परचा जगमे परगडाहोराज, था० आवेसघअपार सरस दरसणन्हे होराज॥ स० ॥२॥ था० श्री०॥ स्याम वरणशुभसुदकहोराज था० अद्भुतप्रभुदीदार, देखभावउिलतकने हो राज ॥दे० ॥३॥ था श्री०॥ आसहतीवणादिवमनतो हो राज था० तेसफळी थइआज, पूरवलाचित्रक्षत्या हो राज ॥ पू० ॥४॥ था० ॥ श्री० भवमरवरावारा चाकरो हो राज, था०भुजनेहितसुवकर,नदाप्रभुहोजोये हो राज ॥ स० ॥ ५ ॥ था० श्री० ॥ मालवदेशथी आवीया हो राज, था० जिवन उल्हु घोवाड, आज दरसण

ह्योहोराज ॥आ० ॥६॥ थां० श्री० ॥ उगणीसे-
असीसमे हो राज, था० फागुणशुदिहितकार,
सदासम्पत्तिकरु हो राज ॥ स०॥७॥ थां० श्री०॥
अव्याबाधसुहंकरुहोराज, था० अनुभवअमृतपान,
सदामुझ दीजियेहोराज ॥स० थां० श्री० ॥ ८ ॥
साहिबनीसुनिजरछतां हो राज, थां० सहजफले-
सहुकाज, कृतारथकीजीये होराज, कृ० ॥ ६ ॥
थां० श्री० ॥ आजमनोथसहुफल्याहोराज, थां०
प्रभुदरसणमनरंग, सदाजयजकरु हो राज स० ॥
१०॥ थां०॥श्री रिसहेसरजगजयोहोराज थां० श्री
जिनकृपाचंद्रसूरि, प्रभुमुझमनवस्याहोराज प्र०
॥११॥ थां० श्री० ॥ इति ॥

॥ कृपानिधिवोनती अवधारोरे, एदेशी ॥

श्रीरिषभजिनेसरस्वामीरे त्रिभुवनजनमन विसरामीरे, जगतारण अंतरजामी भविकजन श्रीजिनवरआराधोरे एतोआराधि शिवफलसाधो॥ भवि० ॥ १ ॥ मनमोहनदिनकरसोहेरे, देख्याभव्य कमलप्रतिबोहेरे, जिमचंदचकोरनिशिमोहे ।भ०।२। गढधूलेवाजिनपतिवंदोरे, प्रभुदरसणकरिचिर-नंदोरे एतोनिजगुणसुरतरुकंदो, ॥भ० श्री० ॥३॥ गढल्कामें प्रभुवसियारे, शरणागमनमेउलसिया रे, सद्गुणयासेवानारसिया ।।भ०॥४॥ उन्नंयणोमे प्रभुदीठेरे श्रीपालनो व्याधिन्नोठेरे, सुखसंपदा करिजनमीठे ॥ भ०॥ ५ ॥ नागरदेशनडोदागाम-

मांहिरे,जिहांवसियाजगतनासांहिरे.प्रभुभावभगति मनलांहि ॥ भ०॥६॥ तिहांथीधूलेवेआवेरे, घणा· यात्रीनामनभावेरे, गोरीमिलमंगलगावे ।।भ० ७॥ परचापरतिखरजगछाजेरे,अतिशयगुणअंबरगाजेरे, प्रभुदिठाभवभयभाजे ॥ भवि० ८॥ देशमेवाडदे- ख्योनगीनोरे, करेडापारसनाथमनलीनोरे, देलवा- डेदरशणकोनो ॥ भ० ॥९॥ शांतिसरअद्भुतमूर्त्ती रे, उदयापुरजिनालयस्फूर्त्तीरे पद्मनाभसेवासुख- पूर्त्ती । भवि० ॥१०॥ वनेडेआदीसरराजेरे, इम- चैत्यअनेकविराजेरे, राजनगरमांअधिकदीवाजेरे ॥ भ० ॥११॥ उगणोत्रेअसोवरसेरे फागुणशुदि- आठमफरसेरे, जिनकृपाचंद्रसूरिमनहरसे ॥ भवि० ॥ १२ ॥ इति स्तवनं सम्पूर्णम् ।

वारोजाउ रेसांवरिथातोपर-
वारणारे ॥ तो०॥ एदेशी ॥

सुणोसुणोजी जिनवरजीह्मानेतारजोजी ॥ एआकडी ॥ अश्वसेननरेसरनदन वामादेवीकेसुत वदन, नीलवरणछविमोहनिकदन, कर्मरिपुवारजोजी ॥ सु० ॥ १ ॥ परम पुरुष परमेसर कहिये, परमात्मापरमगुरुलहिये परमपुद्गलसगदूरेगमिये, सुगुणसुधारजोजी ॥सु० ॥ २ ॥ कालअनादिपर परणतिमें, नानादुखसह्याचयारगतिमें, अवप्रभुदरसणपायोरतिमें, अनुभवरसभारजोजी ॥ सु० ॥३॥ देशमेवाडमेतीरथहोवे करेडापारसनाथ प्रभु सोहे, प्रभुदरसण भविजनमनमोहे, सुखसपति कारजोजी ॥ सु० ॥ ४ ॥ उगणीसे प्रभुअसीवरसे

मेरूतेरसदरसणसरसे, श्रीजिनकृपाचंद्रसूरिफरसे आवागमननिवारजोजी ॥ सु० ॥ ५ ॥

इतिसंपूर्णम् ।

श्रीअजितनाथजगनाथ भविजनकाजसुधारन वाले, जितशत्रु राजाकेनंद, विजयामातामनआनंद, वैशाखशुदितेरसजिनचंद,मातुउदरअवतरणेवाले ॥ श्रीअ० ॥ १ ॥ माघशुदि आठमजनुजाण, सुरपतिसेवासारे मनआण, इंद्राणीकेप्राणसमान, सबजनतारणवाले, श्री० ॥ २ ॥ माहशुदिनवमी संयमलीनो, भव्यमनोरथकीनो, पोषशुक्लइग्यारस भीनो, केवलज्ञानपानेवाले, ॥श्री० ॥३॥ चैतशुदितीजनिर्वाण, सुखअनंतपायोपरधान, सादिअनंत थितिमहिराण, भव्यमनोरथपूरणवाले, श्री०॥४॥ गजलंछनप्रभुनेपहिचाण, बहुतरलाखपूरवआयु-

जाण, साढाच्यारशत धनुषप्रमाण, देहमानधराणे चाले ॥ श्री० ॥ ५ ॥ सोवनवरणशरीरसोहतं, पचाणु गणधारमहत, चउविहसंघसेवासारत, कृपाचंदसूरिजयकारणेमाले ॥ श्री० ॥ ६ ॥

इति पद्म् ।

॥ राग ख्याल ॥

मानेउमगघणेरि जास्यां लोद्रवपुरनी जातरा आस्यांलोद्रवपुरनी जातरा एतोमुगतिजावणरी-मातरा ॥ मुजड०॥ पखाकड़ो ॥ मरुधरदेश मनो-हरसरे, तिहांतीरथपतिराजे, श्रीचिंतामणिपास प्रभुजी, दरसणसैंदुखडामाजेजी ॥ माने० ॥ १ ॥ स्यामवरणछबिअद्भुतसुंदर, जोताप्रीतिबधावे, पलकपलकमें प्रभुनोदरसण, निरख निरख सुख-पावेजी ॥ माने० ॥ ॥ जेसलगढमेचैत्यअनोपम,

अष्टसिद्धिदातार, आठमंदिरमें बिंबप्रभुना, भेट्या भवदुखपारजी ॥ मांने० ॥३॥ अमरसागरमें तीन देरासर, दोठांदुरितपुलाये, बरमीसर गुरुचरण गोडीचा, सेवाथीसुखथायेजी ॥ मांने० ॥ ४ ॥ यात्राकरि बहु युक्तिसुंजी, कृपाचंद्रसूरिराय, चउविह संघसाथ भेटियाजो,किसन संपत सुखथायजो ॥ मांने० ॥ ५ ॥

इति पदम्।

॥ जगतमें नवपद जयकारो ॥

॥ एचाल ॥

नाकोडापारस प्रभुधारी । आवे दरसणकों नरनारी।एआंकडी ॥महेवानगरमाहे छाजै।चिंतामणी तीरथपतिराजै। स्यामछविसुंदर विराजै। दरससै सहु दुखडाभाजै। उडावणी ॥ अश्वसेन

फैलाइला। वामदेवीरेनंद। प्रभावतीके कंत प्रभुजी। मुखडो पुनिमचंद। दरस आज सरस कीयो भारी॥ आवे०॥ १॥ जनमवाणारसीमें जाणो। धन्य ते दिवस कहवाणो। कामठमद दूर करणराणो। शिवरले करयो नागराणो॥ उ०॥ सायमपाली निरमलो। कर्मनिर्जराहेतु। केथरूल्ही साचयापीयो। काइ भवसागरनोसेतु। भयेप्रभु निरुपम सुखधारी॥ आवे०॥ २॥ राणपुरे रिसहेसरचंदे। थाणेराज महावीरचंदे। नारदपुरि सिद्धाचलनंदे। गिरनारगिरि नेमिजिण दे॥उ०॥ नाडोलमे प्रद्मप्रभु। वरकाणे श्रीपास। पचतीर्थोयात्राकरी भाइ॥ सफलहुइ सगु आस। केसरीयापीमेग्यधीकारी। आवे०॥३॥ कोरटे रिपम वीरचंदे। आहोर गोडीचा आनंदे। जालो

रगढभेव्या जिनचंदे । महावीर सेवासुखकंदे ॥ उ० ॥ इमअनेक ग्रामनगरमें । भेटे श्रीजिनराज । विषम उल्लंघी वाटने । भले पारसनाथसुखकाज । दरसण कर्यो मनउछरंगसारी ॥ आवै० ॥ ४ ॥ सोलमाशांति जिनराज । नेमीसर भेटे महाराज । सूरिजिन कीर्तिरतन आज । दरसण लह्यो श्रमण संघसाज । उगणीसै इकयासीये । आठम फागुण शुदिदीश । जिनकृपाचंदसूरि भावसु भले । भेव्या जगनाईश । सदा होवे संघमें जयकारी ॥ आवे० ॥ ५ ॥ इतिपदम् ॥

श्रीचिंतामणिपासजी दरसणपायो आज प्रभुजी। मनविसरामी साहिबा, सेवाथी शिवराज ॥ प्र० ॥श्रीचिं०॥१॥ आतमगुण प्रगटायवा,निमित्त कारण जिनसेव ।प्र०। उपादान आतमसही, पुष्टा-

ल्यन देव ।प्र०। श्रीचि०॥२॥कारण कार्य पणोल्है, करतातणे शुभयोग ॥प्र०॥ तिममुज आतमनिस्तरे, लहिजिनवरस योग ॥प्र०॥ श्री० ॥३॥ अव्याबाध अनतनो, पाम्योनिजगुणभोग । प्र० ज्ञानादिकजे स पद्म,तेहनोनल्होवियोग ॥प्र०॥श्री० ॥४॥ सादि अन त थितिवरी, अरूपीअरहित ॥प्र०॥ अगुरुलघु अक्षयपणे निरजनसुपस त प्र० श्री० ॥ ५ ॥ इमअनतगुणनोधणी, क्षायअनतनोज्ञाण ॥प्र०॥ समयातर उपयोगमा, वरतोछो सुणजाण ॥प्र०॥ श्री० ॥ ६॥ तू परमेश्वर वाल्हो, परमपुरुष पर-माण ।प्र०। परमातम पद तैंलह्यो, प्रभुछो जोवन-प्राण ।प्र०। श्री० ॥७॥ शातिसुधारसचद्लो, शाँ-तिकरण सुखकार । प्र०॥ सोल्मजिनवर सेवना, पामील्है भवपार ॥प्र०॥ श्री० ॥८॥ अरिष्ट

निवारण नाथजी, वावीसम जिनराज ॥ प्र०॥ प्रवलपुण्य संयोगथी, दरसण लह्यो संघसाज ॥ प्र०॥ श्री० ॥ ९ ॥ नगरमहेवा सुखकरु, नाकोडा जगदीश ॥प्र०॥ भव्यकमल प्रतिबोधवा, दिनकर शोभलहीस ।प्र०। श्री० ॥१०॥ उगणीसै इक्यासीये, आठम वदि-चैत्रमास ॥प्र०॥ जिनकृपाचंद सूरितणो, सफलफली मनआस ।।श्रीचिं०॥११॥

इतिपदम् ॥

॥ देशीपणिहारी ॥

॥ श्रीचिंतामणिपासजी मारा प्रभुजी छोराज ॥ लोद्रवपुरराजन वाल्हाछो अश्वसेन अंगजमुदा ।मा०। वामामात सुजान ।वा०। श्रीचिंता० ॥१॥ आतम गुणनाभूपछो ।मा०। निजसत्ता रत्नचान्ड ॥ वा० सादिअनंत स्थितिवरी मा० भव्यतणा

प्रतिपाल ॥वा०॥श्री०॥२॥ रिषम अजित सुभवनमु मा० समवसरण सुखदाय ॥ वा, चत्तारिअट्ठश दोयनमु ॥मा०॥ सहसफणा जिनराय वा०श्री०॥ ३॥ जेसाणगढमें दीपता॥मा०॥महावीर भगवान॥ वा०॥ आदीसर अरिहतजी ॥मा०॥ चद्राप्रभु गुण-खाण ॥वा०श्री०॥४॥ देरासर त्रणभुवननो ॥मा०॥ चोमुख प्रतिमासार ॥वा०॥ अष्टापद शातिनाथजी ॥मा०॥दूजीभूमी सुखकार ॥वा०श्री०॥५॥ स भ वजिनपतिसुखकरु॥मा०॥शीतलजिनवरईश॥वा०॥ सीमधरादि तीर्थंकरा॥मा०॥विहरमान जिनवीस॥ वा० श्री० ॥६॥ तेवीसमा प्रभुजगधणी ॥मा०॥ चितामणिमहाराज ॥वा०॥ बावन देहरि दीपति ॥मा०॥ देरासरसुखकाज ॥ वा०श्री०॥७॥ -द्र ल देहरा शोभता ॥मा०॥ इ द्रभवन अनुकार ॥वा०॥

िंबअनुपम निरखिया ।।मा०।। छ हजार अधिकार ॥बा०श्री०॥८॥ हरखघणैं प्रभुभेटिया॥मा०॥वाहड मेर संघसाथ ॥ वा० ॥ चउविहसंघपरिवारसुं ॥मा०॥ यात्राकरि सुखसाथ ॥बा०॥ श्री० ॥९॥ उगणीसे बयासीये ॥ मा० ॥ माघवदि दिलधार ॥बा०॥ कृपाचंद सूरिभावसु ॥ मा० ॥ भेट्यो प्रभुदीदार ॥बा०॥ श्री० ॥१०॥

॥ इतिपदम् ॥

॥ अथ बीजनी थुइ ॥

वासुपूज्यजिन अंतरजामी, मनविशरामी स्वामीजी ॥ भविजनतारण शिवसुखकारण, निजगुणना प्रभु कामीजी ॥ बीजदिवस जिनवर शिवसुखकर, चंद्रविमाने पामीजी ॥ नगर बुहारिमां मनुहारि, सेवो जिन सुखधामीजी ॥१॥

वासुपूज्यपद्मप्रभुराता,चद्रसुविधि उजिनधवलाजी ॥ मल्लिपास दोयनीलाजाणो, मुनिसुव्रत नेमीकालाजी ॥ आठद्विगुण जगनायकलायक, सोवनचरण सुहायाजी ॥ वीजदीवस नव नव चउद्विक जिन वदु अहनिशपायाजी ॥ २ ॥ दुविध धर्म जिनवरप्रकास्यो, अर्थअधिकसुखकारिजी ॥ सूत्रेकरि गणधरगुरुभाख्यो, भविजनना उपगारिजी ॥ दोयशिक्षा दोय नय निक्षेपा, चउभगी मनआणोजी, बीज आराधि सम्पदा साधी, परमारथपहिचाणोजी ॥३॥ बीजदिवस उपवासकरीजे, पडिक्रमणादिक सारोजी ॥ ए तप सुरतरु सरिखो जाणो, निरुपम सुख दातारोजी । कुमारयक्ष तिम शासनदेवीचडासानिध्यभूरिजी ॥ शुभकंदायकमनवेहोल्यो जिनवाचद्रसूरिजी ॥ ४ ॥ इति बीजनी थुइ संपूर्ण ॥

॥ अथ पंचमीनी थुइ ॥

नेमिजिनेसरजगपरमेसर, पंचमिगतिना दाताजी ॥ श्रावणसूदिपंचमिदिनजनम्या, त्रिभुवनमें विख्याताजी ॥ समुद्रविजयनंदन, जगवंदन, शिवादेवीमाताजी ॥ सहसवरसप्रभु आयुषपाली पाम्या शिवसुख साताजी ॥ १ ॥ कातिवदि सम्भवकेवलपाम्यो, मगसर सुविधि जायाजी ॥ चैत्र चंद्रजन्म अजित सम्भव, अनंत सुदिशिवपायाजी ॥ वैशाखवदि कुंथुजिनदीख्या, पंचमि जगतसुहायाजी ॥ धर्म धवलजेठपंचमिसीधा-सुरनरमिलजसगायाजी ॥ २ ॥ पंचमितपविधि-भाखेजिनवरअर्थअधिकमुखकारीजी ॥ सूत्र गणधरगुरुशुभदाखे, आगममांहि न्यारीजी ॥ नंदिविधिकरी देववांदीने काउसग्गमनधारीजी ॥

इकावन ज्ञाननाभेदनमीने, श्रुतज्ञानसेवोइकता- रीजी ॥ ३ ॥ पडिकमणो टोचटङ्ककरीने, ज्ञान- आराधोप्राणीजी ॥ मगसरादि षट मासमा उचरो, आगममाहिगणाणीजी । जिनआणाधारक सुखकारक, खरतरगण श्रुतवाणीजी ॥ श्रीजिन- कृपाचन्द्रसूरिनपमणे, शासन देवी हर्षाणीजी ॥४॥

॥ इति पंचमी स्तुति सपूर्ण ॥

॥ अथ अष्टमीकी थुई ॥

आठप्रातिहारज जसुसोहे,मोहे भविजन चन्द्राजी ॥ चन्द्रप्रभु आठम दिनम्नेजो अनुभव रत्ननाथ द्राजी । आठमदतजोने, धारो परमातमपदसारोजी अष्टपनदिनरयात्रा करता, अरिहंतध्याप्रकारोजी ॥१॥ रिषभ अजित सुमनि सुमननमि, सुपारस- सम्भवमायाजी ॥ आदीश्वरदीक्षा अभिनन्दन,

नेमिपासस्विपायाजो ॥ भिन्नमासअष्टमी कल्याणक, तीनकालमां जाणोजी आठजातिना कलश लेइने, स्नात्रकरे सुरराणोजी ॥२॥ आठे प्रवचनमातापालोदोपसर्वने टालोजी ॥ ज्ञानादि-आठआचारसेवीने, आतमतत्वनिहालोजी ॥ वीर-जीनेसरअर्थप्रकासेसूत्ररचैगणधारीजी ॥ आठ-मतपआराधिभविजनआठवरस अधिकारीजी ॥३॥ पर्वतिथीमेंपोषधभाख्यो,सिद्धांतछेजसुसाखीजी । पडिकमणोतपजपआदरीये, देववंदन विधिरा-खीजी ॥ आठ मंगल आराधतां पावै, सुखसं-पतिगुणभूरिजो ॥ श्रुतदेवीसुपसायलहीने, श्री-जिनकृपाचंद्रसूरिजी ॥ ४ ॥

॥ इति अष्टमी स्तुति सम्पूर्णा ॥

॥ अथ इग्यारसनी थुइ । ॥

एकादशीआवीआदिदेने ॥ आराधिने भवि शिवशर्मलेने ॥ धरो ध्यान श्रीजिनराजकेरो । टले अनादिकालनोकर्मकेरो ॥१॥ मल्लिजन्मदीक्षा-केवलपहाण । अरनाथ चारित्र नमि परमनाण ॥ दश खेत्रना कल्याणक पम जाणो ॥ दोढसोने थति त्रणसो पिछाणो ॥ २ ॥ इग्यारेवरसतिम-मासमीजे । आराधित्रग इग्यारह सुजस लीजे ॥ मौनमनधारीशुभधर्मकारी । श्रुतध्याननी भक्ति करिये विचारी ॥ ३ ॥ अठपोहरिपोषहकरि यथाशक्ते । तपजप करीउद्यमणोसुभक्ते ॥ इक चित्तध्यावे सुयदेवीपसाये । श्रीजिनरुपाचन्द्रसूरि सदासुख थाये ॥ ४ ॥

॥ इति इग्यारस थुइ सपूर्ण ॥

॥ अथ नवपदजीनी थुइ ॥

श्रीसिद्धचक्रसुहंकरजाणो ध्यानएभविजन मनमांआणो आतमतत्वपिछाणो, निरुपम शिवसुखकारणजाणो आतमने निजघरमां आणो अविचलसंपदाखाणो ॥ श्रीपालराजा नवपद साधे सुरसुखपामी सेवि समाधे अरिहंत पद आराधे, मनमोहन जिन गुण अगाधे दायक लायकसिद्धिअवाधे जगजशकीरतिलाधे ॥ १ ॥ बारे गुणकरि अरिहंतराजे सिद्ध आठगुण गणिवर छाजे गुणछत्तीशविराजे । पचीश गुण उवज्झयाराजेसत्तावीसमुनिमहाराजे सेवीगुण- सुसमाजै ॥ दर्शनज्ञानचरणतपकहिये सिडसठ इकावन सितर लहिये भेद पचाशक्रम कहिये, तेरसहसवलि गुणनो करिये चउवीसजिनपति-

ध्यानजरयरिये इमभवसागरतरिये ॥ २ ॥ आसु मासनी सातमसेतो नवआंबिलकरो सुखदेती चैतरमासवहेती, नवओलिशुभभावेलेति, इग्याशीआंबिल सहुहेति, योधरीजनीसेति, श्रीश्रीपालनें मयणाराणि, हरषभरि हियडे हुलसाणि, नवपद्ध्यानवराणि, नवपदनी नित्य स्तवनाजाणि, करो भविकजन शास्त्रप्रमाणो आगममाहि गवाणि ॥३॥ त्रणट कपाचशकस्तवकोजे, दोयट कभावश्यकलीज, काउसग्गनितकीजे, खमासमण शुद्ध चितमा धारो प्रदक्षिणाकरा गुण समारो जिमछूटेभवखारो, देवोवंदसरि सानिवकारि निमले सरपूरेआसहमारि सिद्धचक्रविधिसारि, श्रीजिनहर्षा-द्रसूरि भार्ये जिनभाणा मनमाहिरावे, भवि शिवसपदपावे ॥४॥ इति नवपद-स्तुइ सम्पूर्णा ॥

॥ अथ नवपद थुइ ॥

"सिरिसिद्धचक्क सेवो भवियां, सुह संपय पावोअविचलिया ॥ १ ॥ सिरिअरिहाइ नव पयध्यावो, चउवीसजिणवइगुणगावो ॥ २ ॥ नवआंबिल नवओलीकरिये, गुणतोजैतिका-उसग्ग धरिये ॥ ३ ॥ तीनटंकदेववंदन कीजै, जिनकृपाचंद्रसूरि जशलीजै ॥ ४ ॥ इति नवपद थुइ सम्पूर्ण ॥

॥ शांतीनाथजी थुइ ॥

शांतिजिनराया सर्वजीवसुक्खदाया, अचिरा देमायाजाससोवन्नकाया, विश्वसेनराया, जास गुणगणसोहाया, मृगलंछनपाया मोक्षमंदिर सिधाया ॥ १ ॥ पद्मवासुविशाला रक्त

यर्णे सुहालाचंद्रप्रभुधवलासुविधिजिन सुरकस-
वला मुनिसुव्रतसामलानेमीजिनराजकाला,
मल्लिपारस नीला सोलजिनराजपीला ॥ २ ॥
जिनवरनीवाणो मीठी साकर समाणो, भविजन-
मनभाणो मोक्षनीछे निशाणी, नयगमनआणी
सर्वभगप्रमाणी, सेवो श्रुत वाणोजैनशास्त्रे
वखाणो ॥ ३ ॥ शासनसुखदाइ गरुडराजसहाइ,
वांछितफलदाइ देवीनिर्वाणीमाइ, जिनचरणसहाइ
सर्वसंपतिकराइ रूपा चंद्रसूरिसदाइ संघमें शांति-
वरताइ ॥४॥ इति शांतिनाथजी थुइ सम्पूर्णा ॥

॥ वासुपूज्यजीको थुइ ॥

वासुपूज्यजिनेशर वंदुमनधरिनेह सुख
संपतिकारण आराधो गुणगेह, रोहणीतप
करतापामेंभवनोपार, सातवरसो सत्ताविश

जघन्य उत्कृष्टदिलधार ॥ १ ॥ अतीत अनागत वर्तमान त्रिहुंकाल, सहुजिनवरप्रणमो आणी-भावविशाल. जिनजन्ममहोछव सुरपतिकरे सुविचार, इम चोवोशजिनवर पूजो विविध-प्रकार ॥ २ ॥ चंद्ररोहिणीदिवसे तप आदरिये-सार, गुणनो प्रदक्षिणा खमासमण सुविचार, यथाशक्ति करिये चाविहार उपवास, चित्रसैन रोहिणीपरेपामेलीलविलास ॥ ३ ॥ पडिक्कमणो दोयटंक देववंदनत्रिहुंकाल, आठ पोहरिपोषध काउसग्ग सुविशाल, सुयदेवि सांनिध, रोगसोगसहुजाय, जिनकृपाचंद्रसूरितपसेव्यां-सुखथाय ॥ ४ ॥

॥ इति वासुपूज्य-थुई सम्पूर्णा ॥

॥ अथ छिनमनी थुइ ॥

श्रीसिद्धाचलतीरथसेवो, तीनजगतमा दूजोन एवो, एहथीशुभफललेवो ॥ श्रीआदीश्वरजिनवरराया, पूर्वनीवाणु इणगिरिआया, इन्द्रादिकमनभाया ॥ श्रीपुंडरीकप्रथमगणधारी, पाचकोडमुनिवरपरिवारी,अणसणकर्योहितकारी ॥ फागुणपूनिमलहेवनाणो, चैत्रीदिननिरुपम गुणखाणो पाम्यापदनिरवाणो ॥१॥ चैत्रीदिनदेव वदनकीजे, भावसहितप्रभुपूजारचीजे, जिनगुणगाइ जशलीजे ॥ तिलककरो प्रभुने दशवीश, चढता वलि तीश चालीश, पचाशनी पूजा जगीश ॥ पुष्पअक्षतफल नैवेद्य सार, जिनवर पूजाविधिप्रकार, धूपदीपमनुहार ॥ कलशअठोत्तरशतपूजाकरिये, चौवीशजिनवरध्यानज

धरियै, जिमभवसागरतरिये ॥ २ ॥ चैत्रीदिन-शुभवारमां लीजै, गुरुमुखथी एतपऊचरीजै, विधिसहितवहीजै ॥ सोलवरसएतपआराधीजै, आतमगुणनिजसंपदासाधी,पावे सहज समाधी ॥ तपपूरण उज्जमणोधारो, करिनेशासनशोभा वधारो, जिमहोवे भवनिस्तारो ॥ काउसग्गप्र-दक्षिणाकरिये, गुणनोगुणो जिनगुण सांभरिये, आगमविधिअनुसरिये ॥३॥ दोयटकपडिकमणो-कीजे, चैत्रीसेत्रुंजयात्राकरीजै, पुन्यभंडार-भरीजै ॥ छहरीपालीजेनरभेटे,संघपतिथइसहुदुख-मेटे, भववनमे नविलेटे, बारहपूनिमपर्वकहीजै, चारित्रतिथी शास्त्रमांहिलहीजै, चकेसरीसांनि धकीजै ॥ श्रीजिनकृपाचंद्रसूरिराजै खरतरगछ-जिनआणाछाजै, सुखरूपदासुसमाजै ॥ ४ ॥ इति चैत्रीपूनिमथुइ सम्पूर्णा ॥

॥ श्रीनेमिनाथजीनी थुइ ॥

नेमिजिनदा पूनिमचंदा, समसुख शोभता, शिवादे जाया, सहु मनभाया, इंद्रादिकसेवता, शौरिपुरमें त्रिभुवन सुखमें, प्रभुपरमारथी, सधमे साता, जगना त्राता, धर्मना सारथी ॥१॥ रिषभ जिनेसर, भुवनदिनेसर, अष्टापदसिववर्या, वीर-पावापुरी, पूज्यचपापूरी, निजकारजकर्या, गिर-नारगिरिपर, नेमिजिनवर, शिववधु करग्रह्यो, वीसजिनेसर, समेतसिखरपर, शिवमंदिरलह्यो ॥ २ ॥ जिनवरवाणि अमियसमाणि, मिठीजिम सेलडी, अधिकसुहाणि, भविमनमाणि, अमृत रसवेलडी, जिनगुणगाति, सगरसमाति, सुरव धुनावति, अनुभवरसगे, आतम उमगे, निजगुण ध्यावति, ॥ ३ ॥ अंबिकादेवी सुजसलहेवी, सुत

दोयलालती, शासनदेवी, सुरनरसेवी, संघरख-वालती, गोमेधयक्ष, सांनिधदक्ष, संघने कीजियै, जिनकृपाचंद्र सेवि, सूरिंद जगमे, जशलीजियै, ॥४॥ इति नेमिनाथ थुई सम्पूर्णा ॥

॥ अथपार्श्वनाथजोको थुई ॥

पासजिनराया वामाजाया, नगरी वणारसी, अश्वसेनराजा, जगमें ताजा,सबजनतारसी. वदि चोथदिवसे,चैत्र जगीसे, प्रभुजी अवतर्या, दशमी-पोष, जगसंतोष,सब कारजसर्या, ॥१॥ प्रथमजिने-सर,चारहजारे पास मल्लित्रयशत वीर इकेला,षट् सतसाथे, वासुपूज्य अहियत, उगणीस जिनपति सहस संघाते, संजम आदर्यो, कर्मखपावी,केवल पामी, निजकारजकर्यो ॥ २ ॥ जिनपतिवाणी, मीठीजाणी, स्वर्गे सुरवेलडी, साकरखंडे गुल

नहि मडेपी ल्रेरस सेलडी, द्राखवनमाहे, अमृत अमराई ञणपसु चावती, एसहुलाजी, जिनगुण गाजी,इन्द्राणी गावती ॥३॥ पारसयक्ष,कारजदक्ष करेसहुसघनो, च्यारछेराहु कच्छन साहु वरण सामल यनो, देवीपद्मा, सुखनीसद्मा, दियेसुख-सपद्दा जिनकृपाचद्र पभणे सूरिद, सेवे सुरनर सुद्दा । ४ । इति पार्श्वनाथ थुई सम्पूर्णा ॥

॥ श्रीमहावीर स्वामीकी थुइ ॥

आपाढ शुदि छठी स्वर्गथी चवियाईश, अश्विनवदि तेरस त्रिशलाकूखेजगीश । शुदि तेरस जनम्या चैत्रमास सुखकार, श्रीवीरजिन-नेसर वहुभावउदार ॥ १ ॥ मिगसरवदि दशमी साजमसु मनलाय, वैशाखसुदिमें केवल दशमी भाय,कातिअमावसि पाम्योपद निर्वाण, चोवीसे

जिनवर· आपो मुजसुख खाण ॥ २ ॥·अरिहंतप्रकास्यो, उपधानतपश्रीकार, नवकारइरियावहिनमुत्थुणं मनुहार, अरिहंतचेश्याणं लोगस्सद्रव्यस्तवजान, सिद्धाणंबुद्धाणं मालसातउपधान ॥ ३ ॥ विधिसेतिवहियै गुरुमुखसुण सुविचार, श्रीमहानिशीथे भाख्योए अधिकार, सिद्धायिकादेवीवांछितदै निरधार, जिनकृपाचंद्र सूरितपसेव्या जयकार ॥४॥

॥ इति महवीर स्वामी-थुई सम्पूर्णा ॥

अथ जंबुद्वीपनी वा पूनीमनो सज्झाय

जंबुद्वीप सोहामणोरे, लाख जोजन परिमाण रे, सुगुणनर पूनिम शसिसमजाणियेरे, लाल, आकारएह पहिचान रे ॥सु०॥१॥ वारिजाउ वाणि जिनतणी रे, ला० हुजाउ वारहजार रे, सु० वीर

जिणंद्दावचीरे, ल० बत्रुपन्नतीमभाग रे, सु० । वारि० ॥ २ ॥ नत्रखेत्रेकरि शोभतो रे, भरतादिक मनुहार रे, सु० कुलगिरिपरवत अतरे रे ॥ ला० रह्यामर्यादा धार रे, ॥ सु० वा० ३ ॥ महा विदेह विचराजतो रे, मेरसुदर्शण जाणरे, सु० लाख जोजन उ चोकह्यो रे, ला० गजदंताच्यार पहिचाण रे, ॥ सु० वा० ४ ॥ पट द्रव्य गिरिवर सहु भलारे, दोयसेगुणहत्तरपहरे, सु० निनेनदी मोटी कहीरें, ला० तीजीपरि वारनीतेहरे, ॥सु० वा० ५ ॥ कर्मभूमीमें मुनिवरारे, कोडसहसहमनवजाण रे सु० नवकोडीकेवलिनमु रे, ला० उत्कृष्टो परिमाणरे ॥ सु० वा० ६ ॥ धमध्याननोजाणिये रे, चोथो भेद अभिराम रे, सु० कृपाचद ध्यातायकारे, 'ला०

धामेअविचल धामरे, ॥सु० वा७ ॥ इति जंबुद्दीप सझ्झाय सम्पूर्ण ।

॥ क्रोधनी सज्झाय ॥

क्रोधमकरसो भोलाप्राणियारे, क्रोधथी थाये क्रोडकलेशरे । आधिव्याधि वधे घणी रे । धर्मनो रहे नहि लवलेसरे ॥ क्रो० ॥ १ ॥ बहुकाले जे तपजपआदरे रे । क्रोधथी खिणमां खेरुथायरे । कुणालानगरीना मुनि जाणिये रे । क्रोधथी दुरगतिमां ते जायरे ॥ क्रो० ॥ २ ॥ क्षण क्षणमां जे क्रोध करे मुनिरे । पापश्रमणते कहिवायरे । शिष्यनाऊपरक्रोध करी थयो रे, चंडकोशियो कह्यो जिनरायरे ॥ क्रो० ॥ ३ ॥ पोतानाआत्मगुणबाले सहिरे । पछेपरनोघरबालंतरे । अग्नि समान जाणो तुमे क्रोधनेरे । जे त्यागे ते मोटा

कहनरे ॥ क्रो० ॥ ४ ॥ अनतानुवध्यादिकचउभेद थी रे । नल्हेदरशनआदि समृद्धिरे । सूरिक्षपा॰ चद्रकहेधारज्योरे ॥ क्षमाथी पामेअविचलरिद्धिरे ॥ क्रो० ॥ ५ ॥

इति संपूर्णम्

॥ अथ मायानो सज्झाय ॥

॥ माया विषवेली । निपवेली । पतो दै दुरगतिमा ठेली । माया निपवेली० ॥प आकडी॥ मायानेलडी मनमा ऊगी । आर्यवलीलेडखेली माया ॥ नि० ॥१॥ मायाकायाजगमें भूठी, ममता माहि फहेली माया० ॥ २ ॥ कपट दपटकरिलो कनेधूते । यदुरुपेसरमेली ॥ माया० ॥३॥ आपा-ढभूतियेमाया मूकी । लहीशिवपदनीमेली ॥ माया० ॥ ४ ॥ मल्लिजिने-वपूर्वभवमे । मित्रयी

मायाकरेली । माया० ॥५॥ स्त्रीतीर्थंकरपाम्या तेहथी । उत्तमगुणगणमेली ॥ माया० ॥ ६ ॥ धुतारा बहू माया करके, धूतेजग जन हेली ॥ माया० ॥ ७ ॥ माया त्यागकरोगुरुरंगे । कृपा-चंद्र सूरिसुखवरेलो ॥ माया० ॥

॥ इति मायानी सभाय ॥

॥ अथ लोभनी सज्झाय ॥

॥ राग भरतरि ॥

लोभतजो भविप्राणिया, लोभेसबगुण जावे, लोभे सुखनविहूवे कदा, तो किम-निजगुणपावे ॥ लो० ॥ १ ॥ सागरसेठ बहु-लोभियो, नरकगयो निरधार, मम्मणतिम बहूला-जना, थया दुरगतिना भरतार ॥ लो० ॥ २ ॥ सुभूमचक्री साधनभणो, लोभपिशाचग्रहाणो,

मध्य समुद्रमा बूटीयो, प्रगोनरकनोराणो ॥ लो० ॥ ३ ॥ सुखमलोभजिहालो, शिवसुख अभिलापा, लोभशत्रु दूरेकरि, केवल ज्ञान प्रकाशा ॥ ॥ लो० ॥ ४ ॥ च्यार भेदलोभना कह्या, जिनगणधरदेवे, तेहतजी लहे क्रम थकी, निजगुणने सेवे ॥ लो० ॥ ५ ॥ च्यार कषायनिवारवा, कपायगजण तप कीजे, जिनकृपाचन्द्रसूरिदमभणे, वछितफलदीजे ॥ ला० ॥ ६ ॥

॥ इति लोभसज्झाय ॥

॥अथ दिवालीनी सज्झाय ॥

॥ हारे मारे ठामधर्मनाम्वाढापचवीश देशजो ॥ एदेशी ॥ हारे मारे दीवालिदिन आव्यो सजनी जाणजो । वीरजिनेश्वर अंतिम चउमासो रह्यारे लोल ॥१॥ हारे मारे पावापुरीमारसीया

त्रिभुवननाथजो । सोले पहेर लगे देशनादीधी सुखकरू रे लो० ॥ २ ॥ हांरेमारे पुन्यपालराजा-पूछेसुहणानोअर्थजो । भावीफलकह्योपंचमआरा-नोसहीरे लो० ॥ ३ ॥ हांरेमारे गौतमस्वामीने-मुंक्या बोधनकाजजो । अमावसनीरजनीयेप्रभु शिववर्यारे लो० ॥ ४ ॥ हांरेमारे चोसठ सुरपति आव्या ततखिणठामजो । कल्याणक निर्वाणनो उच्छव सोकशुं रे लो० ॥ ५ ॥ हांरे मारेपाछा-वलतागोतिमजाण्यो निर्बाणजो । वज्राहत परे-मुर्छितथईजागृतथयारेलो० ॥ ६ ॥ हांरे मारे विविध विलापकरे श्रीगौतम स्वामीजो । वीत-रागथईकेवललच्छिपामीयारे लो० ॥ ७ ॥ हांरे-मारे काशी कोसल देश तणागणरायजो । अढारेमिलि षोसह विधिशुं आदर्यो रे लो० ॥८॥

हारेमारे भावउद्योत गया थका द्रव्य उद्योतजो । रयणमु कीने दीवालिकरीतिनसमेरे लो० ॥ ६ ॥ हारेमारे गौतम केवलमहिमाकरे॰ इजो । भाइबीजजमाड्यो वेहनीयेमाइने रे लो० ॥ १० ॥ हारेमारेदिवालिनोछठकरी चौवीहारजो । सोलपहोरनो पोसहतप आराधियेरे लो० ॥११॥ हारेमारे गुणनोकरी परभाते मगल काजजो ॥ गौतमस्वामीनु एकासणोकरे भावशु रे ॥लो०॥ ॥१२॥ हारे मारे दीवालीपर्वलोकोत्तर लोकीक जो । परसिधथयोकारतिकवदिअमावसेरे लो० ॥ ॥ १३ ॥ हारेमारे पर्वाराधनकरोभविमनउछरग जो । जिनरपार्श्वप्रसुरिवहेतुलसपतिवरो रे लो० ॥ १४ ॥ इतिदीवालीनी सज्झाय ॥

अथ द्वितीयमान कषाय सज्झाय

मानवभवपामीकरीजी। विनयकरोनिशिदीस। मानमहागज टाळवाजी। भाखे श्री जगदीस। चतुरनर मेलोमाननीवात। जिमथाये सुखसात। च० मे० ॥१॥ मोहमहाराजातणोजी मानएअंगजजाण। जातिमदादिकएहनाजी ॥ परिकरजाणो सुजाण ॥ च० मे० ॥ २ ॥ मानतणे वस जे पड्या जी ॥ तेहरझड्यासंसार। मानत्यागथी बाहुबलीजी। पायोकेवलसार ॥ च० ॥ ॥मे०॥ ३ ॥ विनयथीविद्यासंपजेजो। समकितलहेसुखकार। चारित्रपालिनिरमलोजी। पोहचेमुक्तिमझार ॥ च० ॥मे०॥ ४ ॥ रावणराजगमावियोजो। दुर्योधन दुखलीन। प्रतिविष्णुनरकेगयाजी। माननीसंगतिकीन ॥ च० ॥ मे०॥

॥५॥ विनयमूलजिनधर्मनोजी । भाख्योश्रीजिनराज, सूरिकृपाचंद्रगुणस्तनेजी । विनय जाणो सिरताज ॥ च० ॥ मे० ॥ ६ ॥

इति मान सज्झाय ॥

॥ अथ नवपद सज्झाय ॥

कृपानाथ सुजनिनतिमवधार ॥ एदेशी ॥ सिद्धचक्रफल्दायकव्योजी, श्रीगौतमगणधार, नृपश्रीपालआराधिनेजी,पामशेभवनोपार, सुज्ञानि नवपदमनमाधार, जिमल्होसुखकअपार ॥ सुज्ञानि० ॥ १ ॥ तीनतत्वआराधसोजी, देव-गुरुनेधर्म, दोयतीनचउभे छेवजी जाणो नवपद मर्म ॥ सुज्ञानि० ॥ २ ॥ अरिहन्त सिद्ध दोय-देवनाजी भेदल्हो सुजाण, आचारज पाठक वलिजी, मुनि त्रण गुरुतत्वजाण ॥ सुज्ञा० ॥

॥ ३ ॥ दर्शनज्ञानचारित्रछेजी, तपचोथोधर्मभेद
एत्रणतत्वनाजाणजोजी, नवपदसेवो उमेद ॥सु०
॥४॥ कालअतीतजेसिद्धथयाजी, वर्तमानमांथाय,
अनागतमांशिवपामसैजी, तेनवपदसुपसाय
॥ सु० ॥ ५ ॥ नवपदनापरभावथीजी, नवनिधि-
प्रगटेसार.आधिव्याधिदूरेटलेजी, कहेश्रीजगदाधार
॥ सु० ॥ ६ ॥ नवआंबिलओलीकरीजी, जापतां
नवपदजाप. त्रणटंकदेववंदनकरोजी, काउस
ग्गथी जायपाप ॥ सु० ॥ ७ ॥ नवओली विधि-
युतकरीजी, उज्जमणो निरधार, गुरु मुखथी
विधिजाणीनेजी, संघभगतिसुखकार, सु० ॥८॥
नवपदध्याता आतमाजी, तेनवपदकहिवाय,
जिनकृपाचंद्रसूरिसेवताजी, निरुपाधिकसुखथाय
सु० ॥ ९ ॥ इतिनवपद सज्झाय ॥

॥ अथ वीजनीसज्झाय ॥

॥ पणीहारीनी देशी ॥

वीजअराधोभविजना म्हारावालाजी, जिम पामो भवपारवालाजी ॥ दोयभेदजिनवरकह्या । म्हारावालाजी ॥ धर्मनणा दिलधार 'वालाजी ॥ वी० ॥ १ ॥ देसविरतिश्रावकतणो ॥ म्हा० ॥ धारे भेद कहेवाय ॥ वा० ॥ सर्वविरति वीजो- सही ॥म्हा०॥ महाव्रतपांचमनभाय ॥वा०॥ वी ॥ ॥२॥ दोयशिक्षा ग्रहनी सदा ॥ म्हा० ॥ ग्रहणा सेवनसार ॥ वा० ॥ ग्रहण गुरुमुखजाणीये ॥ म्हा० ॥ आसेवनसुप्रकार ॥ वा० ॥ वी० ॥३॥ समकित दोयप्रकारनो ॥ म्हा० ॥ रूपीअरूपी- जाण ॥ वा० ॥ क्षयोपशमरूपी 'कह्यो ॥ म्हा० ॥

भिन्नभिन्न अरूवीआण ॥ वा० ॥ वी० ॥ ४ ॥
दुविह जीवजगजाणीये ॥ म्हा० ॥ संसारी-
मुक्ति प्रकार ॥ वा० ॥ संसारीवहुभेदना ॥म्हा०।
पुहवीआदिदुगवार ॥ वा ॥ वी० ॥५॥ निर्वाणना
पन्नरेविध ॥ म्हा० ॥ जिनअजिनादिसार ॥वा०॥
सादिअनंतथितिकही ॥ म्हा० ॥ ध्यावोभविक
सुखकार ॥ वा० बी० ॥ ६ ॥ नयनदुविधप्रभुभा-
खिया ॥म्हा०॥ द्रव्यपर्यायविचार ॥वा०॥ द्रव्य-
भेद षट् सासया ॥म्हा०॥ पर्यायअनंतासार०
॥वा०॥ बी०॥७॥ उपयोगद्विकवखाणीये ॥म्हा०॥
साकार ज्ञानसुजाण ॥वा०॥ अनाकर दरसणकह्यो
॥म्हा०॥ भेद ए मनमां आण ॥ वा० ॥ ॥बी०॥
॥८॥ उपवासादिककीजीये ॥म्हा०॥ धर्म सुकल
ध्यावो ध्यान ॥ वा० ॥ जिनकृपाचंद्रसूरिभणे-

।।म्हा०।। मुक्तितणोनिदान ॥ वा० ॥ ।।री०।।६।।
इतियोजनी सज्झाय संपूर्ण ।।

।। अथ पाचमनीसज्झाय ।।

।। कृपानाथ मुजवीनतिअवधार एदेसी ॥

सुगुरुचरणप्रणमीकरीजी सुयदेवी सुपसाय। ज्ञानप्रगटकरवामणीजी। बहु नाणसज्झाय। भविकजननाणवडोए सार ।।१।। नाणभवनदीपक-कह्योजी। सर्वजीव सुखकार। विनानाणनरभव-कह्योजी पशुतणे अनुकार।।भ०। ना०।।ना०२।।नाण थी शिवसुखसंपजेजी। नाणथीपरमकल्याण वरद् त्तनेगुणमजरीजी। एहचरित्रमनआण ।। भ० ।। ना०।।३।। नाणविराधोविद्दुजणाजी। पुरवभवमा तेह। भणवोगुणजो निषेधिनेजी। फलपाम्योतेनिण

मनथी जेह नरनार। शून्यचित्तमनमूढताजी। अविवेकीनिरधार ॥भ०॥ना०॥५॥ वचनेजेआशातनाजी। अवरणवादवदेजेह, तोतामु'गावोवडाजी, खलितवचनहोवे तेह ॥भ०॥ना०॥ ६ ॥ कायाकरी विराधनाजी। करताजेमतिहीण। कोढी पांडु पांगुलाजी। आंधला होवे दुःखलीन॥भ०॥ त्रिकरणकरीविराधनाजी,नाणनीकरे दुःखदाय, संसार सागरमां रुलेजी, पभणेश्रीजिनराय।भ०।ना०।प्र। ॥ना०ह८॥नाणसेविसुखियाथयाजी, वहुलाजनसंसार ॥ जिनकृपाचंद्रसूरिसदाजी । नाणनमो सुखकार ॥ भ० ॥ ना० ६॥ इति ॥

॥ आठमनी सज्झाय ॥

॥ समकितमूलगु'भारेपेसताजी-ए देशी ॥

अपारजी । आठकर्मनेजीतवाकारणेजी । ए तप-
सेविलहोसुखसारजी ॥आ०॥१॥ आठप्रमादतजीने
पालीएजी। प्रवचनमाता आठजी ॥ पांचसुमति
त्रणगुपतिकहीजी । एहथीहोवेसजमठाठजी ।आ०।
॥२॥ इरियासमति वरदत्तमुनि करीजी । भाषा
सागतमुनिसुविचारजी । एषणानंदिषेणउजवाल-
तोजी । सोमिल चोथीनो अधिकारजी ॥आ०॥
॥३॥ मुनिचंद्रपरिठावणसुमतितणोजी । कोकण
मनगुप्तिदृष्टांतजी ॥ गुणदत्तवचननो उपयोगी
थयोजी । अरणक कायगुप्ति सुप्रशांतजी । आ०।
॥ ४ ॥ इंद्रियआठने वसकरी साधियेजी ।
आठमोगतिगुणस्थानजी॥ श्रीजिनचंद्रसूरिसेव-
नाजी,वचनामृत मनआणजी ॥आ०॥५॥इति॥

॥ एकादशीनो सज्झाय ॥

वीरा म्हारा गजथकी उतरो-ए देशी,

इग्यारस आराधिये । विधियुत सांजमवंतारे, अंगइग्यारह आराधवा । एतिथी सेवो उजमंतारे ॥ इग्या० ॥१॥ ए तिथीकर्मक्षय कारणी । भाखीश्रीजिनभाणोरे, कल्याणक बहुलाथया । ते सहु दिलमां आणोरे ॥इग्या॥ २ ॥ अरनाथदीक्षाआदरी । नमिलह्यो केवलनाणरे । जन्मदीक्षा-केवलज्ञण । मल्लिजिनना कल्याणरे ॥ इ० ॥ ३ ॥ मागसर सुदि इग्यारसे । भरत पांचमा जाणोरे । एरवत क्षेत्रमा इमहजि । कल्याणकपहिचानोरे ॥ इ० ॥ ॥ ४ ॥ दसक्षेत्रना पच्चास छे । तीन-कालना गणीयेरे । दोढसोकस्याणकथया । समरण करी दुःखहरियेरे ॥ इ०॥५॥ एटलाबीजीइग्यारस ।

त्रणकालनाजाणीरे । त्रणसोकल्याणकनमो । गु
णनोकरोगुणखानीरे ॥ इ० ॥ - ॥ अठपोहरी
पोसो करी । मोनव्रतन्इ भावेरे । चउविहारउप-
वासथी । अशुभकरम मिटजावेरे ॥इ०॥७॥ सुव्र
तशेठपोसो कर्यो । मोनसहितमनरंगेरे । अग्निनो
उपद्रव मच्यो । सुजस रह्यो सुपसंगेरे ॥ ८ ॥
चोरथभानातपथकी । अचरजथयोसहु जवमेरे,
राजादिके आटो कीयो । सुव्रत सुकृतकरमेरे
॥ इ० ॥ ६ ॥ खरतरगच्छगुणमणी समो । जिन
आणारगधारिरे । जिनहर्षपाचन्द्रसूरिमणे ।
आगमसेत्रोइकतारीरे ॥इ०॥१०॥ इति ॥

॥ पूनमनी सज्झाय ॥

[मेतारज मुनिवर धन २ तुम अणगार एचाल]

सुगुरु चरण प्रणमीकरीजी, सुयदेवी सुपसाय ॥ चारित्रतिथि आराधवाजी, कहुं पूनिम सिज्झाय । गुणवंताभविजननिसुणो-जिनवरवाणि । १ । रिषभ जिनेसरजगधणिजी, विचरंतादेसविदेश, सेत्रुंजसिखरेसमोसर्याजी, आव्या इंद्रनरेश॥गु०॥२॥समवसरणसुखररच्योजी वेठात्रिजगभाण ॥ तीरथमहिमादाखिनेजो पुंडरीक मनआण । गु०।३। प्रभुभाखे गणधर भणोजी, इण तीरथपरभाव ॥ शिवकमलातुमे पामसोजी,सांवरो आतमस्वभाव ॥ गु० ॥ ४ ॥ फागुणशुद्पूनिमदि-नेजो, अणस णकोधासुजाण। पाचक्रोडपरिवार सुंजो, पुंडरोक सुखखाण ॥ गु० ॥ ५ ॥ चेत्रो

दिनकेवलरहीजी, पाम्योभवनोपार ॥ पुंडरीकतेह-थीययोजी, नाम एहसुखकार ॥गु०॥६॥ चैत्रीदिन तपकीजीयेजी । पूजाविविधप्रकार ॥ दशत्रीशत्री शचालीसनोजी । पचासनी करोसार ॥ गु० ॥ ७ ॥ कार्त्तिकीपूनिमदिनेजी, द्राविड वारिखिल्ल जाण । सिद्धिवधूरगेवर्याजी, दशकोडीगुणखाण ॥ गु० ॥८॥ पूनिमदिनचारित्रनोजी, आराधनसु-विचार, भावभले आराधताजी पामेभवनोपार ॥गु०॥ ६ ॥ दर्शनज्ञानचारित्रनोजी, तिथोभाखी जिनराज, सेवंताशिवसंपजेजी, सारेवांछितकाज ॥ गु० ॥१०॥ चन्द्रोदयसमजाणियेजी, पूरणधर्म-सुज्ञाण, जिनरंगाचन्द्रसूरिसदाजी, सेवोगुणमणि खाण ॥ गु० ॥ ११ ॥ इति पूनमनो सज्झाय ॥

॥ घुमर देशी ॥

सरसति स्वामणी समरीने, एतो सद्गुरु-चरण नमीनेहेमाय, पर्युषण गुण वरणवु, एतो शास्त्र मांहि सुणोनेहे माय १ पर्व आराधो भवि-यणा, एतो सहु पर्वमा सिरदार है, माय तीर्थों-मां शेत्रुंजगिरि, एतो मंत्रोमां नवकार है, माय० पर्व आ०२ देवमां वीतराग देव छे, एतो गिरि-मांहि मेरू कहायो हेमाय, नदीयांमें सिरोमणो, एतो गंगा नाम धरायो है, मा०, पर्व० ३ कल्प-वृक्ष चिंतामणि, एतो कामगवी अधिकारी हे माय, इमहीज पजुषण वलि, एतो सेवो भविक सुखकारी है, मा० पर्व० ४ कल्पसूत्र सुणोइकम-ना, एतो एकवीश वार मनुहारी है, मा० भव-सागरतरवातणो, एतो उपाय कह्यो गणधारी है,

मा० पर्व० ५ आश्रवपाचेपरिहरि, एतो कषाय चउ निवारीहैमाय, दानादिकधर्मसेवीने, एतो-जिनपूजादिलधारीहे, ॥मा०॥ प० ॥६॥ जिनदरशन अधिकारमे,एतो आरद्र कुमार अधिकारी है,॥मा०॥ दरसनफरसनयोगसें, एतो चरण करणगुणधारी है, मा० । प० ७ । अमारीपडह वजडावीये, एतो आठदिवसमनुहारी है, ॥ मा० ॥ जिनकृपाचन्द्रसूरि भणे, एतो पर्व सेवोइकतारी है, ॥मा०॥ प० ॥८॥ इति अट्डाइ सज्झायस० ॥

पर्युषणाकी सज्झया ।

॥ ज्ञानादिक गुण सपदारे ए देशी ॥

पर्व पजुसण आवीयारे,सर्वजीवने सुखकार, पूरव पुन्य, पसाउलेरे, लह्यो मानव अवतार,

सुज्ञानी सेवज्योरे, सेवज्यों पर्व प्रधान, ॥सुज्ञा०॥
॥१॥ चैत्य जुहारी भावथीरे, देव वंदन दिलधार;
द्रव्यभाव पूजा करोरे, यथाशक्ति निरधार,
॥ सुज्ञा० ॥ १ ॥ चउत्थ छठ अठम करोरे, पक्ष
खमण, वलि मास, उपवास करो शुभ भावथीरे,
लहो अक्षय सुखवास, ॥ सुज्ञा० ॥ ३ ॥ दानदेवो
सुपात्रनेरे, शीयलपालो मनरंग, कर्मक्षय कारण
कह्योरे तप उत्तम विधि संग ॥ सुज्ञा०॥४॥ ज्ञान-
भक्ति करवाभणोरे, कल्प सूत्र पधराय,रात्रि जागो
रंगथीरे, धवलमंगल, वरताय,॥सुज्ञा० ॥५॥ वर-
घोडेमां संघ मलीरे, हय गयरहशर साथ, चउ-
विहवाजित्र वाजतांरे, आपो सुगुरूने हाथ ॥
॥सुज्ञा०॥१॥ सुर्यजशा जिम तप करोरे,जिनआणा
दिलधार, कल्पसूत्र सुणो इकमनारे, पूजा प्रभा-

वना सार ॥ सुज्ञा० ॥७॥ नव इग्यारे तेरे सुणोरे, वाचना श्रुत अनुसार, जिन कृपाचंद्रसूरि सदारे, भव भव धर्म आधार ॥सुज्ञा०॥८॥ इति पजुषण सज्झाय स० ॥

॥ आज आपे चालो सहिया सिद्धाचल गिरि जइये ए देशी ॥

पर्व पजुषण आव्या सजनी, चालो आपण जइये, देवगुरुना दरसण करीने मनवांछित फलग्रहियेरे ॥ पर्व० ॥ १ ॥ अठाहिमें अमारी पडावो, आव जयणा करावो, सव जीव सुख कारी जगमें जैनधर्म मनलावोरे ॥प०॥२॥ कल्प सूत्र वरघोडो करीने सुणो वखाण निहलाइ, पडिवारे दिन गणधरवारी, वांचना सुखदाइरे ॥ प०॥३॥ सिद्धारथ राजा घर सुखकर, त्रिशलाकुमारि

मिलआइ, सूतिकर्म करी प्रभुमाताने, स्नान करावे वरदाइरे ।।प०।।४।। चोसठ इन्द्र सुमेरुशिखर पर, स्नात्र करे रंगलाइ, बत्रीस कोड़ सोनइया वरसाके,प्रभुजीने निज घरलाइरे ।।प०।।५।। बालपणे आमलकी क्रीडा करि, महावीर नामपायो, लेखकशाला जइने आव्या, जय जयकार वरतायोरे ।।प०।।६।। मिगसर वदि दशमी दिन दीक्षा, लीनी मनमां उमंगे, परिषहरिउवलदूरनिवारी, केवल लह्योसुख संगेरे ।।प०।।७।। चउविहसंघने थापीजगतगुरु, विचर्या देश विदेश, कातिकवदि अमावस राते,शिवपद पाम्यो जिनेशरे ।।प० ।।८।। षट्कल्याणक वीर प्रभुना, भद्रबाहु स्वामी भाखै, श्री जिनकृपाचंद्रसूरिसेवो, कल्पसूत्रनी साखेरे ।। ।।प०।।९।। इति एकमनी साझायसं० ॥

॥ श्री जिनवाणिरे धन्नाऽन्देशी ॥

पास सोभागी होजिनजी, तुमथी रढलागी मोराजिनजी, दशमवकेरोरे मवन्ध सोहायणो ॥१॥ वणारसी नगरी होजिनजी, जनम्याछेसुखदी मोरा जिनजी, पोषदशमी कल्याणकरीजोथयो ॥ २ ॥ इग्यारस दीक्षाहो जिनजी कमठने दीधी सीक्षा ॥ मो० जि० केवल पामीरे शिव रमणी ल्ही ॥३॥ नेमिजिनेसर हो जि० जगपरमेसर मो० जि० सोरी पुरमारे प्रभुजी जनमीया ४ गिर नार उद्यानमेहो जि० दीक्षा सुपचान मो जि राजीमती तजी सजमआद्र्यो ५ केवल पायो हो जि० सुजससवायो मो० जि० सव पापीने प्रभुजी विहरीया ६ रथनेमी समजावीहो जि यम्यो आहार यनाजी मो० जि० राजी

मतिये संजअ आदर्यो ७ वस्त्र सुकावे हो जि० ६ह नेमीने दृढलावे मो० जि० कर्म खपावी बिहुं मुगते गया ८ नेमो जिनराजहो जि० मुक्ति सिरताज मो० जि० सहसवरसनो आयु पालीने ९ तेवोश आंतरा जाणो हो० जि० चोथे आरे प्रमाणो मो० जि० श्रीजिनकृपाचंद सूरि पर्व सेतोसदा १० इति बीजनी पर्युषणा नी ॥ स०॥

॥ तीजकी सज्झाय ॥

॥ धारणी मनावेरे मेघकुमारनेरे-ए देशी ॥

आदीसर अलवेसरने नमोरे, सद्गुरु चरण पसाय, सिझाय कहस्युरे पर्युषण तणोरे, सुगुणा जनमनलाय ।१।भविजन सेवोरे पर्वसोहा

मणोरे, वाछितफल दातार, लोकिक लोकोत्तरमा इणसमोरे, दूजो नहि सुखकार ॥ भवि० ॥ २ ॥ त्रीजे आरे प्रथमजिनेसररे, उपन्या भरतमझार, नाभिकुलगर मरुदेवामलीरे, जिणजाया जगदा-धार ॥भवि०॥३॥इक्ष्वाकवंशथाप्यो इन्द्र आवीनेरे परणाव्या दोय नार, जुगला धर्मनिवारण कारणेरे, परावरतन कीधो सारभ० ॥वि०॥४॥ राज्य पामीने प्रभुजी थापिनेरे, लोकतणो व्यवहार, भरतादिक सो पुत्रने सीखवीरे, बहुत्तर कला मनुहार ॥ भवि० ॥५॥ ब्राह्मी सुंदरी बिहुं कन्या भणीरे, लिखनकला विस्तार आजीवकाना कारण सीखव्यारे,शिल्पकर्मादिक सार ॥भ०॥६॥ भरतादिकने राज देइनेरे, प्रभु लीनो संजमभार, वरसीतपपारणो आवानीजनेरे, करावे

६ ॥ अथ पजुसणको सज्झाय ॥

सखि पर्व पजूसण आव्या, भवि जनना मनमा भाव्या। एमा आश्रव पाच हटाव्या एतो सर्व जीव सुख पाव्या सनेही पर्व पजुसण सेवो एतो सेवी शिव सुख लेवो सनेही पर्व० ॥ १ ॥ श्रीवीर जिनेश्वर भाखे, ए पर्वसेवो श्रुत साखे। श्रीभद्रबाहुस्वामी दाखे। एतो कल्पसूत्र मभाखे॥ स० पर्व० ॥२॥ आठ दिवस अमरपलावे। जिन चैत्ये पूजा रचावे कल्पसूत्र घरे पधरावे। देवे रात्रि जागोभले भावे॥ स० पर्व० ॥३॥ रथ हय वर गज गणगारे। शासननी शोभा वधारे। वाजित्रध्वनि मनुहारे वरघोडो सजे दिलसारे॥ स० पव० ॥४॥ आडंबर करिने लावे। श्रीकल्प-सूत्र शुभभावे। रूड्गुरुने हाथे ठावे। सहुमिल

मंगल गावे ॥ स० पर्व० ॥५॥ सद्गुरुनी मोठी वाणी । सुणो चउविहसंघ गुण खाणी । मनमां अति उल्लट आणी संसारतरे भविप्राणी ।स०पर्व० ॥ ६ ॥ इकवीस वार सुणीजे । पूजा परभावना कीजे । छठ अठमचौथ करिजे । सुणी वीरजन्म जसलीजे ॥ स० पर्व० ॥ ७ ॥ अषाढचोमासेथी जाणो । पचास दिवस परमाणो । संवच्छरी पर्व कहाणो । भाखे श्रीजिनवर भाणो स० पर्व० ॥ ८ ॥ इम पर्व आराधन करिये । पंचकारण मनमां धरिये । श्री जिनवाणी अनुसरिये । जिन-कृपा चन्द्रसूरि जस वरिये ॥ स० पर्व० ॥ ९ ॥

॥ इति श्रीपजूसणपर्वनी सज्झाय सम्पूर्णम् ॥



॥ दश अच्छेरानी सज्झाय ॥

नदीसर गावन जिनालय ए देशी ॥

अरिहंत देवने नमनकरीने, गाऊं गुणगुरु-जननारे,सरसतिनो समरण करी चित्तमा,अच्छेरानो कहु वरणनारे ॥ १ ॥ सुणोसुणो सुगुणा श्रीजिनशासन, जेहथी कर्ण पवित्ररे, जीवाजीव स्वरूपने जाने, जाणणो जगमित्ररे ॥ सु० ॥२॥ उत्कृष्ट अवगाहना सीधा,इक समय एकसोआठरे, ऋषभदेव नवाणु पुत्रो, भरतनापुत्रवली आठरे ॥सु० ॥ ३ ॥ पहलो एह अच्छेरो जाणो, वीजो हरिवंशकुन्नोरे, जुगलिया नरकगया तेकारण, अछेरो थयो एहुलोरे ॥ सु० ॥ ४ ॥ सात अंतर माही असंजतीनो, पूजा थई ते त्रीजोरे, सुविध

जिनेसरथी सांतिलग, अच्छेरक एगणजोरे ॥सु० ॥ ५ ॥ कृष्णगयो धातकी खंडमां, संखशब्द करी मलियोरे चोथोअचरिज ए कहिवाणो, तिहांथी पाछो फरियोरे ॥ सु० ॥६॥ मल्ली जिनेसर स्त्रीतिर्थकर, पांचमो आश्चर्यकहियेरे, भिन्नभिन्न समय ए पांच, अचरज शास्त्रथी लहियेरे ॥ सु० ॥७॥ पहली प्रभुनी देशना निष्फल, चमरनोथयो उत्पातरे, गोशाले तेजो लेश्या मूकी, समवसरण मुनिघातरे ॥सु०॥८॥ चंद्रसूरज मूलगेरूपे, आया वांदवा काजेरे, ब्राह्मणी कूखे उपना चरम जिन, दशमो अचरिज छाजेरे ॥ सु० ॥९॥ पांच अच्छेरा महावीरनी वखते, हुवा इण विध जाणोरे, प्रथमनां मेल्यां दशनीसंख्या, इम करी मनमां आणोरे ॥ सु० ॥ १० ॥ अनंतकाल गया-

ए होवे, तेह आश्चर्य कहेवावेरे, अघटित घटि जो कहे लोको, तिमअचरिजमन भावेरे ॥ सु० ॥ ११ ॥ वीरप्रभुनो शासनजयवतो, मोक्षतणो ए कारणरे, श्रीजिनकृपाचन्द्रसूरिसेवो,भवभय दु खनो वारणरे ॥ सु० १२ ॥ इति अच्छेरानी सज्झाय सम्पूर्णम् ।

॥ रोहिणी सज्झाय ॥

धारणीमनावेरे मेघकुमार नेरे एदेशी ।

चपानयरीजगमाहीपतोरे, अग देशमें जाण,मघवा राजा राज्यकरे तिहारे, दिनदिन चढतेवान ॥१॥ भविजनसुणजोरे रोहिणीतपतणोरे, महिमाअगम अपार, लक्ष्मीनामेपटराणी रायनीरे, रूपवनी- सुकुमार,॥२॥ भवि० आठ पुत्र जाया तिणेसुन्दरे,

देवकुमरअनुकार,तेउनेउपरेकुमरी अवतरीरे रोहिणी नामेउदार ॥भवि०॥३॥चित्रसेन परण्यो स्वयंवररे इमभोगवताभोग आठपुत्रच्यारपुत्रीउपनारे, पुन्य तणे संयोग ।भवि०।४। क्रीडाकरता बालखेलाव-तारे,रोहिणीये दीठीएकनार,पुत्रमरणथीतेहविलप तीरे, आंसुनीवहैधार, भवि०॥५॥ रोहिणी हसति राजाने कहेरे, एनाढैकिमनार राजा कहेए पुत्र वियोगथीरे,तुनहींजाणे दुखदार,भवि०॥इमकहीरा जासुतने नाखीयोरे, हाहारवथयोतेण,रोहिणी कहे पुत्र नीचे किमगयोरे,राजा रोवेदुहेण ॥भवि०॥७॥ सास देवतासिंघासणठव्योरे, नाटककरैबहु भांत, राजामनमांचिंते ज्ञानि गुरु मलेरे,तोपूछुं सुतवात, ॥भवि०। ८॥ ज्ञानि पधार्या राजावीनवेरे, सुतपूर-घभवस्याम, पूरवभवमांरोहिणी तपकर्योंरे, तेहनो-

फल सुखकाम ॥भ०॥६॥ राजाराणी तपविधि आदरीरे, उज्ञमणोकरेखास, पुत्रसहितराय राणि- दोक्षालेवेरे, वासुपूज्य जिनेसर पास ॥भ०॥१०॥ कर्मखपाविसहुसिद्धिलह्यारे, राजादिकसुप्रकार. श्रीजिनकृपाचन्द्रसूरिसेवो सदारे,तपउत्तम जयकार ॥भ० ११॥ इति रोहिणीस० ॥

आचार्य श्रीमत्-
जिनकृपाचन्द्रसूरिविरचिता :

॥ दोहा ॥ स्वस्ति श्री मंगलकरण । थंभण पास जिनंद ॥ प्रणमी पदपंकज सदा, प्रभुना । घरि आनंद ॥१॥ तीरथ जगमाहिं घणा । तेहमां इच्छे विशेष ॥ शत्रुंज रैवतगिरिवरु । वर्णन, करू हमेस ।२।

॥ दोहा सोरठा ॥

सोरठ देश सोहामणो । सऊदेशां सिरदार । तेमांहि तीरथ प्रगट । श्रीगिरिवरगिरनार ॥ ३ ॥ कल्याणक जिहां त्रण थया । दीक्षाज्ञान निर्वाण नेमिजिणंद वखाणिये । यादव कुलनभ भाण ॥ ४ ॥ पूजारचु गिरिराजनी । मनमां धरि अति खंत ॥ पूजानी विधिमेलवी । भाव अधिक उलसंत ॥ ५ ॥

ढाल रागनी देशाक मताल

अनेन रागेण गीयते ।

पूर्वमुख सावनं करिदशन पावनम् । एदेशी ॥ पूर्वभवि शुचिथई शुद्धअनुभव लई ॥ करधरी कलश शुचिजल उदारम् ॥ १ ॥ पहिर खीरोदकं

वाधि मुहकोशक ॥ धूपवासित सदोत्तरीय सार ॥ २ ॥ गंगा सिंध्वादिना, खीरसागर तणा। तीर्थजल औषधि मिश्रकीजे ॥ मि० ॥ ३ ॥ आठ जातीतणो, कलशभरि निर्मला, स्नात्र प्रभुनी रचे सुरगिरीन्दे ॥अ०॥४॥इम भविभावकरि शुद्ध समकित धरि। जिनतणो पूजकरो चित्तधारि। अ० ॥५॥ ओं ह्रीं श्रीपरमात्मने अनंतानंतज्ञान शक्तये गिरिनारगिरौ श्रीनेमिजिनेंद्राय जलं यजामहे स्वाहा ॥ १ ॥

अथ २ पूजा।

दोहा ॥ नेमिजिणंद दिणंदसम। शिवसुख तरूनोकंद रैवतगिरिनाभूषणो। पूजनकरो आनंद ॥ १ ॥ घनसैशार मृगमदमति, बावनचन्न

संग। अम्बर घनसार मेलवी, करौ विलेपनै अंग ॥ २ ॥

॥ रागनी भैरवी ॥

विलेपन करियै प्रभुजीके अंग ॥ वि० ॥ जिनवर—कीतनु फरसन सेती। पामेजिन गुण संग ॥ वि० ॥ पारसफरसत लोहा कंचन, तिम होवे कीटकभृंग । वि० ॥ २ ॥ शिवादेवी अंगज होप्रभु, श्यामवरण द्युति चंग । वि० ॥ ३ ॥ चरण युगल कछपसम प्रभुना, करपंकज जलसंग । वि० ॥ ४ ॥ वदनचंद्र अकलंकित कीनो, भाल अध शशि अंग ॥ ५ ॥ निलोत्पलसम नेत्रयुगल फुनि, कामराग थयो भंग। वि० ॥ ६ ॥ केशर चंदन मृगमद अम्बर प्रभुपूजो मनरंग । वि० ॥ ७ ॥ ओँ ह्रीँ ० केशरंचंदनं यजामहे स्वाहा २

अथ ३ पूजा ।

दोहा ॥ तृतीयपूजा जिनवरतणी करै, भविक उजमाल । फूलसुगंधी लेईने चाढे भरिभरि थाल ॥ १ ॥ समवसरणमा सुरकरै पुष्पवृष्टिधरिभक्ति, तिम श्रावक शुभ भावथी पूजाकरै यथाशक्ति ॥२॥ रागनी वृ दावनी सारंग ॥ प्रभु अरचा रचो मिल भविजना । नानाविधना फूलसुगंधी लेईतुम धावो इकमान ॥ प्रभु० ॥ १ ॥ त्रिकरण योगकरी प्रभुपूजो, चित्तधरो शुभभावना ॥ २ ॥ चारनिक्षेपै जिनवर जाणो । मनमंदिर मंलावना । प्रभु० ॥ ३ ॥ अनुयोगद्वार आवश्यकसूत्रे येदनिक्षेप ॥ सुहावना ॥ प्रभु० ॥४॥ ठवणासमवसरण त्रिहुं दिशिमा आवो भावप्रहावना ॥ प्रभु० ॥ ५ ॥ द्रव्यजिनवर श्रेणिक पमुहा । नाम ऋषभादि

॥ रागनी सोरठा ॥

सेवो भविनेमिजिणद सुखकारा, करि धूप धूम मनुहारा ॥ सेवो भवि० ॥१॥ गिरिनार गिरि मडण दुख खडण भविजन कीधसुधारा । कर्म प्रबलदलदा यह करनमिस, धूपदहोसुविचारा ॥ सेवो भवि० ॥२॥ सोरी पुरमें जन्म प्रभुनो,समुद्र विजय कुलभाणा । शिवादेवो शुचित मुक्ताफल । चित्रानेक्षत्र वखाना ॥ सेवोभवि० ॥ ३ ॥ चवन जन्म कल्याणक प्रभुना । सोरीपुरमे जाना । गिरिनार गिरिपर सहसावनमें । दीक्षाग्रही सुख खाना । ॥ सेवो भवि० ॥ ४ ॥ चोसठ इन्द्र करे उछरंगे । जिन सेवा मनुहारा । कृपाचंद्रप—प्रभुने जाणो निश्रेय सदातारा ॥ सेवो भवि० ॥ ५ ॥ ओं ह्रा० धूप यजा० ॥२॥

॥ अथ पाँचमी दीपक पूजा ॥

दोहा ॥ पांचमी,पूजा दीपनी,प्रगटेज्ञान उद्योत । करो भविक जगनाथनी, मन वांछित सुख होत ॥१॥ शिवादेवीनो लाडलो, अतुल वली वडवीर । स्याम सलुणो नाहलो, नेमिनाथ सुखसीर ॥ ॥

रागनी कल्याण ।

अहो प्रभुपूजा रचो चित्त चंगे ॥ अहो० । रेवतगिरिपर नेमजिनेश्वर केवल लह्यो सुख-संगे ॥ अहो प्रभु० ॥ १ ॥

च्यार निकायके सुरसरी मिलके । त्रिगड़ो रचै अतिरंगे । अहो प्रभु० ॥ २ ॥ समवसरण मे राजे प्रभुजी, देशनादे भवरंगे ॥ अहो० ॥ ३ ॥ साधु साध्वी वैमानिक देवी । अग्निकुण उमंगे ॥

॥ अहो० ॥ ४ ॥ ज्योतिषि भवनपति व्यन्तर सुरी, रहे नैरत । जिन सगे ॥ अहो० ॥ ५ ॥ वायवविदिशे पहिज देवो, जिनवाणी सुणे रगे अहो० ॥ ६ ॥ वेमानक सुर मानव–स्त्रीजन, ईशान दिशिमे सगे ॥ अहो० ॥७॥ वारपरषदा जिनवाणी सुण, मगन हुवे मन रगे । अहो० ॥ ८ ॥ गोघृत भरि मणिपात्र अनूपम । दीपककरो मन रगे ॥ अहो० ॥ ६ ॥ ओँ ह्रीँ० दीप यजामहे स्वाहा ॥ ५ ह इति ॥

॥ अथ छट्टि अक्षत पूजा ॥

दोहा ॥ अक्षत अक्षत लेईने, स्वस्तिक रचो विशाल । ज्ञानादिक त्रणपु जयी, पामो मंगल माल ॥ १ ॥ राजीमतीको छोडके, नेमि चढ्या

गिरनार । रथ नेमि राजी मती, लिधो संयम भार ॥ २ ॥

॥ रागनी साम ॥

नेमोजिन पुजोतोसही ॥ प्रभुरैवतगिरि सिणगार ॥ नेमि जिन० एआंकणी ॥ उत्तमशालि प्रमुख वहुअशनं । चाढोतोसही ॥ अक्षयसुख कारण जगतारण ॥ जिनवर शरण ग्रही ॥ प्रभु० ॥ १ ॥ आधेयथी आधार अनोपम । जगमे सोभलही । श्रीगिरनार नेमि फरसनतें कोत्ति व्यापरही ॥ प्रभु० ॥ २ ॥ भरत नरेश्वर संघलेईने, शेत्रुंजयात्रा लही ॥ चेत्य निमापण नवीन करीने, रेवत मार्ग ग्रही ॥ प्रभु० ॥ ३ ॥ स्वर्णगिरिपर नेमि जिणंदनो, मणि कनकादि मयी । देरासर नवीन रचीने ।

नेमिनी पडिमा ठही ॥ प्रभु० ॥ ४ ॥ कोडदेवसे ब्रह्मेन्द्र आयो, भरतनोसुजसकही । पहिलो उद्धार प्रथम चक्रिनो, एम अनेक रही ॥ प्रभु० ॥ ५ ॥ गिरविर मडण नेमिजिनेशर । भेटो भोवलही सिद्धि सौध चढवा मनर गे । सोपानपक्ति कही ॥ प्रभु० ६ ओं ह्रीं० अम्त यजामहे स्वाहा ॥६॥

॥ अथ सातमी नैवेद्य पूजा ॥

दोहा । सातमी पूजा साचरे, श्रावक शुचि शुभमावे । भात भात नैवेद्यना, थाल भरि भरि लावे ॥ १ ॥ नेमनगीना नाथने, आगलधरो म - रग ॥ अक्षय सुख वरवा भणी, पूजा करो चितचग ॥२॥



॥ चाल लूहर सारंग ॥

रमत रमवा में गई-एदेशी ।

नेमि जिनेसर पूजोये, एतो रैवतगिरिनो रायो हे माय ॥ नेमि० ॥ समवसरणमें बेसिने। एतो बचनामृत वरसायो हे माय। भव्य हृदय भू सींचीने। एतो बोधि बीज निपजायो हे माय ॥ नेमि० ॥ १ ॥ मेघध्वनिजिम गाजता, एतो संघचतुर विध ठायो हे माय। देश विदेशमां विचरता, एतो शिवमारग दरसायो हे माय ॥ नेमि० ॥२॥ सेत्रुंज गिरिवर फरशने। एतो गिरिनार नाथ कहाथो हे माय। अढारसहस वाचंयमी। एतो वरदत्तादि गणरायो हे माय ॥ नेमि० ॥ ३ ॥

चालीससहस्र श्रमणी भली, पतो यक्षणी प्रमुख सुहायो हे माय। एक लाख गुणोत्तर सहस, पतो श्रावकनो समुदायो हे माय ॥ नेमि० ॥४॥ त्रणलक्षसहार सहसवली, पतो सुजश श्राविका पायो हे माय, मोऽयपदारथ थी प्रभु पूजी, पतो अनाहार नाम कहायो हे माय ॥ नेमि० ॥ ५ ॥ इति श्री ह्रीँ० नेत्रय यजा० ॥ १ ॥

॥ अथ अष्टमी फल पूजा ॥

दोहा। परम पुरुष परमातमा, परमानन्द प्रधान। परमेश्वर प्रभु पूजिये प म निधान निधान ॥ १ ॥ अष्टमी पूजा जिनतणी, अष्टमी गति दातार। फल पूजाकरो मानसु, जिम लहो सुख अपार ॥ २ ॥

॥ रागणी काफी त्रिताल ॥

उज्जयंत गिरगुण गावो । तुमें मणिमाणिक्से वधावो ॥ उज्जयंत० नेमिजिनेसर जगअलवेसर, मन मंदिरमां लावो ॥ जिनवर चरणनो शरण ग्रहीने, समरणमां लयलावो ॥ मणिमा० ॥१॥ तीर्थपति बावीसम स्वामी, नेमि निरञ्जन ध्यावो । भविक जीव सुखकारण तारण, जिन दरशने मन भावो मणि० ॥ २ ॥ दोंय भेद दरशनना जाणो । शुद्धाशुद्ध स्वभावो शुद्धदरशनथी निजगुण प्रकटे । आतमगुण हुलसावो ॥ मणि० ॥ ३ ॥ काल अनादि—भववनमे भटकत, कर्मरिपु गण दावो । कृपा करी मूज दरशन दीजे ॥ अनुभव अमृत पावो ॥ मणि० ॥४॥ नाना जातीना फल लेईने, आगल प्रभुजीने ठावो ॥ कृपाचंद्र यह फल पूजासे

मनवांछित फल पावो । मणि० ॥ ५ ॥ ओं ह्रीं श्री० फलं यजामहे स्वाहा ॥ ८ ॥

॥ अथ धजा पूजा ६ ॥

दोहा—नवमी ध्वजनी पूजना, लावो जिन दरबार । सधवाची लेई करि, करे प्रदक्षणा सार ॥१॥ धवलमंगलगाताछता वाजित्र विविध प्रकार । कैलासगिरिना शिखरपर, आरोपोसु-विचार ॥ २ ॥

॥ राग श्री ॥

जिनगुणगान श्रुत अमृत—एदेशी ॥

ध्वजपूजन करो सुख सदन ॥ध्व०॥ सहस्रयोजन दंड मनोहर । सुवरणमय जनमन हरण । ध्व०

॥ १ ॥ किंकिणी रणकत शब्द मनोहर. दिव्य-ध्वनि सुखकर श्रवणं ॥ ध्व० ।' २ ॥ एक हजार के अष्ट ऊपर वलि । सोहे पताका पंचवरणं । ध्व० ॥ ३ ॥ मंद समीर प्रचारे लहकती । मानु स्वर्गथी अवतरणं ॥ ध्व० ॥ ४ ॥ मनमोहन ए ध्वजनिरखीने । भविने परमानन्दकरणं । ध्व० ॥ ५ ॥ इण गिरके षटनाम सुहंकर, नन्दभद्र गिरि सुख करणं ॥ ध्व० ॥ ६ ॥ आषाढ़सुदी अष्टमो दिनकीनो । शिवरमणीको करग्रहणं । ध्व० ॥ ७ ॥ पांचसे षट् त्रिंशत मुनि साथे । सादिअनंत स्थितिवरणं ॥ ध्व ॥ ८ ॥ ओं ह्रीं० ध्वजं यजामहे स्वाहा ॥ इति ॥ ८॥



॥ अथ दशमी पूजा ॥

दोहा । दशमी मगल पूजाना अष्ट मगल लिखसार ॥ रजतना तदुल लेईने अखड उज्जवल मनुहार ॥१॥ पुष्पवृष्टि करें सुरगणा पचवरण सुविशाल ॥ योजन भूमडले प्रमित, पूजो जगत दयाल ॥२॥ पासजिनदाप्रभु मेरे मन वसिया ॥ इस चालमे ॥ चालो भविकजन यात्राकरिये, । यात्राकरि शिव सपत वरिये । टेक० । चालो०- जीर्ण दुर्गना चैत्यनुहारी । तद्वद्धिये जइ रात्रि रहिये ॥ चालो ॥ १ ॥ श्रेणीसोपानचडी शुभ- मार्ये नेमिजिनदको ध्यान जो धरिये ॥चालो०॥२ प्रथम ह्व कर्मे विम्बप्रभुना, अद्भुत आदि प्रलंब मन धरिये । चालो० ॥ ३ ॥ मेढ्वसी पमुहा जिनमन्दिर, निरख निरख भवि मनमा-

ठरिये ॥ चालो० ॥४॥ यहा अनेक जिन चैत्य-नमिने, बीजीटुंक जिनचरणकुं वरिये । चालो० ॥ ५ ॥

रथनेमीजीको दरस सरस करि,तृतीय शिखर शासन सुरिसरिये । चालो० ॥ ६ ॥ चोथी-नेमिवोर जिनेसर, पंचमीटुंक नमीदुख हरिये । चालो० ७ ॥ सहसावन जिन चरण नमीने, चैत्य प्रवाड कोइ न परि करिये । चालो० ॥८॥ गजपद कुंडनो नीरलेईने, स्नात्र महोत्सव करि सुख वरिये । चालो० ॥ ९ ॥ मंगल पूजना-रिष्टनिवारक, कृपाचन्द्र शिवपद अनुसरिये । चालो० ॥ १० ॥ ओं ह्रीं श्रीं अष्ट मंगलं यजा-महे॥ १०॥

कलश रागनी धन्याश्री ।

प्रभुजीको सुयश अम्बर घनगाजे, रेवत गिरिवरको प्रभुम इन, नेमिजिनन्द विराजे, तीर्थपतीना गुण गावता, रसनासफल कहा जे ।प्रभु०॥१॥ श्रीखरतर गणनायकनायक, जिनचारित्रसूरिराजे, गिरनार गिरिनी स्तवनाकीनी, श्रीसत्रभक्तिने काजे । प्रभु० ॥२॥ पचतीर्थवी रचना रगे, कीनी भविक हितकाजे, दरशन देखत अनुभव प्रगटे, जिमसाध्यात गिरिराजे । प्रभु० ॥ ३ ॥ मगनर नगलाउ नागने, सावल्यो मघसुकाजे, सु वर्द्द यद्दरगहि च्चेगामो, सपूरण हित काजे । प्रभु०॥४॥ सम्वतउगणीससयर चोत्तर, पोषधवल भृगुवाजे, दुषमादिक गिरिना गुणगाया,माघमउे सुसमाजे ।

प्रभु० ॥ ५ ॥ श्रीजिनकीर्त्ति रत्न शाखाधर, युक्ति अमृत गुरुराजे कृपाचन्द्र जिन स्तवना-कीनी निजगुणनिर्मलकाजै । प्रभु० ॥ ६ ॥

इति श्रीगिरनारपूजा सम्पूर्णम्

॥ अथआरति लिख्यते ॥

जयजय जिनराया ॥ श्रीनेमिजिनेश्वरराया। भविमिल गुणगाया० जय० ॥१॥ मंगल आरति-पूजा करतां । भविनेसुखछाया । मोक्षमारगदी-पाया, राजुलपतिराया, ॥ जय० ॥ २ ॥ सिवा-देवीनंदननंद, समुद्र विजयराया ॥ सौरीपूरमें जाया । द्वारिकापुरीआया ॥ जय० ३ ॥ रैवत-गिरिके सहसावनमें । दीक्षासुरराया, केवल रमणीपाया-शिवनगरी धाया ॥ जय० ॥ ४ ॥

इनविधपूजा आरतिकरिने, सुखसपति पाया। मुम्बइपुरमें सुहाया। पचतीर्थ राया ॥ जय० ॥ भात्रभले जिनभक्ति करता ॥ भवि जनमनलाया, कृपाचन्द्रसूरिराया, मगल वरताया ॥ जय० ॥६॥

इति,

—०—

वीरजी आयारे चपावन के मेदान ॥ पदेशी ॥ भवियण ध्याजोरे वासुपूज्यगुणखाण वछित पाजोरे जिनवर चतुर सुजाण ॥ भ० ॥ ए आकणी ॥ अगदेश चपानयरि सोहंत। जयदेवीना जात कहत। वसुपूज्य राजाकुल दीपत। चउदे सुपनारे देखे माता सुजाण। गर्भमा इन्द्ररे पूज्या जिनवर भाण ॥ भ० ॥ २ ॥ तेहथी वासुपूज्य दियोनाम। मातापिताना वछित

काम । सहु जनगावेगुण अभिराम योवनवयमांरे संयम लीनो सुजाण। चारित्र पालिरे पाम्यो केवलनाण ॥ भवि० ॥ २ ॥ संवचतुरविध थाप्यो मुनीश भविजनतारया विचरीजगीश । वोधवीज-विस्तारि ईश । चंपापुरि आव्यारे । कीधो अणशण जाण । मुक्तिपद पायारे । शासनके सुलतान ॥ भवि० ॥ ३ ॥ देरासर त्रणभूमि मनुहान । भूंयरेमां आदि नाथ जुहारि । मध्यमां वारम जिन सुखकार । ऊपरमजलेरे शीतल जिनवर जाण । नमिजिन स्वामीरे पारस नाथ कहाण ॥ भवि० ॥ ४ ॥ मूलनायक वारम जिनचंद, विंवा-वलि सोहे अति चंग,बुहारि नगरमां अति उछरंग, कृपा चंद्र सूरिरे चउमासोकीनोजाण । उगणीसे चमोतरे । गायाजिन गुणगान ॥भवि० ॥ ५ ॥

इतिश्री १२ मा वासुपूज्य भगवाननो स्तवन सम्पूर्णम् ।

—०—

(राग) सारग ॥ ऋषभ चरण कजध्यावो मन भमरा ॥ ऋ० परमानन्द रसपावो ॥ मनभ० ॥ ऋष० ॥ १ ॥ अपर कमल तुहिन सयोगे । मुद्रित होय कमलावे ॥ म० ऋ० ॥२॥ प्रभुपद पकज अहनिशि विकसे । तेहथी चित्त हलचावे ॥ ननभ०ऋ० ॥३॥ चन्द्रविकाशी कुमुद कुमुदनी, दिनमे ते मुरझावे ॥ म० ॥ ऋ० ४ ॥ जिनपादावुज निरुपमदेखी, अतरज्योति जगावे ॥ म० ॥ ऋ० ॥ ५ ॥ तन मन थिरकर जिनकज ध्यावो रूपातीतसुखपावे ॥ म० ॥ ऋ ६ प्रथम जिनेसर प्रथमधराधिप, प्रथममुनि जगमावे

॥ म० ॥ ऋ० ॥ ७ ॥ प्रथम जगतगुरु जिन उप-गारी, प्रजापति नामधरावे ॥ म० ॥ ऋ० ॥ ८ ॥

महागोप महामाहान प्रभुजी। भवअटवी सत्थवाह कहावे ॥ म० ॥ ऋ० ॥९॥ भवजलधि निर्यामक जगपति, सुजस सदा सुकहावे ॥ म० ॥ ऋ० ॥ १० ॥ उगणीसे चलोत्तर वरसे, माघमास मनभावे ॥ म० ॥ ऋ० ॥ ११॥ सुदि दशमी रांदेर नगरमां, जिनचैत्ये पधरावे ॥ म० ऋ० ॥ १२ ॥ श्रीजिनकृपाचन्द्रसूरि भक्त-संत सुयस मिलगावे ॥ म० ॥ ऋ० ॥ १३ ॥ इति रांदेर मध्ये जीर्ण चैत्योद्धारे श्रीऋषभजिन बिंब प्रतिष्ठा स्तवनं संपूर्णम्—

—०—

सुनिजर करिने साहिबमोरा अमघर वोरण आवोरे। सुनि०॥ श्रीरिसहेसर प्रथमजिनेंद्रा मुखछवि अनुपम चन्दारे, सजमलीनोमन आनन्दा विचरे जगतदिनदारे॥ सुनि०१॥ देशविदेशवे विचरे प्रभुजी, अंतरायने कारणरे, असननिना सुवरण रत्नादिक, देवे सवजन तारणरे, ॥सुनि०२॥ बार मास पारणेने दिवसे, हथिणापुर प्रभुआवेरे, श्रेयांस इक्षुरस लइने, प्रभुजीने वोहरावेरे॥ सुनि०३ अक्षय सुखनो कारण पारणो, आखातीज कहावेरे, पुरवभव परिचयने कारण दानविधि वरतावेरे॥ सुनि०४॥ पचदीव्य प्रगटावे देवा, रत्नपीठतिहा ठावेरे, श्रीजिनकृपाचन्द्रसूरि प्रभुजीको, सुयसुयश मिल्गावेरे सुनि० ५ इति।

वीरजीनेसर भवण दिनेसर अतिशय गुणनादरियाजी, भव्यकमल प्रतिबोधतां शोधतां श्रमणसंघ परिवरियाजी, हस्तिपाल राजानि-सभामें अंतीमचोमाशी आयाजी, कातिवदि अमावसराने स्वातिसिद्ध सिधायाजी ॥ १ ॥ कल्याणक श्रीरिषभादिकना पंच पंच मन आणोजी, वीरनो गर्भापहार छट्ठो आगम मांहि वखाणोजी, तीनकाल जिनपूजा करिने दीवाली दिन जाणोजी, च्यार आठ दश दोय वंदीने आतम निजघर आणोजी ॥२॥ दीवा-लीदिन छट्टकरीने गुणना ग्रण गुणिजेजी, सोल परहर लग पोषध ठविने ध्यान प्रभुनोधरीजेजी, गोतम स्वामी केवल पायो पडवाने पुन्यवंताजी, एकासणो करि हरष हृदयधरि सोल

वरस उजमताजी ॥३॥ दीवाली दिन अतिउछरगे, कल्प सुणो भवि प्राणीजी । ठवणायरियनी पूजा कराने, गोतम रासनी वाणीजी ॥५॥ ब्रह्म शान्ति यक्षराज, सिद्धायिकादेवीसानिधकारीजी । श्री-जिनकृपाचन्द्रसूरि सेवो, दीवाली दिन धा-रजी ॥ ६ ॥

इति दीवालि स्तुति ।

—०—

आदीशर अलवेसर जगपति भविमन सायर चन्द्राजी, सेत्रु जमंडण दु खविहडण अदभुत जोंति साइंराजी, सुखसपति कारण जगतारण सेवै सुरनर इन्द्राजी, करुणाकर जिनवरउपगारी कामितसुरतरु कंदाजी ॥१ ॥ अरिहंत सिद्ध प्रवचन आचारज स्थविर पाठकमनआणोजी,

साधुनाण दंसण दसमो पद्विनय चारित्र वखाणोजी, ब्रह्म क्रिया तपगोयम जिन पद समाधि अपूर्व श्रुतजाणोजी, श्रुतभक्ति तीरथ प्रभावना वीस थानक पहिचानोजी ॥ २ ॥ श्रीमुखवीर जिनेसर भाखे ए तप सेवो प्राणोजी, तीर्थंकरपद एहथी लहियें जिनआगमनी वाणीजी, ज्ञाता अंगे गणधरदेवे विवरीने घणी आणोजी, ए आराधनथी शिव लहिये निरुपमसुख नीशानीजी ॥३॥ तीनकाल पांवे शक्रस्तव देव-वंदन विधि किजेजो, काउसग परदक्षिणा गुण-नो विधिसुं जिनपूजीजेजी, खमासमण बिऊं टंक पडिक्कमणो स्तवन नित्य सुणीजेजी, कृपाचन्द्र सुयदेवि पसाये मन वंछित फललीजे-जी ॥४॥ इति वीस स्थानक स्तुतिसंपूणम् ॥२॥

॥ ठुमरी ॥ सुमतिचरणकजदेख आजमन मधुकरलीनारे ॥सु०॥ आज०॥ सुमतिचरणकज अहोनिशिविकसै, अपरकमल कमलावैरे, जिनचरणाबुजसेवि भविपण, मकरंदगुण पीनोरे सु० ॥१॥ सुमतीसदा आतमनेसगे, सहजानंद भविविलसेरे, अनुभवअमृतपीवेचगे, निजगुणमेंभीनारे ॥सु०॥ २ ॥ परमेसर प्रभुपरउपगारी, परमपुरुष मनुहारीरे, पाचमाजिनपतिपडिमासारा, दीठो देवनगीनोरे, ॥सु०॥ ४॥ मेघनपतिकुलनभमणिसो है, भविजननामनमोहेरे, सत्यदेवविरुगतिपामी, जगमा जश लीनारे ॥सु०॥५॥ जगवच्छल जग नायक जग गुरु सेवकजन प्रति पालकरे, श्रीजिनरुपचन्द्रसूरि आज, अलेवरसनकीनोरे, ॥ ६ ॥ इति सुमति देवस्तवनम् ॥

गहुँली-संग्रह ।

॥ पनीहारीकी देशी ॥

दुजो अंग सखो-साभलो मोरी सजनीरे लोल सुनता पातीक जोय वा ॥ १ ॥ वीरजिनंद समोसस्या मोरी० राजगृही उद्यान वाला० ॥ २ ॥ श्रेणिक चेलना तिणसमे मोरी० बारपर सदासार ॥ वाला० ॥३॥ चरन करन वरवानीया मेरी० अर्थ कहे इमवीर बाला० ॥ ४ ॥ सुयरबंद होय अति बाला ॥मेरी०॥ अध्ययन तेविससार बा० ॥५॥ मतखंड्या पाखंडी तणो ॥मेरी०॥ तीनसे त्रेषट्सार ता० ॥६॥ गुरुमुखसे सखी मे सुन्यो ॥मोरी॥ आनंद अंगनमाय वाला० ॥७॥ भावश्र-कीये आदसो ॥मोरी०॥ आतमसुखनेकाजा ॥रा० ॥८॥ पुन्यसंजोगे मुजे मील्यो ॥मोरी०॥ सद्गुरु

तणो सयोग रा० ॥ ६ ॥ भवअटवीमे नही फीरु ॥मोरी०॥ सूरिक्रुपाचद्रसेन ॥रा० ॥१०॥ उगनी॰ से त्रीयासीय ॥मोरी०॥ जेसानेगड सार ॥वा०॥ ॥ ११॥ श्रावण मासमेमेथुन्यो मोरी दुजधवल बुधवार वाला० ॥१२॥

स्वामी सातामे रहजो षेमकरो छो विहार ॥ रे स्वा ॥ रविवारे रलियामनोरे रहेगाथी रग रसालरे ॥स्वामी०॥ १ ॥ सोमवारे सुख सम्प॰ दारे, पामे लील विलासरे ॥स्वा०॥ २॥ मंगलवारे मगल करोरे, जिनवाणि सुपकाररे । स्वा नू बुधवारे बहु परिवारथीरे पर उरिया॰ विहाररे । स्वा ॥४॥ गुरुवारे गुव गुणनिधिरे, सामाजोत्रो गुरुराजरे ॥ स्वामी ॥५॥ शुक्रवारे सदगुरुमलधारे, आपोरछतकाजरे ॥स्वा। ॥ ६॥

सनीवारे थिरता करोरे, मननीपुरा आसरे ॥स्वामी ॥ ७ ॥ सातवार सातादियरे, उभी करू अरदासरे ॥ स्वा० ॥ ८ ॥ संघसहु मिल वीयवरे महिर करो महाराजरे स्वामी ॥९॥ इति

राग फुलझड़ीकी चालमें ।

गछपती आवियाजीयोके सहियां चालो गुरुने वांदवा कोई सेव्यांसे सुखथाय ॥ गछ-पति ॥ समरु घरु देसके मांयने एतो वामुनगर सोहंत ॥ग० स०॥ बांफणा गोत्रे अवतर्या, मेघ-राज कुलभांण ॥ ग० स० ॥ मात अमरादे जनमिया, एतो वरस उगणीसे तेर ॥ग०स०॥ युक्ति अमृत वचनामृते गुरु पायो मन वैराग ॥ग०स०॥ छत्रीसेकी सालमे गुरूलीयो संजम सार ॥ ग० स० ॥ सूत्रसिद्धांत मन धर्या एतो

स्याद्वादना जाण ॥ ग० स० ॥ नयभंगने ओलख्या एतो खट दरसणनाजाण ॥ग० स०॥ कठिन क्रियाने पालता वली पञ्चमहाव्रतधार ॥ ग०स० ॥ बारे भेद तपतपे एतो षटकाया रखवाल ॥ ग०स० ॥ भूमंडलमें विचरता गुरु करता पर उपगार ॥ ग०स० ॥ उगणीसे बहो तरे एतो सहर व कार्ड बीच ॥ग०स०॥ आचार जपदवीलही तब हरप्यों स घविशेश ॥ग०स०॥ खरतरगच्छमें सोभता एतो कृपाचंद्र सूरीराय ॥ ग० स० ॥ ग्राम नगर पुर विचरता पधारिया जैसल्मेर ॥ ग० स० ॥ यात्रा करी उमगसु एतो संघ चतुरविधसाथ ॥ ग० स० ॥ लाभ अनुपम जाणके गुरू कियो चातुरमास ॥ ग० स० ॥ ताडपत्र पुस्तक तणो कराव्यो जीर्ण उद्धार

॥ ग० स० ॥ पूर्व पुण्य पसायथी एतो मिलीया गुरू संजोग ॥ ग० स० ॥ लोक सिधी निधि चन्द्रमा एतो जाणे चतुर सुजांण ॥ ग० स० ॥ आभा चमके बिजली एतो श्रावण पेलीतीज ॥ ग०॥ स०॥ गुरुगुण गाया भावसु ं एतो वरत्यो मंगल माल ॥ गछपती आविया जीयोके सहियां ॥ इति ॥

वासुपूज्य अभिलाशी चंपाना वासी ए देशी ।

श्रीशुभ पर्वको सेवे वांच्छित लेवो कहते हैं श्री भगवान ॥ सुनो सखीरी आये पजुसन पूजन करो जिनराज ॥ इंद्रइन्द्रानी सुर सब मिलिके गाते हें मंगल साजरे ॥१॥ शुभ ॥ तेलेका करना पापकाहरना कल्पश्रवन सुखकार, ज्ञान पूजनसे दान देवनसें उतरोगे भवपाररे ॥२॥

शुभ॥ खमत खामना सघले करना सवत्सरी दिल धार। साहमी वच्छल प्रेमसे करना कहते हैं जगधाररे ॥३॥ शुभ॥ देव लोकसें स्वामी चल्के माताके गर्भमें आये, सुपनाको देखा आनन्द लेखा जीवनके सुखदायरे ॥ ४ ॥ शुभ ॥ गज वृषभ सिंहदेवी दामशसी दीनकर ध्वजा कुमजान। पदम सागर विमान रत्न राशी, अग्नी शिखामन आनरे ॥५॥ शुभ॥ कथसें पूछे वैसेहैं सुपने मुजको कहे सुखकार। सुपन पाठकको बुलाके पूछा होवेगा जगधाररे ॥६॥शुभ॥ दोनों को देउ तीर्थोंको सेउ जग जनका उद्धार, आनन्द मंगल होत नगरमें वर्तेगा जय जय काररे ॥७॥ ॥शुभ॥ सवत उगणासे त्रियासी भादवा मास मझार कृपाचन्द्रसुरी पर्व सेवने पाया ए शिव सुख साररे ॥८॥ शुभपर्व ॥ इति ॥

कर्मतणी गति जानिये ए देशी ।

अंग भगवतीमे सुन्यो, वीर जिनन्द वखान सुणता आतम उल्लसे, थाये कोड़ कल्याण ॥१॥ अंग॥ गोतम स्वामीने कहा, प्रश्न छत्तीस हजार । हैं गौतमप्रभु इमकहे, वर्द्धमान दरबार ॥२॥ अंग॥ सयखण्ड एक अति भलो, शतक इकतालीस जान ॥ उद्दे सा दश हजारछे, पद दो लख मनआन ॥३॥ अंग ॥ ज्ञान भक्ति करो भावसु, पूजन विविध प्रकार, गौतम नाम द्रव्य ढोकीने, साहमी वच्छल सार ॥४॥अंग ॥ मोतीमाणक स्वस्तिक करो, पूजो अंग उदार । द्रव्य भावभक्ति करो, शिवसुखनो दातार ॥५॥ अंग ॥ अंग सखी ए गुरुमुखे, सुणतां पाप पुलाय, विधिथी ए आराधिये, भवमान इहाय ॥६॥ अंग॥ ए सूत्र बहुमानथी,

निसुणो तजी प्रमाद । शुद्ध समकित तेथी उपजे, पर भवमें सुख स्वाद ॥७॥ अंग ॥ सूरी कृपाचन्द्र प्रणमिये, ग्रह ऊठिने सार । सुख-सागर गुण गावता, पामे भवनी पार ॥८॥ अंग भगवती ॥ इति पद सपूणम् ॥ ८ ॥

गुणनीधी श्रीजिनचद मुणिदा, मुख सोहे पूनमचन्दा । मोह्या सब सुर नर वृंदा ॥१॥ सुगुरु म्हारा देशनाही वदीजे थारो सुण मनरीझे ॥२॥ सु ॥ दिनकर प्रकाश सवायो, भूमडल ऊपर छायो । कमलादीन सकल मनभायो ॥३॥ सु॥ मेला उलट्य ग धार वली मेघराग मभार गायन गावे सुखकार ॥४॥ सु॥ पंच शब्द गहरी ध्वनी गाजे, जिनवरघर धानल बाजे, सद्गुलज्ञपया धर्म काजे ॥५॥ सु॥ साहिब

वहेला पाट पधारो, श्रीसंघनो कारजसारो, मधुरे स्वर वचन उचारो ॥६॥ सु ॥ गुण विनती वचन विशेष, गुरु आप धर्म उपदेश। टालो भविको-टिकलेश ॥७॥ सु॥ सगुरुनीमीठी वाणी, उपदेश सुणो भवि प्राणी, सुणतांमन अतीही सुहाणी ॥८॥ सु॥ गुरू प्रतपौ ज्यूं शशी सूर, दिनदिन प्रती वधते नूर। हरो संघसकल दुख दूर ॥९॥ सु ॥ गोरिमिल मंगल गावे, भर मोतियां थाल-वधावे, वालावण्य कल सुख पावे ॥१०॥ सु ॥

जगजीवन जग वालहो ए देशी ।

त्रीशला नन्दन वंदिये, अनुपम रूप उदार लालरे। समवरसनमां वेठीने, चौविह धर्म दातार लालरे ॥१॥ त्री० ॥ पेलो गढ़ रजततणो, सोवन कांगरे होय लालरे। वीजो गढ़ सोनातणो,

रतन कांगरे जोयलालरे ॥ २ ॥ तीजो गढ रतनतणो मणिकागुरा मनुहार लालरे । अढी गाउ ऊचो कह्यो एक योजन विस्तार लालरे ॥ ३ ॥ श्री ॥ गोतम आदि गणधरा, चौदसहस्स मुनीराय लालरे । लब्धि सिद्धि दायक सदा, प्रणमाजे तसुपाय लालरे ॥४॥ श्री० सती चेलना तिणसमे, मानियनचोक पूण्य लालरे । राजग्रही उद्यानमा समवसऱ्या जिन राय लालरे ॥ ५ ॥ सूरि इरावचंद्रसूरि खरतरगच्छ सिणगार लालरे । सुखसागर गुण गायता, पामे भवनो पार लालरे ॥६॥ इति ॥

गहुँली ।

सद्गुरुजी नित वंदिये, प्रतो जेमनमेर पधारिया हेमाय । सघमिलानं वधावियां, पत्रो चेत्य

अनुपम वंदय हेमाय ॥ स०गु ॥१॥ मनमोहन गुरू मिलीया, एतो गुरूसेवा सुखकारी हेमाय । देसना देता भव्यने एतो, बोधबीज प्रगटावे हेमाय ॥ स॰ गु॰ ॥२॥ पञ्च महाव्रत पालता एतो, छःकाय जीव प्रतिपाल हेमाय । सातभवनी वारता एतो आठम दिने गाले हेमाय ॥ स०गु० ॥३॥ नवविध ब्रह्मचर्य पालता, एतो दशविध यती धर्म पाले हेमाय । इग्यारे अंगना जाणछे एतो, द्वादश अंग पढावे हेमाय ॥ स० गु०॥४॥ देश विदेश विचरता एतो, मारवाड़ देश पधारिया हेमाय । शिष्यादिक परिवारसु एतो, यात्रा करी अति हरखे हेमाय ॥ स० गु० ॥५॥ उगणीसे चीयासीये, एतो सदगुरुजी गुण गाया हेमाय । कृपाचन्द्रसुरी राजने, एतो सुखसागर सुख पावे हेमाय ॥ सदगुरूजो ॥६॥ ॥ इति ॥

जगजीवन गहुली ।

सुरि राजके दर्शन मेरा दिल देख हरखा है ॥ सुरि० ॥ फीरा मे लख चोरासीमे नहि दीदार देखा है । करी अब मेहर मुझपर गुरू दीदार देखा है ॥ १ ॥ मुनि केइ आपके साथे जीनोका ज्ञान भारी है । केई तपसी केई मौनी केई आगमके धारी है ॥ २ ॥ केई टीका केइ चूर्णी केइ अगोंको धारी है । केई ध्यानी केइ योगी केइ संजम कारी है ॥ ३ ॥ षटकायके रक्षक पाच इन्द्रके जीतक है । तीन गुपतिक धारीक पाच समतिके पालक है ॥ ४ ॥ नजा सब ख्याल दुनियाका जीनोंका वेसन्यारा है । गुरूके गुणको गाय मेरे मन येही प्यारा है । गुरू भव कर्मने मुझको जजीर डाला है । सुगादा मुक्म

मुक्तिका येही अब अर्ज आली हे ॥ ५ ॥ कृपा-
चन्द्रजी महाराज जीनोंका ज्ञान भारी हे । करी
अब देसना तुमने मुझे भव जलसे तारी हे ॥६॥

गोपीचन्दकी चालमें ।

मेरे सन्त गुरूजी अबकी चोमासो मेरे देशमें ।मे०।
देश देशमें आप पधारे करता जनउपगार ।
अबकी हमारी येही अरज हे उतारो भवपारजी
॥ मे० १ ॥ पञ्च महाव्रत धारताजी क्या करता
उग्र विहार । इर्या समतिको पालताजी क्या देते
ज्ञान अपार जी ॥ मे २ ॥ क्रोध मान मायाको
जीता छोड़ा सब संसार । सुमति गुपतिको
पालताजी क्या करता पर उपगार ॥ मे ३ ॥
दोष बेतालीस टालके जीक्या लेते आपआहार ।
पांच दोष मण्डलके छोड़े करते आप आहार॥४मे॥

चाणी आपकी पमी वर्षे ज्यु अमृत वेण। स्यद्वाद अगमसे पुरो जेसे सम्द्रके रान ॥५ मे॥ सूरि हमारे कृपाचन्द्रजी जाने सब संसार। चरन आपके सेवतेजी क्या उतरे भव पार ॥ ६ मे ॥ संवत उगनीसे त्रीयासी जीक्या श्रावण मास मझार। डुंगवली गावे शिव सुख पावे पोंचे मुक्ति मझार ॥ ७ मेरे ॥ इति।

सतिप्रमु० वि० ।

सुरीश्वर विनती एक मोरीरे। म्हारी वीनतडो अवधारो ॥ सू० ॥ स्वामी देश विदेशथी आयारे। मैं पुर्व पुन्य थी पायारे नर जनम सफलमें कहाया ॥२ सु ॥ पच आश्रवना स्वामी त्यागीरे। पञ्च संवरथी रट लागीरे। स्वामी ज्ञानक्रीया वड भागी ॥ ३ सू ॥ स्वामी अंग

उपाङ्ग ना ग्याता रे । नयनिक्षेप भङ्ग सुहातारे । स्वामी नन्दि अनुयोगदाता ॥ ४ सू ॥ स्वामी आठ मदना त्यागीरे । आठ बुद्धितणा स्वामी रागीरे । आठ कम तणा स्वामी त्यागी ॥ ५ ॥ सूण ॥ गुरू गुनछतीसे राजेरे सुरजनो परे स्वामी छाजेरे । मेघतणी परे स्वामी गाजेरे ॥ ६ सू ॥ उगनीसे त्रीयासी सुखकारीरे श्रावण मास सुदि मनुहारीरे कृपाचंद्रसूरि बलीहारी रे ॥इति॥

गहुँली ।

पूज कृपाचन्द्रसूरी वीनतड़ी अवधारो सतगुरू अमतणी। ए आंकड़ी। रसस्वतीको समरण कीजे गुरुगुण गात्र बुद्धि दीजे गुरू भक्तीरस अमृत पीजे ॥ पूज० १ ॥ संमत् उगणीसे तेरे वरषे चांमु नगरे जनम्या शुभ दिवशे छत्रीसे दिक्षा

मन हरषे ॥ पूज० २ ॥ सेर मुवाई गुरू आये नर नारी दरसणआव्या है जुगम आचारज पद पायौ ॥ पूज० ३ ॥ गुरू महेर करी मरुधरु आये सियालपुरसंघ वधायें सब श्रावक मिल सनमुख आवो ॥ पूज० ४ ॥ फागुण सुदीछठे गुरू आये सब श्रावक मन आनन्द पाये सुद आठमकी यात्रा जावे ॥ पूज० ५ ॥ गुरू पास प्रभुको स्तवन करियो पूजा कर श्रीसंघ हर्ष भरयो प्रभु भक्ति आनन्द मंगल वरयो ॥ पूज० ६ ॥ नीकाणेसु श्रीसंघ आये याबू मेरूँदान वीनती लाये गुरू वर्तमान जोग फरमाये ॥ पूज० ७ ॥ फागण सुद इग्यारस दिवसे ब्यावरपुर आया ठाणुनवसे श्रावक दरसण कर मन हर्षे ॥ पूज० ८ ॥ होली चैत्र मासो गुरु

ठावे लोहावट संघ दरसण पावे जोधपुर श्री संघ गुण गावे ॥ पूज० ६ ॥ चेत्र कृष्णा आठम जाणो पारस प्रभु यात्रा मन आणो गुरु पधारे छटाणुं ॥पूज०१० ॥ चेत वदी बारस जाणुं गुरु व्यालपुर संघ हर्षाणो आया गछपती गुरु गुण खाणुं ॥ पूज० ११ ॥ वीनतड़ी अमरी सुनजो चातुर्मासो यां कीजो श्रीसंघकी अर्जी सुणलीजो ॥ पूज० १२ ॥ पोकरचन्द चरणांकी सायलीवी वीनती सत गुरुके भेट कीनी स्वीकार करो गुरु किरपाकरी ॥ पज कृप्राचन्द्र० १३ ॥ इति ॥

कर्मतणी गति जानिये-ए देशी ।

पर्वपजुसन आवियारे, आनंद अंग न मायसलुना ॥ जिम जिम ए पर्व सेविये, तिमतिम पापपुलाय ॥१पर्व०॥ इन्द्रचन्द्रादी सहु मिलीरे द्वीपनन्दीश्वर

जाय ॥म॥ पजुसन ओछव करीरे आपनेस्यानै आय ॥ २ ॥ पर्व ॥ अमारीपटह वजडावी नेरे आपो दान अपार। धनखरचो बहु भावथीरे आतमने हितकार ॥३॥ पव ॥ आश्रवपावनिवारिनेरे कषाय करो वली दूर ॥ स ॥ सामायक पोषध करीरे, जिन पूजामें हजूर ॥ स०४॥ पर्व॥ शील सुरंगी पालीनेरे, भव भवमें हितकार ॥स॥ सीतासुभद्रासती परेरे, जगमें जयजय कार ॥स॥ पर्व० ॥५॥ कर्मनिकाचित जे कसारे, तपथी क्षय पण जाय ॥ स॥ द्रढप्रहारीनी परेरे, केवल ज्ञान उपजाय ॥ स ॥ पर्व० ६ ॥ भावतो आवो भाव थीरे, पामो भवतणोपार ॥ स ॥ मरूदेवी माता परेरे, केवल लक्ष्मी अपार ॥७॥स॥पर्व॥ खरतर गच्छनो राजीयोरे, सूरीकृपाचन्द्र थाय ॥ स ॥

चरन कमल तसुसेवीनेरे, सुखसागर गुण गाय ॥ ६ ॥स ॥ पर्वपजुसन ॥ इति ॥

गहुँली ।

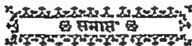
गुरुराज हवे क्यां मिलसेरे, मम भाग्य दशा क्यां फ़लसेरे, तुम सेवक क्यां जइ ठरसेरे ॥ गुरू-राज० ॥ १ ॥ धन माल अने राजधानीरे, महा सङ्कट आकरो जाणिरे, तुमे छोड़ी दुनियां दिवानीरे। गुरूराज० ॥ २ ॥ गुरु विद्या वेलडिये चिटायारे, जेनि कल्पतरुसम कायारे, तुमे समता जलथी सिंचायारे। गुरुराज० ॥ ३ ॥ तुमआण सदा सिर धरसुंरे, तप नियम विसेसे करसुंरे, तमारी वाणी सदा अनुसरसुंरे। गुरुराज० ॥४॥ सूरतथी प्रेमचन्द भाइ आव्यारे, नाना मोटाने साथे लाव्यारे, गुरुना दरसणथी मन भाव्यारे,

ज्ञान तणा भंडाररे , करवा अमपर उपगारारे,
ऐतो भोलाना आधारा ॥ सूरीश्वर० ३ ॥
ज्ञान डोरीथी मन कशि बांध्योरे त्रण तत्व
रमणता में साध्युरे, जीहां समकित अद्भुत
लाध्युं ॥ सूरीश्वर० ॥ ४ ॥ पाये पड़ीनें
वीनती करूं छुरे आवनो चोमासो सुरत करजोरे,
साथे सकल समुदाय लीजोरे ॥ सूरीश्वर० ॥५॥
मारवाड़ चोमासा बहु कीधारे, हवे सुरतमां
पधारोरे, तेथी धमनो थासेवधारोरे ॥
सूरीश्वर० ॥ ६ ॥ गुरु ज्ञानतणोछे दीवोरे,
सकल संघ कहे घणुं जीवोरे, मानि लेजोरे ॥
सूरीश्वर ॥ ७ ॥ गुरू आवे नगर सोभा वधसेरे,
कोई उत्तम जीव निकलसेरे, प्राये हर्णे चारित्र
लेसेरे ॥ सूरीश्वर० ॥८॥ मोटि मारवाड़ सहेर

रैनेमें आव्यु चामुगामरे त्या जनम्या, सूरीश्व रायारे ॥सूरीश्वर०६॥ धनधन अमरा देवी मातारे जेणे जाव्या सूरीश्वर रायारे मेघराजजी रा वङ्कश दिपाव्यारे ॥सूरीश्वर० १०॥ सवत उगणी से त्र्यासी वर्षेरे, कार्तिक वदी दसमी दिवसेरे, गुरु गुणगाया अति हर्षेरे ॥ सुरीश्वर० ॥११॥ जैसलमेर पुराणो शहरे, त्या जिह्वो अपूर्व जेहरे, जिण बिम्ब तणो महोत्सु गेहरे ॥सूरीश्वर०॥१२॥ जहा जिनकृपाचन्द्र सूरीजी बिराजेरे, गुरुना दर-सणथी पाप पुलायरे गुरुनी वाणीथी दु खडा जायरे ॥ सूरीश्वर० १३॥ सूरत शहेरथी दरसणे आव्यारे, कल्याणचन्द शुन गुरुमन भायारे, प्रेमचन्द भाई दरसण पायारे ॥सूरीश्वर० १४ ॥

॥ समाप्त ॥

रेतेमें आव्यु चामुगामरे त्या जनम्या, सूरीश्वर-रायारे ॥सूरीश्वर०६॥ धनधन अमरा देवी मातारे जेणे जाव्या सुरीश्वर रायारे मेघराजजी रा वङ्गश दिपाव्यारे ॥सूरीश्वर० १०॥ सवत उगणी से त्रयासी वर्षेरे, कार्तिक वदी दसमी दिवसेरे, गुरु गुणगाया अति हर्षेरे ॥ सुरीश्वर० ॥११॥ जैसलमेर पुराणो शहररे, त्या किल्लो अपूर्व जेहरे, जिण बिम्ब तणो महोद्ध गेहरे ॥सूरीश्वर०॥१२॥ जहा जिनकृपाचन्द्र सूरीजो बिराजेरे, गुरुना दर-सणथी पाप पुलायरे गुरुनी वाणीथी दु खडा जायरे ॥ सूरीश्वर० १३॥ सूरत शहेरथी दरसणे आव्यारे, कल्याणचन्द शुभ गुरुमन भायारे, प्रेमचन्द भाई दरसण पायारे ॥सूरीश्वर० १४ ॥



शुद्धाशुद्धि-पत्र ।



पृष्ठांक	पंक्ति	अशुद्धि	शुद्धि
५ ।	६ ।	इवासै	इछास
„ ।	१२ ।	उचो	उंचो
७ ।	७ ।	चरित्र	चारित्र
१६ ।	१३ ।	अग	अंग
२३ ।	४ ।	पह	पहु
२४ ।	६ ।	नवसाह	नवसाहु
२८ ।	१० ।	सवन्नूणं	सव्वन्नूणं
३० ।	६ ।	सवसाधुभ्य	सर्वसाधुभ्य
३३ ।	५ ।	मणओ	मणुओ
३६ ।	१० ।	काउसग्ग	काउसग्गं
३७ ।	६ ।	श्राक	श्रावक

३७ ।	१४ ।	दसण	दसण्ण
४२ ।	१ ।	यया	थया
५३ ।	१० ।	छ	छै
७४ ।	७ ।	उपधन	उपधान
७५ ।	७ ।	शुद्व	शुद्ध
६० ।	८ ।	इनथकीर	इनथकीरे
६५ ।	१ ।	महानसीहे	महानिशीथ
११४ ।	६ ।	श्रुतकेवल	श्रुतकेवली
१२३ ।	११ ।	सदर	सु दर
१२५ ।	८ ।	वर्यो	वस्रो
१२६ ।	८ ।	सवघनी	सवधर्थी
१३३ ।	२ ।	मरक	नरक
१३४ ।	३ ।	दगंधा	दुरगधा
१४६ ।	२ ४ ।	सुदितीनूउपानोरे	अरद्दा-दशीरे

१५३ ।	४ ।	हिवचैत्र मासमें चेत्रो पुनि-	मचसुपूज्यज्ञानलेवो
१६१ ।	१ ।	वणवुं	वर्णवुं
१६२ ।	१ ।	सूगतणा	स्वर्गतणा
१८६ ।	५ ।	पवघणा	पर्वघणा
१८२ ।	११ ।	पत्ररत्न	पूत्ररत्न
२४२ ।	११ ।	कम	करम
२४३ ।	३ ।	समवसरणां	समवसरणमां
२४७ ।	२ ।	विविध	विविध
२५९ ।		२६६	२५२
२६१ ।	३ ।	दर०णाकरस्य	दरशणकरस्या
२६३ ।	४ ।	कषायता	अकषायता
,, ।	८ ।	सहुं	सहु
२६६ ।	२५८ ।	२६२	२६८ । ३६६
२७५ ।	१०	सव	सर्व
२८० ।	११ ।	पंचमध्ययने	पंचमअध्ययने

२८४ ।	३ ।	सहु	सहु
२६४ ।	५ ।	निरथार	निरधार
,, ।	१० ।	मिथ्यानीति	मिथ्यामति
१६६ ।	२ ।	पुक्षर	पुरकर
,, ।	५ ।	कु डल	रुचककु डल
३०५ ।	७ ।	विसरामारे	त्रिसरामारे
३१० ।	८ ।	सुनिरकर	सुनिजरकर
३११ ।	८ ।	वर	धर
३२१ ।	३ ।	दीगे	दीपे
,, ।	११ ।	चामुख	चोमुख
३२३ ।	६ ।	ग्रहारे	घह्यो
३३१ ।	८ ।	परमेश्वरछ	परमेश्वर
,, ।	६ ।	सरस	सहस
,, ।	१४ ।	वरसावयीर	वरसावयिरे
३३३ ।	१० ।	कचन	फचन
३३८ ।	६ ।	सायवा	सायवाम्हारा

३४३	१२	जगदाधार	जगदाधारा
३५३	२	भेटे	मेटे
,,	७	भहरसै	महरसै
,,	१३	गाथोर	गायोरे
३६०	८	पंताका	पताका
३६१	११	आधका	अधिका
३६५	१	गाममें	गढमें
,,	२	आंयविराजो	आपविराजो
,,	१४	त्रणो	त्रण
३६६	६	नियमिक	निर्यामक
३६८	८	आज मनोथ	आज मनोरथ
३६६	१३	वड़ोदा	वड़ोद
३७०	४	परतिखर	परनिख
३७६	२	चत्तारि अट्ठश	चत्तारिअट्ठदश
३८२	२	सेवी	सेवो
,,	६	सूरिन	सूरि

३८२ ।	५ ।	नयगमन	नयगममन
„ ।	१४ ।	सातवरसो	सातवरस
३८१ ।	१ ।	पुनमती	पूनिमनी
„ ।	१३ ।	पूजा विधि	पूजा विविध
३८२ ।	१ ।	त्रेत्री	चेत्री
„ ।	३ ।	आराधिजे	आराधी
३८३ ।	१३ ।	नाटति	गाटति
३८६ ।	१ ।	अरिहु	अरि
३८७ ।	११ ।	सहसहस	सहस
४०४ ।	१३ ।	दुर्योधन	दुर्योधन
४०५ ।	११ ।	चतुर्भेदछे	चउभेदछे
४०८ ।	७ ।	नयन	नय
४१? ।	४ ।	सजम	सजमनो
४?४ ।	८ ।	सुघर	सुरघर

४१८	११	रहशार	रहवर
४१९	१०	जावजयणा	जीवजयणा
४२५	११	गणगारे	सणगारे
४२६	१	अघटितघटि	अघटितघटित
४३०	११	सास	शासन
४३१	४	सुख काट	सुखकार
" "	८	०	गिरनारपूजा
४३२	४	जातीतणी	जातितणा
४३५	८	इकमान	इकमना
४३७	५	दायह	दाह
४३८	१२	भवरंगे	भवभंगे
४४०	११	निमापण	निमायण
४४१	४	गिरखिर	गिरिवर
४४२	१०	पम	पद्म